राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 208

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 5 जनवरी 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 16

क्रिकेट के सभी प्रारूपों से इरफान पठान ने लिया संन्यास

>> 14

उम्मीदें 2020

पर्यावरण का करेंगे वरण

कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्यों को पाने की होड़ से जहां दुनिया जूझ रही है, वहीं भारत अपने लक्ष्यों को समय से पूर्व ही प्राप्त कर लेगा। भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काफी काम हुआ है और अगले साल में भी यह काम और तेजी से आगे बढ़ेगा। पेज-10

कारगर समाधान

नए साल की पूर्व संध्या पर पर्यावरण के क्षेत्र में वनों के रकबे में वृद्धि से जुड़ी खुशखबरी आई। 2020 में सरकार और समाज के स्तर पर उठने वाले कदम पर्यावरण को और मजबूती देंगे। पेज-7

बगदाद में अमेरिकी ठिकानों पर रॉकेट और मोर्टार से हमले

- दूतावास और एयरबेस को निशाना बनाते रॉकेट-मोर्टार दागे गए, पांच के घायल होने की खबर
- हमलों को माना जा रहा ईरान का पटलवार, लेकिन अभी किसी ने नहीं ली जिम्मेदारी

बगदाद, एजेंसियां : खाड़ी में तनाव और बढ़ता दिख रहा है। शनिवार रात इराक की राजधानी बगदाद के बेहद सुरक्षित इलाके ग्रीन जोन और अल-बलाद एयरबेस पर रॉकेट-मोर्टार से हमले हुए। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि हमला किसने किया है। माना जा रहा है कि शुक्रवार को बगदाद में अपने टॉप कमांडर मेजर जनरल कासिम सुलेमानी की अमेरिकी ड्रोन हमले में मौत के बाद ईरान ने पलटवार करते हुए इन हमलों को अंजाम दिया है। हमलों में पांच लोगों के घायल होने की खबर है।

सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े सूत्रों का कहना है कि ग्रीन जोन में दो मोर्टार और एयरबेस पर दो रॉकेट दागे गए। ग्रीन जोन बगदाद का बेहद सुरक्षित इलाका है, जहां अमेरिकी दूतावास स्थित है। इराकी सेना का कहना है कि एक मोर्टार ग्रीन जोन एंक्लेव के परिसर में और दूसरा इसके नजदीक फटा। विस्फोट के तुरंत बाद वहां चारों ओर सायरन की आवाजें गूंजने लगी थीं। इराकी सेना ने बताया कि मोर्टार हमले के बाद बगदाद के उत्तर में स्थित अल-बलाद एयरबेस पर रॉकेट दागे गए। इस एयरबेस पर अमेरिकी सैनिकों का ठिकाना है। सूत्रों का कहना है कि हमले के तुरंत बाद एयरबेस के चारों ओर निगरानी ड्रोन उड़ान भरने लगे थे।

इराक में अमेरिकी दूतावास और करीब 5,200 अमेरिकी सैनिकों को हाल के दिनों में कई बार हमलों का सामना करना पड़ा है। अमेरिका इन हमलों के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराता है। पिछले हफ्ते उत्तरी इराक में हुए ऐसे ही एक हमले में अमेरिकी कॉन्ट्रेक्टर की मौत हो गई थी। इसके बाद अमेरिका की कार्रवाई में ईरान के करीबी माने जाने वाले 25 लड़ाके मारे गए थे। ईरान और अमेरिका के बीच तनाव उस वक्त बहुत बढ़ गया, जब शुक्रवार को अमेरिका ने बगदाद में ईरान के टॉप कमांडर कासिम सुलेमानी को ड्रोन हमले में मार गिराया। सुलेमानी को वहां हवाईअड्डे से बाहर निकलते समय निशाना बना गया था।

ट्रंप का दावा- सुलेमानी ने रची थी दिल्ली में हमले की साजिश

- कहा, ईरानी जनरल ने पागलपन में अनगिनत लोगों की हत्या कराई, सुलेमानी की मौत से खत्म हुआ आतंक का राज

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

लॉस एंजिलिस, एजेंसियां : ईरान के शीर्ष कमांडर को मार गिराने के फैसले को सही ठहराने की कोशिश में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि कासिम सुलेमानी ने दिल्ली और लंदन में आतंकी हमले की साजिश रची थी। ट्रंप ने कहा कि सुलेमानी के मारे जाने से आतंक का राज खत्म हुआ। सुलेमानी ने अपने पागलपन में असंख्य निर्दोष लोगों की हत्या कराई थी। जनरल कासिम सुलेमानी ईरान के विशेष इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कोर के कुद्स फोर्स के प्रमुख थे और क्षेत्र में अपने देश का प्रभुत्व कायम करने में अहम भूमिका निभाई थी। शुक्रवार को अमेरिका ने इराक में इंटरनेशनल एयरपोर्ट से बाहर निकलते समय सुलेमानी को ड्रोन हमले में मार गिराया था।

फ्लोरिडा में छुट्टियां मना रहे ट्रंप ने शुक्रवार को कहा कि इराक में हाल में रॉकेट हमले में अमेरिकी कांट्रैक्टर की मौत और चार सैनिकों के घायल होने और बागदाद में अमेरिकी दूतावास पर हिंसक भीड़ के हमले के लिए सुलेमानी जिम्मेदार थे।

ट्रंप ने कहा, 'आज हम सुलेमानी के अत्याचारों के शिकार हुए लोगों को याद करते हैं और सम्मानित करते हैं। उन्होंने नई दिल्ली और लंदन में हमले की साजिश रची थी। हमें यह जानकर सुकून मिलता है कि उनका आतंकराज अब खत्म हो गया है।' हालांकि, ट्रंप ने यह नहीं बताया कि वह भारत में किस आतंकी साजिश का जिक्र कर रहे हैं। लेकिन माना जा रहा है कि वह 2012 में भारत में इजरायली राजनयिक की पत्नी की कार पर हुए बम हमले का उल्लेख कर रहे थे। 13 फरवरी, 2012 को कार में चुंबक के सहारे बम लगाकर किए गए हमले में ताल येहोशुआ कोरेन घायल हो गई थीं। ट्रंप ने कहा, 'हमने युद्ध रोकने के लिए कार्रवाई की है, युद्ध भड़काने के लिए नहीं। ईरान के लोगों के प्रति मेरे मन में सम्मान हैं। वे अविश्वसनीय विरासत और असीमित क्षमता वाले उल्लेखनीय लोग हैं। हम सत्ता परिवर्तन नहीं चाहते हैं।'

इस बीच, इराक में शनिवार को फिर ईरान समर्थक मिलिशिया हश्द अल-शाबी के काफिले पर हमला किया गया। इसमें छह लोगों के मारे जाने की खबर है।

अमेरिकी जहां मिलेंगे वहीं मारेंगे : ईरान पेज>>13

रविवार विशेष

गुरविंद्र घुम्मन का सपना, कलरफुल हो देश अपना

सिरसा : हरियाणा का यह व्यवसायी अपने सुंदर सरोकार के चलते खास बन गया है। गुरविंद्र सिंह घुम्मन का सपना है कि देश की माटी रंग-बिरंगे फूलों-पौधों से संवर जाए। इसके लिए वह 700 से अधिक गांवों जा चुके हैं। (पेज-15)

ननकाना साहिब की घटना पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की त्रासदी का प्रमाण

हरदीप पुरी बोले ▶ सीएए के विरोधी सबक लें और अपने रुख पर आत्मनिरीक्षण करें

गुरुद्वारे पर हमले के बाद गुस्से का माहौल, पाकिस्तान सरकार से कार्रवाई की मांग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

शहरी विकास मंत्री हरदीप पुरी ने सीएए विरोधियों को आईना दिखाया है। (फाइल फोटो) प्रेट्र

पाकिस्तान स्थित सिखों के पवित्र धर्मस्थल ननकाना साहिब गुरुद्वारे पर शुक्रवार को हुए हमले के खिलाफ देशभर में जबरदस्त आक्रोश दिखा। भाजपा, कांग्रेस समेत ज्यादातर दलों ने इसकी भर्त्सना की और पाक सरकार को कार्रवाई के लिए कहा। पाक के प्रधानमंत्री से सिखों को पर्याप्त सुरक्षा दिए जाने की मांग भी की गई। नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी दूतावास के बाहर जोरदार विरोध प्रदर्शन भी हुआ। इस बीच केंद्र सरकार ने कहा कि यह घटना पाक में अल्पसंख्यकों की त्रासदी का प्रमाण है। सरकार ने देश में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोधियों को इस घटना से सबक लेने और आत्म निरीक्षण की सलाह दी है।

पाकिस्तान में शुक्रवार को उपद्रवियों की भीड़ ने ननकाना साहिब को निशाना बनाया था। इस उपद्रव के कारण कई श्रद्धालु काफी देर तक गुरुद्वारे के अंदर फंसे रह गए थे। इस घटना पर शनिवार को देशभर में रोष देखा गया। पाकिस्तान में हुई इस घटना पर भाजपा ने कांग्रेस और अन्य सीएए विरोधियों को भी निशाने पर लिया है। केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने ट्वीट किया, 'ननकाना साहिब की घटना पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ होने वाले उत्पीड़न का एक जीता-जागता सुबूत है। उपद्रवियों ने ननकाना साहिब का नाम बदलकर गुलाम-ए-मुस्तफा करने की भी धमकी दी। क्या सीएए विरोधियों को अब भी कोई प्रमाण चाहिए?' केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने भी कहा कि यह घटना इस बात का प्रमाण है कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को बुरे व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इसीलिए भारत सीएए के समर्थन में है। आखिर कांग्रेस यह बात कब समझेगी।

ननकाना साहिब घटना की निंदा करने वालों में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, बसपा प्रमुख मायावती और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत कई नेता शामिल रहे। सोनिया ने केंद्र सरकार से यह मुद्दा पाकिस्तान के समक्ष उठाने को कहा। वहीं, राहुल ने इस घटना के जरिये कट्टरता पर सवाल उठाया और कहा, 'कट्टरता खतरनाक और जहर के समान है। इसकी कोई सीमा नहीं होती है। इसकी निंदा की जानी चाहिए।' केजरीवाल ने कहा, 'ननकाना साहिब करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। वहां रहने वाले सिख भाइयों का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं हो सकता। पाकिस्तान सख्त कदम उठाए और दोषियों को सजा दे।' अकाली दल नेता सुखबीर बादल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपील की कि पाकिस्तान के समक्ष सिखों की सुरक्षा का मसला उठाएं।

भाजपा हुई हमलावर : भाजपा ने इस घटना को सीधे-सीधे सीएए से जोड़ा है। सांसद मीनाक्षी लेखी ने कहा कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ ऐसी घटनाएं आम हो गई हैं लेकिन भारत में लोगों की आंखें नहीं खुल रही हैं। सीएए विरोधियों को अपने रुख पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। लेखी ने कहा, 'कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू कहां हैं? वह चुप क्यों हैं? अगर इसके बाद भी वह आइएसआइ चीफ को गले लगाना चाहते हैं, तो कांग्रेस को इस पर गौर करना चाहिए।' भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी को घेरते हुए एक वीडियो ट्वीट कर कहा, 'आप के लिए यह सबूत काफी है या और चाहिए?' उन्होंने इस दौरान ननकाना साहिब में सिखों को दी गई धमकी का जिक्र करते हुए कहा, 'कृपया कोई इसे राहुल गांधी और सोनिया गांधी को इटेलियन में अनुवाद कर बता दे। शायद इसके बाद वे पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अत्याचारों के प्रमाण मांगना बंद कर दें।'

पाक के अल्पसंख्यक (संपादकीय)... पेज>>8

ननकाना साहिब में पाक ने नहीं दी नगर कीर्तन निकालने की अनुमति

इस्लामाबाद : पाकिस्तान का दोहरा चरित्र एक बार फिर सामने आ गया जब उसने गुरुद्वारा ननकाना साहिब पर शुक्रवार को भीड़ के हमले के बाद शनिवार को गुरुद्वारे से सिख समुदाय को नगर कीर्तन निकालने की अनुमति नहीं दी। पाकिस्तान ने शहर में तनाव को इसका कारण बताया है। शनिवार को मुस्लिम नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने गुरुद्वारा ननकाना साहिब का दौरा भी किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने सिख समुदाय के लोगों से बातचीत की और गुरुद्वारे पर भीड़ के हमले की निंदा की। उनके साथ खालिस्तान समर्थक नेता गोपाल चावला भी था। प्रतिनिधिमंडल में उसकी उपस्थिति से इस पूरे प्रकरण में पाकिस्तान के नापाक इरादे काफी हद तक साफ हो जाते हैं। (पेज-5)

नोटबंदी के दौरान चांदी कूटने वाले ज्वैलरों को आयकर नोटिस

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- वे ज्वैलर निशाने पर, जिन्होंने नोटबंदी के दौरान बहुत ज्यादा नकदी जमा कराई
- कुछ मामलों में तो टैक्स डिमांड इतनी कि भुगतान करना भी बड़ी चुनौती
- मुंबई के 500 से ज्यादा ज्वैलर जद में, दिल्ली में भी ऐसे कारोबारियों की बड़ी तादाद

नोटबंदी के तुरंत बाद बैंकों में बहुत ज्यादा नकदी जमा करने वाले ज्वैलरों को आयकर विभाग ने नोटिस भेजा है। देशभर के ज्वैलरों में आयकर विभाग की तरफ से मिले डिमांड नोटिस को लेकर खलबली मच गई है। नोटबंदी के दौरान ज्वैलरों की तरफ से बैंकों में जमा नकदी के आकलन के बाद आयकर विभाग ने उन सराफा कारोबारियों को टैक्स डिमांड के नोटिस भेजे हैं, जिनकी नोटबंदी से कुछ समय पहले, उसके दौरान और बाद के दिनों की बिक्री में तारतम्यता नहीं दिखी है। सराफा उद्योग इस मामले को लेकर अब केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की तैयारी कर रहा है।

आयकर विभाग का आरोप है कि नवंबर, 2016 में नोटबंदी के बाद ज्वैलरों ने बैंकों में भारी मात्रा में नकदी जमा की। विभाग ने बीते दो वर्षों में ज्वैलरों के खातों का आकलन किया है। इसके आधार पर विभाग को लगा है कि नोटबंदी के तुरंत बाद कई ज्वैलरों ने सीमा से अधिक नकदी जमा कराई। इसी का आकलन कर इन ज्वैलरों पर टैक्स नोटिस निकाला गया है। आयकर विभाग की तरफ से भेजे गए नोटिस से ज्वैलरी उद्योग में हड़कंप है। उद्योग से जुड़े लोगों का मानना है कि कुछ मामलों में तो डिमांड नोटिस में टैक्स की राशि इतनी अधिक है कि उनके लिए इसका भुगतान करना भी असंभव है।

एक अनुमान के मुताबिक देशभर में करीब तीन लाख ज्वैलर हैं। उद्योग सूत्रों के मुताबिक इनमें बड़ी संख्या में लोगों को नोटिस मिला है। अकेले उत्तर प्रदेश में करीब ढाई हजार कारोबारियों को नोटिस मिलने की सूचना है। दिल्ली बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष एसके गोयल चांदीवाला ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि दिल्ली में यह संख्या काफी अधिक है। गोयल ने बताया, 'एसोसिएशन ने वित्त मंत्री से मुलाकात का समय मांगा है। उनसे इस मामले में राहत दिलाने की मांग करेंगे।' मुंबई में करीब 500 ज्वैलरों को नोटिस मिलने की सूचना है।

केवल नोटबंदी की अवधि तक ही सीमित नहीं है नोटिस पेज>>6

कसा शिकंजा

सराफा कारोबारियों का तर्क

दो लाख रुपये तक की बिक्री नकद में करने की छूट है। ज्वैलर लगभग एक किलोग्राम सोने की बिक्री आभूषणों के रूप में अलग-अलग वजन में कर लेता है। इस वजह से नकद कारोबार की मात्रा अलग-अलग हो सकती है।

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

उद्धव ठाकरे सरकार के लिए संकट बने अब्दुल सत्तार

मुंबई : महाराष्ट्र में एक महीने पुरानी ठाकरे सरकार मुसीबतों में फंसती नजर आ रही है। पहले तो मंत्रिमंडल विस्तार में एक महीने का समय लग गया और उसके बाद पांच दिन बाद तक भी विभागों का बंटवारा नहीं हो पाया है। रही सही कसर मंत्री अब्दुल सत्तार के इस्तीफे की खबर ने पूरी कर दी।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 6

हालात बदले तो उमर व महबूबा का जायका भी बदल गया

जम्मू : जम्मू-कश्मीर में प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था क्या बदली, प्रदेश के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों ने अपना जायका भी बदल लिया है। दोनों अब शाकाहारी हो गए हैं। अपने खाने की आदत बदलने वाले इन पूर्व मुख्यमंत्रियों में उमर अब्दुल्ला और पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती शामिल हैं।

बिजनेस ▶ पृष्ठ 12

बजट पर उद्योग जगत से सीधे बात कर रहे पीएम

नई दिल्ली : देश की अर्थव्यवस्था के समक्ष उपजी चुनौतियों से निपटने के लिए अब सभी की नजर आगामी बजट पर है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आम बजट को लेकर उद्योग जगत से सीधे बातचीत शुरू कर दी है।

दे दनादन

भारत vs श्रीलंका

शाम 7:00 बजे

स्थान: गुवाहाटी

प्रसारण: स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क

बड़ी वारदात के लिए निशानदेही करने आया लश्कर का आतंकी गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में बड़े आतंकी हमले के लिए निशानदेही करने घुसे लश्कर-ए-तैयबा के आतंकी निसार अहमद डार को सुरक्षाबलों ने शनिवार तड़के गिरफ्तार कर लिया। इस साल श्रीनगर में किसी आतंकी के पकड़े जाने का यह पहला मामला है।

फिलहाल, सुरक्षाबलों ने श्रीनगर में सक्रिय निसार के अन्य साथियों की धरपकड़ के लिए तलाशी अभियान चला रखा है। उत्तरी कश्मीर के बहावोपोरा का रहने वाला निसार 2018 से लश्कर में सक्रिय है। उस पर सुरक्षा एजेंसियों ने पांच लाख रुपये का इनाम घोषित कर रखा है। उसे सेना की 13 आरआर और राज्य पुलिस विशेष अभियान दल (एसओजी) के संयुक्त कार्य दल ने बोन एंड ज्वाइंट अस्पताल बरजुला के पास शुक्रवार देर रात सवा दो बजे पकड़ा है। निसार बीते साल 12 नवंबर को कुल्लन गुंड में अपने एक साथी संग सुरक्षाबलों की घेराबंदी में भी फंस गया था। लेकिन मुठभेड़ के दौरान वह बच निकला था।

निसार चार दिन पहले बच निकला था पेज>>6

बच्चों की मौतों पर सचिन पायलट ने अपनी ही सरकार को घेरा

जागरण संवाददाता, जयपुर

- राजस्थान के उपमुख्यमंत्री बोले, आंकड़ों में फंसाकर जिम्मेदारी से नहीं बच सकते

सचिन पायलट। फाइल

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के निर्देश पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट शनिवार को कोटा स्थित जेके लोन अस्पताल पहुंचे। उन्होंने अस्पताल का जायजा लेने के बाद अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा किया। मृतक बच्चों के परिजनों से मुलाकात के बाद कहा कि सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। अप्रत्यक्ष रूप से अपनी ही सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि बच्चों की मौत पर जवाबदेही तय होनी चाहिए। हम इससे बच नहीं सकते। हमें और अधिक संवेदनशील होना पड़ेगा। आंकड़ों के जाल से मृतक बच्चों के माता-पिता का कोई लेना-देना नहीं है। उनकी तो संतान इस दुनिया में नहीं रही। लोगों को विश्वास दिलाना पड़ेगा कि ऐसी घटना अब स्वीकार नहीं की जाएगी। आज भी मौत का क्रम जारी है।

उन्होंने कहा कि पिछली वसुंधरा राजे सरकार में अस्पताल में बेड और सुविधाएं कम थीं तो उन्हें जनता ने हरा दिया। अब हम एक साल से सरकार में हैं, जवाबदेही तय होनी चाहिए। दरअसल, दो दिन पहले सीएम अशोक गहलोत और शुक्रवार को चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने मीडिया से बातचीत में पिछली सरकार में बच्चों की मौत के आंकड़े खुद की सरकार से अधिक बताए थे। उन्होंने कहा था कि कांग्रेस के एक साल के कार्यकाल में बच्चों की मौतों की संख्या में कमी आई है। पायलट का बयान सीएम और चिकित्सा मंत्री पर कटाक्ष माना जा रहा है। गौरतलब है कि जेकेलोन अस्पताल में अब तक 107 बच्चों की मौत हो चुकी है। (पेज-6 भी देखें)

पीड़ित परिवारों से मिले

शनिवार सुबह कोटा पहुंचे सचिन पायलट ने मृतक बच्चों के परिजनों से मुलाकात की। उन्होंने छतरपुर इलाके में संजय रावल के घर पहुंचकर उनके बेटे की मौत पर दुख जताया। इसके बाद वह विज्ञान नगर पहुंचे। यहां एक पीड़ित परिवार से मुलाकात की और फिर अनंतपुरा के सुभाष विहार में मृतक 15 दिन की बच्ची के परिजनों से मिले। पायलट ने अस्पताल का भी दौरा किया। इस दौरान अस्पताल अधीक्षक सहित अन्य चिकित्सकों के प्रति नाराजगी जताई।

अदम्य साहस

दिल्ली में बेची गई थी झारखंड की युवती, 45 दिनों तक झेला शोषण का दंश, एक रात किसी तरह खुद को छुड़ाकर भागी तो न पैसे थे न कोई और सहारा, संताली के अलावा नहीं जानती थी कोई भाषा

मानव तस्करों से बचने को दो महीने तक पैदल चली

विनोद श्रीवास्तव, रांची

झारखंड में मानवीय संवेदनाओं को झकझोर कर रख देने वाली एक और घटना सामने आई है। दलालों ने एक 16 वर्षीय आदिवासी युवती को दिल्ली में बेच दिया था। युवती जब खरीदार के सुपुर्द की गई तो उसे वहां बंधक बनाकर रखा गया। घरेलू काम करवाने के साथ-साथ खरीदार उसका यौन उत्पीड़न भी करता था। उसे बुरी तरह पीटता भी था। करीब 45 दिनों तक यह दंश झेलती रही। एक रात वह साहस जुटा कर उसके चंगुल से भाग निकली। उस वक्त उसके पास पैसे न थे और न ही किसी का मोबाइल नंबर। न साधन, न जानकारी। वह न तो हिंदी बोल पाती है, न पढ़-लिख-समझ पाती है। केवल संताली ही बोल पाती है। घर पहुंचने के लिए वह दो महीने तक पैदल चलती रही। उस बीच बाधाओं की लंबी श्रृंखला पार करने में उसने अदम्य साहस का परिचय दिया। इस बीच किसी अनहोनी से बचने के लिए उसने कई रातें पेड़ों पर गुजारीं। आखिरकार उसका संघर्ष काम आया और दो महीने बाद वह अपने घर पहुंच गई। यह आपबीती है झारखंड के पिछड़े जिलों में शुमार साहिबगंज के एक गांव की युवती की। उसके पिता का निधन हो चुका है और मां मजदूरी करती है। बाल अधिकार संरक्षण संस्थान, झारखंड के निदेशक डीके सक्सेना ने बताया कि पीड़िता के मामले को बाल कल्याण समिति देख रही है।

शाम होते ही करती थी पेड़ की तलाश : अपने घर जाने के क्रम में आदिवासी युवती दो महीने तक अनजान राहों पर पैदल चली। इस बीच भूख लगती तो किसी लाइन होटल में बर्तन साफ कर कभी खाना मिल जाता तो कभी जूठन के सहारे दिन गुजरता। शाम होते ही वह किसी पेड़ की तलाश में जुट जाती। किसी अनहोनी के डर से उसकी रात पेड़ पर ही गुजरती। फिर अगले दिन अल सुबह वह फिर अनजान सफर पर चल देती। वह इसी तरह चलते-चलते 4 दिसंबर को सीधी (मध्य प्रदेश) पहुंच गई। सीधी पुलिस को एक रात वह सड़क किनारे बेहोश मिली। इसके बाद पुलिस उसे बालिका गृह ले गई। वहां उसकी भाषा समझने में लोगों को परेशानी हो रही थी, लेकिन यह पता चल गया कि वह झारखंड के किसी इलाके की है। बालिका गृह की संचालिका से धनबाद के समाजसेवी अंकित कुमार राजगढ़िया व विवेक वर्णवाल की जान-पहचान है। अंकित ने अपने एक संताली दोस्त की पत्नी से पीड़िता की फोन पर बात कराई। इसके बाद मानव तस्करी का क्रूर चेहरा सामने आया।

दो और लड़कियों का नहीं है अता-पता : पीड़ित युवती के गांव पहुंचने पर दो और लड़कियों के गायब होने की जानकारी मिली। इनमें से एक को पीड़िता के साथ ही ले जाया गया था, जो पुरानी दिल्ली में उसके साथ ही थी। इससे इतर तीन साल पहले ले जाई गई इसी गांव की एक युवती का भी कोई अता-पता नहीं है। अंकित जब पीड़िता के गांव पहुंचे तो वहां उसकी मां ने उस व्यक्ति का नंबर उपलब्ध कराया, जिसके साथ युवती दिल्ली गई थी। फोन पर दलाल ने खुद को उसका भाई बताया, लेकिन जब उससे साक्ष्य की की मांग की गई तो वह मुकर गया। फिलहाल उक्त दलाल फरार है।

भारतीय चावल के शौकीन अफ्रीकी बाजारों में चीन की सेंध

नई दिल्ली : भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक देश है। लेकिन चीन अब ग्लोबल मार्केट में इसकी बादशाहत को चुनौती देने की फिराक में है। इन दिनों अफ्रीका के बाजारों में चीन लाखों टन चावल पहुंचा रहा है। इससे भारतीय नीति निर्धारक संस्थाएं और चावल कारोबारियों के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आई हैं। पिछले कुछ वर्षों से अफ्रीका के चावल बाजार पर भारत का दबदबा है। (पेज-12)

चीन ने हांगकांग के मुख्य संपर्क अधिकारी को बदला

बीजिंग : छह महीने से हांगकांग में चल रहे लोकतंत्र की मांग वाले आंदोलन के बीच चीन ने वहां के लिए नियुक्त अपने चीफ लाइजन ऑफिसर (मुख्य संपर्क अधिकारी) को बदल दिया है। वांग झीमिन की जगह ल्यू ह्यूनिइंग को नियुक्त किया गया है। ल्यू बीजिंग स्थित लाइजन ऑफिस के डायरेक्टर होंगे। उन पर हांगकांग सरकार और बीजिंग सरकार के बीच समन्वय की जिम्मेदारी होगी। (पेज-13)

कैट के नतीजे घोषित, 10 अभ्यर्थियों ने हासिल किए 100 पर्सेंटाइल

नई दिल्ली, प्रेट्र : कॉमन एडमिशन टेस्ट (कैट) के नतीजे शनिवार को घोषित कर दिए गए। 10 परीक्षार्थियों ने पूरे 100 पर्सेंटाइल हासिल किए हैं। ये सभी छात्र हैं और प्रौद्योगिकी व इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि के हैं। अधिकारियों ने बताया कि पूरे 100 पर्सेंटाइल हासिल करने वाले छात्रों में छह आइआइटी और दो एनआइटी के हैं। इनमें से चार महाराष्ट्र के छात्र हैं, जबकि बाकी के झारखंड, तमिलनाडु, तेलंगाना, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और उत्तराखंड के हैं।

अधिकारियों के मुताबिक इस साल 21 अभ्यर्थियों का स्कोर 99.9 पर्सेंटाइल रहा है, इनमें से 19 प्रौद्योगिकी पृष्ठभूमि के हैं। देश के प्रीमियर भारतीय प्रबंधन संस्थानों (आइआइएम) और 100 से ज्यादा अन्य संस्थानों में प्रबंधन कोर्स में प्रवेश के लिए यह परीक्षा ली जाती है। अधिकारियों ने बताया कि पिछले 10 साल के दौरान इस साल परीक्षार्थियों की संख्या सबसे ज्यादा थी। इनमें 1.34 लाख पुरुष, 75 हजार महिला और पांच ट्रांसजेंडर परीक्षार्थी शामिल थे। कैट परीक्षा 24 नवंबर, 2019 को दो सत्रों में आयोजित की गई थी। परीक्षा में सफल उम्मीदवारों का ग्रुप डिस्कशन और पर्सनल इंटरव्यू भी होगा।

क्या होता है पर्सेंटाइल : पर्सेंटाइल का मतलब होता है कि आपको कितने छात्रों से ज्यादा नंबर मिला। जैसे अगर आपका पर्सेंटाइल 80 फीसदी है तो इसका मतलब हुआ कि आपने 80 फीसदी उम्मीदवारों से ज्यादा अंक हासिल किए हैं।

टॉन 10 छात्रों में मुंबई आइआइटी के सोमांश भी : आइआइटी मुंबई में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के आखिरी वर्ष के छात्र सोमांश चोरडिया ने 100 पर्सेंटाइल हासिल करने वाले टॉप 10 छात्रों में शामिल हैं। मूलरूप से नागपुर के रहने वाले सोमांश मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए आइआइएम-अहमदाबाद में दाखिला लेने की ख्वाहिश रखते हैं।

334 दर्ज हुआ दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स शनिवार को। यह शुक्रवार की तुलना में कम रहा। दिनभर धूप रहने और 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने की वजह से प्रदूषण में कमी आई है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 जनवरी 2020

जनसंपर्क ▸ पांच साल के रिपोर्ट कार्ड पर चर्चा में हिस्सा लेने जनकपुरी के दिल्ली हाट पहुंचे मुख्यमंत्री

'पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिलने का है मलाल'

विकास के लिए बजट को 30 हजार करोड़ से बढ़ाकर 60 हजार करोड़ कर दिया

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

पांच साल के रिपोर्ट कार्ड पर चर्चा में हिस्सा लेने जनकपुरी के दिल्ली हाट पहुंचे मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के विकास के लिए बजट को 30 हजार करोड़ से बढ़ाकर 60 हजार करोड़ कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इस वजह से दिल्ली के सरकारी स्कूलों के 96 फीसद परिणाम आए हैं। तीन सौ मोहल्ला क्लीनिक खुल चुके हैं। 1797 कॉलोनियों में से 1281 में नाली, सीवर और सड़क का निर्माण हो चुका है। 93 फीसद घरों में पाइप लाइन से पानी दिया जा रहा है। दिल्ली को देश का ऐसा पहला शहर बनाया, जहां पर 24 घंटे बिजली उपलब्ध रहती है। डोर स्टेप डिलेवरी शुरू करवाई। डीटीसी की चार हजार नई बसें उतारीं। उन्होंने कहा कि जो भी कुछ काम रह गए हैं, उन्हें चुनाव जीतने के पांच साल के दौरान करा देंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिलने का उन्हें मलाल है। उन्होंने कहा कि ऐसी देश की राजधानी होती है क्या, जहां एक तरफ दूसरी और दूसरी तरफ तीसरी एजेंसी काम कर रही है।

सरकारी स्कूलों में दाखिले के लिए लोग सिफारिश लगा रहे : केजरीवाल

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शनिवार को दीनदयाल मार्ग स्थित सर्वोदय बाल विद्यालय में आयोजित मेगा पीटीएम में पहुंचे। उन्होंने अभिभावकों, छात्रों और शिक्षकों से खुलकर बात की। इस दौरान कई अभिभावकों ने उन्हें बताया कि उन्होंने बच्चों को निजी स्कूल से निकालकर सरकारी स्कूल में दाखिल कराया है। बच्चों ने पिछले पांच साल में स्कूल में हुए तमाम बदलाव के लिए मुख्यमंत्री को धन्यवाद कहा। शिक्षकों ने भी मुख्यमंत्री को बताया कि उन्हें गर्व है कि वह सरकारी स्कूल के शिक्षक हैं। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले पांच साल में दिल्ली के सरकारी स्कूल निजी स्कूलों से बेहतर हो गए हैं। पहले निजी स्कूलों में दाखिले के लिए लोग सिफारिश लगाते थे, अब सरकारी स्कूलों में बच्चों का दाखिला कराने के लिए सिफारिश लगाते हैं। केजरीवाल ने कहा कि पिछले पांच साल में सरकारी स्कूलों में बहुत ज्यादा बदलाव आया है। इसमें शिक्षकों और प्रधानाचार्यों ने अहम भूमिका निभाई है। अब सरकारी स्कूल बहुत अच्छे हो गए हैं। अभिभावकों को गर्व होने लगा है कि उनके बच्चे सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी अभिभावकों को पीटीएम में आना चाहिए। अभिभावक शिक्षकों से पूछ सकते हैं कि बच्चा कैसा पढ़ रहा है। बच्चे काफी शरारती होते हैं। कई बार पता नहीं चलता है कि बच्चा गलत रास्ते पर जा रहा है। इसलिए समय-समय पर मिलते रहना चाहिए। इस दौरान केजरीवाल ने कई विद्यार्थियों से भी बात की।

सर्वोदय बाल विद्यालय में हुई मेगा पीटीएम में छात्रों और अभिभावकों से संवाद करते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। साथ में आप नेता आतिशी(बाएं)। ध्रुव कुमार

उन्होंने कहा कि दिल्ली में ऑड-इवेन व डेंगू के खिलाफ अभियान लोगों के सहयोग से सफल हुआ। दिल्ली के लोगों के सहयोग से ही अगले पांच साल में यमुना की सफाई कराना प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि प्रदूषण और जाम से दिल्ली को मुक्त कराने के लिए 40 किलोमीटर की सड़क को रीडिजाइन किया जा रहा है। यह योजना सफल रही तो सभी सड़कों को दोबारा से बनाया जाएगा। दिल्ली में जाम वाली सड़कों का सर्वे करने का काम एजेंसी ने शुरू कर दिया है। केजरीवाल ने कहा कि सरकार के पास वही पैसे हैं जो जनता ने टैक्स के तौर पर दिया है। उसी में से वह कभी बिजली मुफ्त कर देते हैं तो कभी पानी और कभी बसों में यात्रा। इसी पैसे से वह लोगों को मुफ्त में तीर्थ यात्रा भी करा रहे हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि ये सुविधाएं अगली बार सरकार में वापसी के साथ भी जारी रहेंगी। उन्होंने कहा कि अब तक 37 लाख लोगों की बिजली मुफ्त थी। आने वाले दो-तीन माह में 70 हजार और लोगों की बिजली मुफ्त हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार देश के लोगों को रोजगार तो दे नहीं सकती, उल्टे बाहर से और लोगों को बुलाने की बात कर रही है। यहां रह रहे लोगों पर नागरिकता सिद्ध करने का दबाव बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में आग लगने की बढ़ती घटनाओं को लेकर जांच के आदेश दे दिए गए हैं।

गंदे पानी की आपूर्ति को उन्होंने नकारात्मक राजनीति का हिस्सा बताते हुए कहा कि वे साफ छवि वाले लोग हैं, इसलिए साफ राजनीति करते हैं। यह पूछे जाने पर कि इस चुनाव में कांग्रेस सरकार भी 600 यूनिट बिजली मुफ्त देने की बात कर रही है पर केजरीवाल ने कहा कि जिन पांच राज्यों में कांग्रेस की सरकार हैं, पहले वहां मुफ्त देकर दिखाएं तो फिर दिल्ली की बात करें। जनकपुरी हाट के ओपन थियेटर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मटियाला, उत्तम नगर, द्वारका, जनकपुरी, तिलक नगर, हरिनगर और विकासपुरी विधानसभा क्षेत्र के लोगों के साथ इन क्षेत्रों के विधायक गुलाब सिंह यादव, नरेश बाल्यान, आदर्श शास्त्री, राजेश ऋषि, जरनैल सिंह, जगदीप सिंह और महेंद्र यादव के अलावा पार्षद रमेश मटियाला मौजूद रहे।

एप बताएगा बूथ पर कतार में हैं कितने मतदाता

रणविजय सिंह, नई दिल्ली

विधानसभा चुनाव में ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं को बूथ तक लाने के लिए चुनाव आयोग लगातार डिजिटल तकनीक की मदद ले रहा है। इसी कड़ी में इस बार एक ऐसा एप आया है, जिससे घर बैठे यह पता चल सकेगा कि आपके बूथ पर कतार में कितने मतदाता हैं ताकि मतदाता अपनी सुविधा के मुताबिक समय का चयन कर लंबी कतार से बच सकें। इसके अलावा कुछ अन्य एप भी हैं, जो मतदाता सूची में नाम जुड़वाने से लेकर चुनाव आयोग द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी देते हैं। मुख्य निवार्चन अधिकारी डॉ. रणबीर सिंह के मुताबिक सिर्फ चार एप का इस्तेमाल कर मतदाता चुनाव के दौरान होने वाली किसी भी असुविधा से खुद को बचा सकते हैं। इनमें वोटर हेल्पलाइन, पीडब्ल्यूडी (पर्सन विद डिसएबिलिटी), वोटर टर्न आउट व सी-विजिल एप प्रमुख हैं।

वोटर हेल्पलाइन एप : इस एप पर चुनाव प्रक्रिया से संबंधित सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। जिनका मतदाता सूची में नाम नहीं है, वे इसके माध्यम से अब भी अपना नाम दर्ज कराने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस एप पर उम्मीदवारों की सूची और शपथ पत्र भी उपलब्ध होगा। साथ ही मतगणना के दिन इस एप पर चुनाव परिणाम की जानकारी मिल सकेगी। डॉ. रणबीर सिंह ने कहा कि इस बार इस एप से यह सूचना भी मिलेगी कि किस बूथ पर कितनी लंबी लाइन लगी हुई है।

पीडब्लयूडी एप : इसके माध्यम से दिव्यांग मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के साथ-साथ व्हील चेयर व अन्य सुविधाओं की मांग कर सकते हैं।

वोटर टर्न आउट एप : इस बार मतदान फीसद की जानकारी के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा। वोटर टर्न आउट एप से हर समय मतदान फीसद की ताजा जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। वहीं यह भी पता चल सकेगा कि कितने पुरुष व कितनी महिलाओं ने मतदान किया।

सी-विजिल : चुनाव आचार संहिता लगने के बाद यदि कहीं मतदाताओं को किसी तरह का प्रलोभन, पैसा या शराब बांटने का काम हो रहा हो तो कोई भी व्यक्ति इस एप के माध्यम से वीडियो बनाकर चुनाव आयोग को भेज सकता है। इसके बाद चुनाव आयोग की टीम करीब सौ मिनट में कार्रवाई पूरी करेगी।

बूथ एप : चुनाव ड्यूटी से जुड़े अधिकारियों के लिए बूथ एप तैयार किया गया है। दरअसल, इस बार मतदान की पर्ची पर मतदाता के फोटो के अलावा क्यूआर कोड भी होगा। हर मतदान केंद्र पर हेल्प डेस्क की सुविधा होगी, जहां मौजूद अधिकारी बूथ एप के माध्यम से क्यूआर कोड स्कैन कर मतदाता की पहचान कर सकेंगे। इसकी सूचना पोलिंग अधिकारी को उपलब्ध हो जाएगी। बूथ के अंदर पोलिंग अधिकारी दोबारा क्यूआर कोड स्कैन करेंगे और पहचान पत्र देखेंगे। इससे बूथ के अंदर मतदाता सूची में नाम ढूंढ़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसलिए समय बचेगा और मतदान जल्दी हो सकेगा।

साथ ही बूथ में प्रवेश करने से पहले और बूथ के अंदर दो बार क्यूआर कोड स्कैन होने पर बूथ एप पर दर्ज होगा कि कितने लोगों ने मतदान किया और कितने लोग कतार में हैं। यह सूचना मतदाताओं को वोटर हेल्पलाइन एप पर उपलब्ध होती रहेगी।

न्यूज गैलरी

दिव्यांगों के अनुकूल बनेगी एम्स की लाइब्रेरी

नई दिल्ली : अस्पतालों को दिव्यांगों के अनुकूल बनाने के लिए आवाज उठाने वाले डॉ. सत्येंद्र सिंह के लंबे संघर्ष के बाद आखिरकार एम्स प्रशासन ने संस्थान की लाइब्रेरी में लिफ्ट लगाने का काम शुरू कर दिया है। इससे एम्स की लाइब्रेरी दिव्यांगों के अनुकूल बनेगी। मेडिकल व नर्सिंग के दिव्यांग छात्र आसानी से लाइब्रेरी में जा सकेंगे। डॉ. सत्येंद्र सिंह बतौर फैकल्टी यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंस (यूसीएमएस) में कार्यरत हैं। एम्स के डॉक्टर बताते हैं कि उन्होंने सामाजिक अधिकारिता मंत्रालय के मुख्य आयुक्त के कोर्ट में अपील दायर की थी। जिस पर पहले एम्स ने यह कहकर लिफ्ट लगाने से इन्कार कर दिया था कि एम्स का भवन करीब 70 साल पुराना हो चुका है। इसलिए लाइब्रेरी के भवन में किसी बदलाव करना आसान नहीं है, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। नवंबर में कोर्ट ने एम्स को जल्द काम शुरू करने का निर्देश दे ही दिया, जिसके बाद एम्स ने लिफ्ट लगाने काम शुरू कर दिया है। डॉ. सत्येंद्र सिंह ने कहा कि अस्पतालों को दिव्यांगों के लिए सुगम बनाने के लिए सात साल पहले आवाज उठाई थी। इतने वर्षों के बाद एम्स की लाइब्रेरी में लिफ्ट लगाने का काम शुरू हुआ है। (जासं)

9 जनवरी से होंगी जामिया की रद हुईं परीक्षाएं

नई दिल्ली : 13 दिसंबर को नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में हुए हिंसक प्रदर्शन के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया प्रशासन ने 5 जनवरी तक संस्थान की छुट्टी घोषित कर दी थी। इस बीच होने वाली परीक्षाओं को भी टाल दिया गया था। जामिया विश्वविद्यालय 6 जनवरी से शीतकालीन अवकाश के बाद फिर से खुल रहा है। इसके बाद 9 जनवरी से रद हुई परीक्षाओं का आयोजन किया जाएगा। 9 जनवरी से पीजी पाठ्यक्रम की परीक्षाएं शुरू होंगी। वहीं स्नातक पाठ्यक्रम की परीक्षाएं 16 जनवरी से शुरू होंगी। जामिया प्रशासन के अनुसार दिसंबर में 45 फीसद परीक्षाएं नहीं हो पाई थीं जो अब आयोजित की जाएंगी। इस मामले में जामिया प्रशासन ने दिशा-निर्देश भी जारी किए हैं। यह परीक्षाएं 4 फरवरी तक आयोजित होंगी। जामिया प्रशासन ने परीक्षा में छात्रों को मदद उपलब्ध कराने के लिए हेल्प डेस्क गठित की है। इस हेल्प डेस्क फोन नंबर 011-26981717, 1408 और मोबाइल नंबर 7647989611 पर काम करेगी। (जासं)

दिल्ली के दंगल में उतरेंगे मनोहर के लड़ाके

भाजपा का बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन आज, शाह करेंगे संबोधित

अनुराग अग्रवाल, चंडीगढ़

दिल्ली के दंगल में भाजपा की विजय सुनिश्चित करने के लिए मनोहर के लड़ाके भी तैयार हो रहे हैं। हरियाणा चुनाव के दौरान बेहतरीन काम करने वाले तीन दर्जन से अधिक नेताओं को मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में दिल्ली के सियासी मैदान पर उतारने की भाजपा ने रणनीति बनाई है। इसे लेकर मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा और संगठन महामंत्री बीएल संतोष से मुलाकात कर गहन मंथन कर चुके हैं।

दिल्ली में हरियाणा के मतदाताओं की बड़ी संख्या है। इसके साथ ही यहां के 12 विधानसभा क्षेत्रों में जाट मतों पर भाजपा की नजर है। ऐसे में भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व ने हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल को दिल्ली चुनाव में उतरने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री जल्द ही उन तमाम पार्टी नेताओं के साथ बैठक करेंगे, जिनकी ड्यूटी दिल्ली के चुनाव में लगाई जानी है। मनोहर लाल की गिनती प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की कोर टीम में होती है। मनोहर लाल को संगठन में काम करने का पुराना अनुभव है, जिसका दिल्ली में भाजपा को फायदा मिल सकता है। यही वजह है कि हरियाणा की भूमिका को लेकर एक्शन प्लान तैयार करने का मुख्यमंत्री को निर्देश दिया गया है। इस काम में केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत और कृष्ण पाल गुर्जर के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री और राज्यसभा सदस्य चौ. बीरेंद्र सिंह भी उनका सहयोग करेंगे। इसके अलावा 31 अन्य भाजपा नेता भी टीम में शामिल होंगे। इसमें विधायक दीपक मंगला, पूर्व मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, विधायक राजेश नागर सहित कई मंत्री शामिल होंगे।

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह रविवार को इंदिरा गांधी इनडोर स्टेडियम में बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करेंगे। पार्टी का दावा है कि इस सम्मेलन में 30 हजार कार्यकर्ता शामिल होंगे। इन सभी कार्यकर्ताओं का डिजिटल कार्ड बनाया गया है, जिसमें उनका पूरा विवरण है। सम्मेलन में 13,750 बूथ अध्यक्षों के साथ ही बूथ पालक, शहरी केंद्र प्रमुख, बूथ प्रबंधन विभाग के पदाधिकारी और वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता शामिल होंगे।

विधानसभा चुनाव की तिथि घोषित होने के पहले आयोजित इस सम्मेलन के माध्यम से पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर बूथ प्रबंधन को मजबूत करना चाहती है। पार्टी ने विधानसभा चुनाव के लिए 51 फीसद वोट पाने का लक्ष्य रखा है। भाजपा नेताओं का कहना है कि नगर निगम और लोकसभा चुनावों में शाह ने बूथ स्तरीय कार्यकर्ताओं को जीत का मंत्र दिया था, जिसका लाभ पार्टी को मिला था। शाह के साथ ही पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी श्याम जाजू, दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता सहित अन्य नेता कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे। प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे।

भाजपा नेतृत्व से हाल ही में मेरी मुलाकात हुई थी, जिसमें दिल्ली में विधानसभा चुनाव को लेकर विस्तृत बातचीत हुई है। संगठन ने मेरी पूरी टीम की ड्यूटी लगाई है। रणनीति पर चर्चा उपयुक्त नहीं है, लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि हरियाणा की टीम अपना बेस्ट देने के लिए तैयार है।

- मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

अनधिकृत कॉलोनी पर झूठ बोलने पर माफी मांगें सीएम : तिवारी

राब्यू, नई दिल्ली : भाजपा ने आप सरकार पर अनधिकृत कॉलोनियों के नियमितीकरण व रजिस्ट्री को लेकर झूठ फैलाने का आरोप लगाया है। दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी ने कहा कि झूठ बोलने के लिए मुख्यमंत्री को दिल्लीवासियों से 24 घंटे के अंदर माफी मांगनी चाहिए। तिवारी प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रेसवार्ता को संबोधित कर रहे थे।

तिवारी ने कहा कि अनधिकृत कॉलोनियों के नियमितीकरण को लेकर आप ओछी राजनीति करती रही है। केंद्र सरकार के बार-बार कहने के बावजूद आप सरकार ने इन कॉलोनियों का सीमांकन नहीं किया। संसद में बिल लाने को लेकर भी आप नेता जनता को गुमराह करते रहे। संसद में बिल पास करने के लिए जब मतदान का समय आया तो आप सांसद भगवंत मान ने सदन से बाहर जाकर विरोध किया। बिल पास होने के बाद आप नेता यह कहकर लोगों को गुमराह करने लगे कि घर की रजिस्ट्री नहीं हो सकती है। अब लोगों को रजिस्ट्री मिली तो एक बार फिर से मुख्यमंत्री और उनकी पार्टी के नेता झूठ बोलकर भ्रम फैला रहे हैं।

अगले सप्ताह होगी चुनाव की तारीख की घोषणा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली विधानसभा चुनाव की तैयारी करीब-करीब पूरी हो चुकी है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय संशोधन के बाद नई मतदाता सूची सोमवार को जारी करेगा। इसके बाद चुनाव की तारीखों की घोषणा का रास्ता साफ हो जाएगा। सोमवार के बाद किसी भी दिन चुनाव की घोषणा हो सकती है। वैसे भी 15 फरवरी से स्कूलों में सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाएं शुरू हो रही हैं। बताया जा रहा है कि 10 फरवरी से पहले चुनाव कराने की तैयारी है। इसे ध्यान में रखकर चुनाव की तैयारियां की गई हैं। सोमवार को फाइनल मतदाता सूची ऑनलाइन उपलब्ध हो जाएगी। इसके लिए सीईओ कार्यालय जोरशोर से तैयारियों में लगा हुआ है। उल्लेखनीय है कि 26 दिसंबर को चुनाव आयोग भी दिल्ली के सीईओ, संबंधित अधिकारियों व दिल्ली पुलिस के साथ बैठकर चुनाव की तैयारियों की समीक्षा कर चुका है। उस समय सीईओ डॉ. रणबीर सिंह ने बताया था कि चुनाव से संबंधित तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। साथ ही दिल्ली पुलिस ने भी सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी चुनाव आयोग को दी थी। इसके बाद 30 दिसंबर को भी चुनाव आयोग वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये तैयारियों की समीक्षा कर चुका है। सिर्फ नई मतदाता सूची जारी होने का इंतजार है। चुनाव की घोषणा होने के बाद सीईओ कार्यालय मतदाता जागरूकता अभियान में और तेजी लाएगा, ताकि अधिक से अधिक मतदान सुनिश्चित हो सके। मतदाता पहचान पत्रों के संशोधन का काम 15 नवंबर 2019 को शुरू हुआ था, जो 16 दिसंबर 2019 को पूरा हो गया था। इसके तहत कुल 1,46,92,136 मतदाता पंजीकृत किए गए हैं। हालांकि इसके बाद भी कई लोगों ने मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिए आवेदन किया है।

मामले को दूसरी ओर मोड़ा जा रहा सीएम दखल दें : प्रकाश सिंह

एसएसपी प्रकरण

जागरण संवाददाता, नोएडा

उत्तर प्रदेश के डीजीपी ओपी सिंह द्वारा गौतमबुद्ध नगर के एसएसपी वैभव कृष्ण से स्पष्टीकरण मांगे जाने पर प्रदेश के पूर्व डीजीपी प्रकाश सिंह व पूर्व मुख्य सचिव प्रशांत मिश्र ने नाराजगी जताई है। दोनों पूर्व अधिकारियों का कहना है कि वैभव का जांच रिपोर्ट को वायरल करना उतना बड़ा मुद्दा नहीं है, जितना पांच आइपीएस अधिकारियों पर ट्रांसफर-पोस्टिंग के खेल में शामिल होने का आरोप है। वैभव ने जो जांच रिपोर्ट शासन को सौंपी है, उसकी जांच सही तरीके से हो गई तो प्रदेश के कई बड़े नाम उसमें फंसेंगे। यही कारण है कि पूरे मामले को दूसरी ओर मोड़ा जा रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को इस मामले में स्वयं अपनी निगरानी में जांच करानी चाहिए।

दैनिक जागरण से शनिवार को बातचीत में प्रकाश सिंह ने कहा कि वह वैभव कृष्ण को अच्छी तरह से जानते हैं। पिछले एक साल में वैभव ने गौतमबुद्ध नगर में जिस तरह पुलिस अधिकारियों, कथित पत्रकारों, नेताओं और बिल्डरों के माफिया के गठजोड़ को तोड़ा, उससे अराजकतत्वों में हड़कंप मचा है। यही कारण है कि उनकी मान-मर्यादा को प्रभावित करने का कुत्सित प्रयास किया गया है। वैभव की रिपोर्ट यह इंगित करती है कि कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। शासन स्तर पर इस पर समय से जांच कर कार्रवाई हो जाती तो आज यह नौबत नहीं आती। उम्मीद थी कि कुछ कार्रवाई होगी, लेकिन शुक्रवार को डीजीपी व अपर मुख्य सचिव की प्रेस कांफ्रेंस से निराशा हुई है।

बसपा सरकार के दौरान प्रदेश के मुख्य सचिव रहे पूर्व आइएएस अधिकारी प्रशांत मिश्र का कहना है कि वैभव कृष्ण ने जिले में जिस तरह से काम किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। अगर कोई अधिकारी किसी बड़े मुद्दे को उठाता है तो शासन में बैठे अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वह उसकी गंभीरता को समझें और सख्त निर्णय लें।

एबीवीपी और वामपंथी संगठनों का एक-दूसरे पर मारपीट का आरोप

जासं, नई दिल्ली : जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और वामपंथी छात्र संगठन आमने-सामने हैं। दोनों ने शनिवार को एक-दूसरे पर मारपीट के आरोप-प्रत्यारोप लगाए हैं। छात्र संघ ने भी एबीवीपी पर संस्थान के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (एसआइएस) के बाहर मारपीट करने का आरोप लगाया है, तो एबीवीपी ने कहा कि वामपंथी कार्यकर्ताओं ने उन पर हमला किया।

जेएनयू प्रशासन ने कहा कि शनिवार को दोपहर एक बजे कुछ शरारती तत्वों ने संचार व सूचना सेवा (सीआइएस) कार्यालय में घुसकर इसके सर्वर रूम में तोड़फोड़ की और सर्वर बंद कर दिया। इन्होंने सीआइएस के ऑप्टिकल केबल, बिजली सप्लाई, बायोमेट्रिक प्रणाली जैसे बुनियादी ढांचे को खराब कर दिया। टेक्निकल स्टाफ के साथ बदतमीजी भी की। जेएनयू के रजिस्ट्रार प्रो. प्रमोद कुमार ने कहा प्रदर्शनकारी दूसरे छात्रों के नए सेमेस्टर के पंजीकरण की प्रक्रिया को बाधित नहीं कर सकते हैं।

चार घंटे विमान में ही बैठाए रखने पर यात्रियों ने किया हंगामा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- तकनीकी खराबी के कारण एयरपोर्ट पर खड़ा रहा एयर इंडिया का विमान
- दिल्ली से मुंबई की 10 बजे थी उड़ान, शाम छह बजे रवाना हो सके यात्री

दिल्ली से मुंबई जा रहे एयर इंडिया के विमान संख्या एआइ-865 के इंजन में तकनीकी खराबी आ गई, लिहाजा वह आइजीआइ एयरपोर्ट पर ही खड़ा रहा। चार घंटे तक विमान में ही बिठाए रखने पर यात्रियों का धैर्य जवाब दे गया। कुछ यात्रियों ने कॉकपिट के बाहर हंगामा कर दिया। पायलट से कॉकपिट का गेट खोलने को कहा। ऐसा न करने पर उन्होंने गेट पर लात-घूंसे मारे और गेट तोड़ने की धमकी भी दी। इसका क्रू मेंबर ने वीडियो बना लिया। वीडियो वायरल होने पर नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने शनिवार को संज्ञान लेते हुए एयर इंडिया को मामले की जांच करने और हंगामा करने वाले यात्रियों के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा है। वीडियो में कुछ यात्री हंगामा करने वाले यात्रियों को रोकने की कोशिश करते भी भी दिख रहे हैं। एयरपोर्ट अधिकारी के मुताबिक घटना 2 जनवरी की है। विमान को सुबह लगभग 10:10 बजे आइजीआइ एयरपोर्ट से मुंबई के लिए उड़ान भरनी था। बोइंग 747 टाइप का विमान उड़ान के लिए रनवे की ओर रवाना हुआ था। तभी पायलट को इंजन में तकनीकी खराबी का अहसास हुआ। विमान को वापस पार्किंग स्टैंड पर लाया गया। विमान में बिजनेस क्लास के 19 लोग समेत कुल 235 यात्री सवार थे। यात्रियों को चार घंटे तक विमान में ही बिठाए रखा गया। हंगामे के बाद यात्रियों को वेटिंग लाउंज ले जाया गया। वहां से अन्य विमान से शाम करीब 6 बजे मुंबई के लिए रवाना किया गया।

खाने-पीने की चीजें मुहैया न कराने का आरोप : आरोप है कि करीब चार घंटे विमान में ही फंसे रहने के बावजूद यात्रियों को खाने-पीने की चीजें ठीक से मुहैया नहीं कराई गईं। इससे यात्रियों का गुस्सा विमान के क्रू मेंबर पर फूट पड़ा।

विमान में हंगामे की यह है सजा

डीजीसीए के नियमों के मुताबिक किसी यात्री द्वारा विमान में हंगामा अथवा क्रू मेंबर के साथ दुर्व्यवहार करने पर तीन माह के लिए हवाई यात्रा प्रतिबंधित की जा सकती है। यौन उत्पीड़न या मारपीट करने पर उस पर छह माह के लिए हवाई यात्रा पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है। विमान को नुकसान पहुंचाने और कॉकपिट में घुसने के प्रयास पर आरोपित के खिलाफ दो साल से लेकर पूरी उम्र तक हवाई यात्रा पर प्रतिबंध लगाने का प्रावधान है।

आयोजन

प्रगति मैदान में शुरू हुए विश्व पुस्तक मेले की इस बार थीम 'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी : लेखकों के लेखक' रखी गई है

विश्व पुस्तक मेले में पहले दिन पहुंचे 60 हजार लोग

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेला 2020 का शनिवार को आगाज हो गया। पहले दिन मेले में साठ हजार लोग पहुंचे। यह 12 जनवरी तक चलेगा। स्कूल के बच्चों के लिए मेले में प्रवेश मुफ्त है, लेकिन उन्हें स्कूल की ड्रेस में, अपने स्कूल के आइडी कार्ड के साथ आना होगा। वहीं 60 साल की आयु और इसके बाद के सभी बुजुर्गों का प्रवेश मुफ्त होगा। इसके लिए बुजुर्गों को वोटर आइडी कार्ड व आधार कार्ड के तहत इसका प्रमाण देना होगा। मेले में अन्य लोगों के लिए प्रवेश के लिए 20 रुपये शुल्क निर्धारित किया गया है। मेले का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) और इंडियन ट्रेड प्रमोशन ऑर्गनाइजेशन (आइटीपीओ) की तरफ से किया जा रहा है। मेले की थीम 'राष्ट्रपिता महात्मा गांधी : लेखकों के लेखक' रखी गई है।

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री (एमएचआरडी) रमेश पोखरियाल निशंक ने शनिवार को मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पुस्तकें न केवल हमारी मार्गदर्शक, मित्र एवं एकांत की सहचर हैं, बल्कि ये हमारे अंदर मानवीय गुणों का विकास करती हैं। उन्होंने कहा कि विश्व पुस्तक मेले में 30 देशों के 600 से अधिक प्रकाशक हिस्सा ले रहे हैं। मुझे खुशी है कि इस पुस्तक मेले के माध्यम से गांधीवादी विचारों को प्रचार प्रसार किया जाएगा। मौजूदा हालात में जब विश्व में आतंकवाद बढ़ रहा है तो ऐसी स्थिति में गांधीजी के विचारों का अधिक महत्व है।

प्रगति मैदान में शुरू हुए विश्व पुस्तक मेले में पुस्तकों का अवलोकन करती छात्राएं। ध्रुव कुमार

मेले में क्या है खास : प्रगति मैदान में मेला हॉल संख्या 7 ए से एच, 8, 9, 10, 11, 12 एवं 12ए में आयोजित किया जा रहा है। हॉल नंबर 7 के विदेशी मंडप में चीन, मिस्त्र, फ्रांस, नेपाल, स्पेन, ईरान, जर्मनी, श्रीलंका सहित कई देशों के प्रकाशक व संस्थाएं पुस्तक मेले में सहभागी हैं। भारतीय भाषा के प्रकाशक हॉल संख्या 12ए और बच्चों के लिए पुस्तकें हॉल संख्या 7डी और 7 एफजीएच पर मौजूद हैं। मेले में हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ खास है।

आइजीआइ एयरपोर्ट से मध्य एशिया में सामान पहुंचाएगा चीन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

देश का सबसे व्यस्ततम एयरपोर्ट इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (आइजीआइ) अब कार्गो ढुलाई के क्षेत्र में भी विदेशों में अपना सिक्का जमाने लगा है। चीन ने आइजीआइ एयरपोर्ट का कार्गो ट्रांसशिपमेंट सेंटर (टीईसी) के रूप में चयन किया है। लिहाजा अब चीन का माल आइजीआइ से होकर मध्य एशिया के देशों में पहुंचेगा।

कार्गो की पहली खेप लेकर विशेष विमान शुक्रवार को बीजिंग से आइजीआइ पहुंचा। यहां से कपड़ों और इलेक्ट्रॉनिक सामान मध्य एशिया के अन्य देशों को रवाना किया जाएगा। इससे पहले बांग्लादेश ने भी आइजीआइ एयरपोट्र को अपना केंद्र बनाया था। वहां का सामान भी आइजीआइ एयरपोर्ट के माध्यम से ही विदेशों में भेजा जाता है। बीजिंग द्वारा आइजीआइ को विशेष कार्गो टीईसी के रूप में चुने जाने पर एयरपोर्ट की संचालक कंपनी दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल) ने प्रसन्नता जाहिर की है।

डायल के सीईओ विदेह कुमार जयपुरियार ने कहा कि एयरपोर्ट को विश्वस्तरीय टीईसी के रूप में विकसित किया गया है। कार्गो के सुचारू आवागमन के लिए दो अत्याधुनिक इंटीग्रेटेड कार्गो टर्मिनल के निर्माण के साथ ही अन्य जरूरी सुविधाएं जुटाई गई हैं। इसलिए यह एयरपोर्ट उत्तर भारत सहित पड़ोसी देशों के लिए भी टीईसी के रूप में उभर रहा है। चीन द्वारा आइजीआइ को टीईसी चुने जाने से एयर कार्गो और रीजनल लॉजिस्टिक्स सेक्टरों को खासा प्रोत्साहन मिलेगा। इससे पहले बांग्लादेश ने भी ढाका से मैनचेस्टर में रेडीमेड कपड़ों की खेप भेजने के लिए दिल्ली एयरपोर्ट को कार्गो ट्रांसशिपमेंट सेंटर चुना था। वहां की फर्म अब भारत के जरिये सामानों की खेप विदेश भेजती हैं।

12 लाख रुपये की नकदी और 45 बैंक खाते बरामद हुए हैं लखनऊ के रीजनल पासपोर्ट ऑफिस में कार्यरत वरिष्ठ अधीक्षक विकास मिश्रा के ठिकानों पर सीबीआइ छापेमारी के दौरान।

झांकी को लेकर क्यों मची है रार

गणतंत्र दिवस पर देश की आन-बान और शान झलकती है। सैन्य शक्ति के साथ ही कला-संस्कृति की झांकियां देशवासियों का सीना बुलंद करती हैं। इनमें राज्यों की झांकियां भी शामिल होती हैं जो देश की विविधता में एकता की परिचायक होती हैं। इस बार पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र की झांकी राजपथ पर नहीं दिखेगी। इसको लेकर विवाद मचा हुआ है। हालांकि कई अन्य राज्यों की झांकियों को भी अनुमति नहीं मिली है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर झांकी कैसे राजपथ के लिए चुनी जाती हैं। कौन उनका चयन करता है। उसकी प्रक्रिया क्या है।

Ministry of Defence
Government of India

रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी

गणतंत्र दिवस समारोह के परेड और झांकियों की जिम्मेदारी रक्षा मंत्रालय की होती है। वही तैयारी, सुरक्षा, परेड और झांकी की व्यवस्था देखती है। दरअसल इस दिन राष्ट्रपति तिरंगा फहराते हैं। वे तीनों सेनाओं के प्रमुख होते हैं।

समिति करती है मूल्यांकन

झांकियों के लिए मिले प्रस्तावों का मूल्यांकन करने के लिए विशेषज्ञों की समिति होती है। समिति में कला, संस्कृति, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, वास्तुकला आदि के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ होते हैं। यह समिति विषय, अवधारणा समेत अन्य पहलुओं की जांच करती है। प्रस्तावकों की ओर से अपनी झांकी की डिजायन के तीन मॉडल पेश किए जाते हैं। उनमें से एक का चयन समिति करती है।

इस वर्ष 56 झांकियों के भेजे गए थे प्रस्ताव

2020 की झांकी के लिए 32 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों समेत मंत्रालयों व विभागों से कुल 56 प्रस्ताव भेजे गए थे। पांच बैठकों की जांच-पड़ताल के बाद उनमें से 22 का चयन किया गया है। इनमें 16 राज्यों के व छह मंत्रालयों व विभागों के हैं। मंत्रालय का कहना है कि समय सीमा को देखते हुए सीमित संख्या में झांकियां चुनी गई हैं।

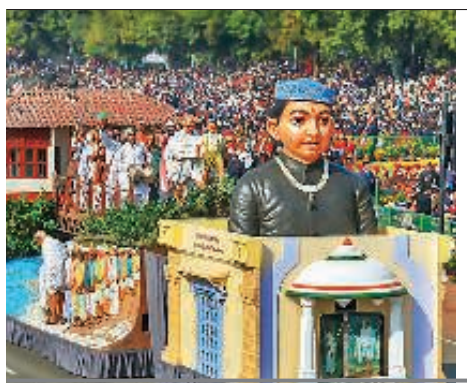

छह माह पहले राज्यों से मांगे जाते हैं प्रस्ताव

रक्षा मंत्रालय की वेबसाइट के मुताबिक झांकी के चयन के लिए एक स्थापित प्रणाली है। इसके अनुसार गणतंत्र दिवस से करीब छह महीने पहले सभी राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, मंत्रालयों और विभागों से प्रस्ताव मांगे जाते हैं।

बंगाल ने तीन थीमों पर पेश किया था प्रस्ताव

पश्चिम बंगाल सरकार ने कन्याश्री, जल धरो जल भरो और सबूज साथी थीम के तीन प्रस्ताव पेश किए थे। कन्याश्री योजना छात्राओं के लिए है। सबूज साथी में नौवीं से 12वीं तक की छात्राओं को साइकिल दी जाती है। वहीं जल धरो जल भरो में वर्षा जल संचयन की योजना शामिल है।

गणतंत्र दिवस परेड में शामिल झांकियां ● जागरण आर्काइव

तीन बार पहले भी अस्वीकृत हो चुकी है बंगाल की झांकी

रक्षा मंत्रालय का कहना है कि पश्चिम बंगाल से आए प्रस्ताव की विशेषज्ञ समिति ने दो दौर की बैठक के बाद आगे नहीं ले जाने का फैसला किया। गौरतलब है कि 2019 में भी गणतंत्र दिवस परेड में इसी प्रक्रिया के तहत पश्चिम बंगाल की झांकी चुनी गई थी। इसके पहले वर्ष 2015, 17 और 18 में भी पश्चिम बंगाल का प्रस्ताव खारिज हो गया था।

राजपथ पर नहीं हुई थी पहली परेड

1950 में गणतंत्र होने के बाद देश की पहली परेड राजपथ पर नहीं निकली थी। सन 1954 तक नेशनल स्टेडियम, किंग्सवे, रामलीला मैदान और लालकिला में परेड हुई। इसके अगले वर्ष से राजपथ पर परेड शुरू की गई।

ठाकरे सरकार के लिए संकट बने सत्तार

बढ़ी परेशानी ▶ दिन भर चला मंत्री पद से इस्तीफे का नाटक, रात को बोले-ऐसा कुछ नहीं

सत्तार ने मुंबई विस्फोट मामले में याकूब मेमन की फांसी का किया था विरोध

- शिवसेना को बार-बार इस्तीफे का खंडन करना पड़ा
- मलाईदार मंत्रालय को लेकर खींचतान, पांच दिन बाद भी विभागों का बंटवारा नहीं

मुंबई, एजेंसियां : महाराष्ट्र में एक महीने पुरानी ठाकरे सरकार मुसीबतों में फंसती नजर आ रही है। पहले तो मंत्रिमंडल विस्तार में एक महीने का समय लग गया और उसके बाद पांच दिन बाद तक भी विभागों का बंटवारा नहीं हो पाया है। रही सही कसर शिवसेना कोटे से मंत्री बने अब्दुल सत्तार के इस्तीफे की खबर ने पूरी कर दी। शनिवार को दिन भर सत्तार के इस्तीफे की अटकलें लगती रहीं। शिवसेना के नेताओं की पूरी टीम अटकलों को खारिज करने में लगी रही। हालांकि, रात में खुद सत्तार सामने आए और इस्तीफे की खबर को गलत बताया। लेकिन रविवार को मुख्यमंत्री से मुलाकात करने की बात कहकर नाराजगी की खिड़की भी खुली रखी। वैसे, अब्दुल सत्तार पहले से ही शिवसेना के लिए परेशानी का कारण बने हुए हैं। वह उन विधायकों में शामिल थे, जिन्होंने 1993 के मुंबई विस्फोट मामले में याकूब मेमन की फांसी की सजा का विरोध किया था और राष्ट्रपति से उसके लिए दया की मांग की थी।

शनिवार को औरंगाबाद में संवाददाताओं ने जब अब्दुल सत्तार से इस्तीफे के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, 'मैंने इस्तीफा नहीं दिया है। मैं कल मुंबई में शिवसेना अध्यक्ष और मुख्यमंत्री ठाकरे से मुलाकात करूंगा। उसके बाद मुख्यमंत्री जो भी निर्णय करेंगे वह उसे स्वीकार करेंगे।' सत्तार का यह बयान शिवसेना विधायक अर्जुन खोटकर के बयान के बाद आया, जिसमें उन्होंने कहा था कि सत्तार के इस्तीफा देने का सवाल ही नहीं उठता है। इस्तीफे की अटकलें आधारहीन हैं।

इससे पहले, शनिवार को दिन भर अब्दुल सत्तार के इस्तीफा देने की खबरें आती रही। बताया गया कि राज्यमंत्री बनाए जाने से वह नाराज हैं। उन्हें कैबिनेट मंत्री बनाए जाने का वादा किया गया था। सत्तार 30 दिसंबर को ही मंत्री बने थे, अभी उन्हें कोई विभाग भी नहीं मिला है। पूर्व सांसद चंद्रकात खैरे ने दावा किया कि अब्दुल सत्तार जिला परिषद अध्यक्ष के चुनाव में कांग्रेस को समर्थन देने के पार्टी के फैसले से नाराज हैं। खैरे ने सत्तार से औरंगाबाद के होटल में मुलाकात होने की बात कही थी, उसी होटल में भाजपा विधायक और पूर्व स्पीकर हरिभाऊ बागड़े भी देखे गए थे और पूछने पर कहा कि वो निजी काम से वहां गए थे। इससे सत्तार को लेकर अटकलें और तेज हो गई थीं।

हाल ये हो गया कि शिवसेना की तरफ से उसके राज्यसभा सदस्यों संजय राउत और अनिल देसाई को यह बार-बार सफाई देनी पड़ी कि सत्तार ने इस्तीफा नहीं दिया है। राउत ने कहा कि आमतौर पर कोई मंत्री इस्तीफा देता है तो उसे मुख्यमंत्री या राजभवन भेजता है, लेकिन सत्तार के इस्तीफा के बारे में इन दोनों के पास ही कोई सूचना नहीं हैं।

जालना के कांग्रेस विधायक देंगे इस्तीफा : जालना से कांग्रेस विधायक कैलाश गोरंत्याल ने भी पार्टी के साथ ही ठाकरे सरकार के लिए परेशानी पैदा कर दी है। शनिवार को उन्होंने कहा कि वह प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बालासाहब थोरात से मिलकर पार्टी पदाधिकारियों और नेताओं के साथ उन्हें अपना इस्तीफा सौंप देंगे। तीन बार के विधायक गोरंत्याल मंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज बताए जा रहे हैं। वहीं, मंत्रियों के विभागों में बंटवारे में देरी को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। प्रदेश राकांपा अध्यक्ष और राज्य सरकार में मंत्री जयंत पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री ने मंत्रियों को दिए जाने वाले विभागों की सूची शनिवार रात राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के पास भेज दी। उन्होंने ट्वीट किया, 'मेरी सूचना के मुताबिक, विभागों की सूची शाम 7.30 बजे राज्यपाल के पास भेज दी गई है। उम्मीद है राज्यपाल जल्द मंजूरी देंगे।'

अब्दुल सत्तार। फाइल

गठबंधन सरकार के पतन की शुरुआत : भाजपा

वाशिम, एएनआइ : महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री व भाजपा नेता देवेंद्र फड़नवीस ने अब्दुल सत्तार के इस्तीफे की पेशकश पर कहा कि यह ठाकरे सरकार के पतन की शुरुआत है। वह यहां जिला परिषद चुनाव के लिए जनसभा को संबोधित कर रहे थे। वहीं, भाजपा के राज्यसभा सदस्य नारायण राणे ने कहा कि उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार ज्यादा दिनों की मेहमान नहीं है। सोलापुर में उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि सरकार गठन के एक महीने बाद भी मंत्रियों को विभागों का बंटवारा नहीं हो पाया है।

आचरण समिति ने 19 सांसदों के खिलाफ खारिज की शिकायत

नई दिल्ली, प्रेट्र : राज्यसभा की आचरण समिति ने उच्च सदन के 19 सदस्यों के खिलाफ शिकायत खारिज कर दी है। शिकायत दर्ज करने की निर्धारित प्रक्रिया का पालन नहीं किए जाने के आधार पर इन्हें खारिज किया गया है। सूत्रों के अनुसार, राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू ने अधिकारियों को समिति की कार्यप्रणाली के बारे में लोगों को जागरूक करने का निर्देश दिया है। सूत्रों ने बताया कि आचरण समिति के अध्यक्ष प्रभात झा को सांसदों के खिलाफ शिकायत भेजने संबंधी मौजूदा नियमों की समीक्षा करने का प्रस्ताव भी भेजा गया है। नायडू ने पिछले सप्ताह आचरण समिति की कार्यप्रणाली की समीक्षा किए जाने के बाद यह निर्देश जारी किया है।

सूत्रों ने बताया कि बैठक के दौरान सभापति के संज्ञान में यह तथ्य लाया गया कि पिछले चार साल के दौरान उच्च सदन के 19 सदस्यों के खिलाफ मिली 22 शिकायतें समिति ने बिना परीक्षण किए वापस कर दी। इन शिकायतों को निर्धारित प्रक्रिया का पालन नहीं किए जाने के आधार पर खारिज किया गया। उल्लेखनीय है कि उच्च सदन के सदस्यों का प्रभावी कामकाज सुनिश्चित करने के लिए यह समिति उनके व्यवहार की देखरेख करती है और अनैतिक आचरण से जुड़ी शिकायतों की जांच करती है।

एस-400 है गेमचेंजर, रक्षा खरीद पर न हो राजनीति

- पूर्व वायुसेना अध्यक्ष धनोआ ने खरीद प्रक्रिया तेज करने की जरूरत बताई
- अमेरिका की कड़ी आपत्ति के बावजूद भारत ने रूस के साथ यह सौदा किया है
- सौदे के तहत 2021 में भारत को सिस्टम मिलने शुरू हो जाएंगे

मुंबई, एएनआइ : रिटायरमेंट के बाद लगातार महत्वपूर्ण बयान दे रहे पूर्व वायुसेना अध्यक्ष बीएस धनोआ ने कहा है कि एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम गेमचेंजर है। जरूरत है कि सरकार रक्षा खरीद प्रक्रिया को तेज बनाए।

कार्यक्रम में शामिल धनोआ ने कहा, वह हमेशा कहते रहे हैं कि एस-400 गेमचेंजर (मुकाबले की तस्वीर बदलने वाला) हथियार है। सरकार ने इसे खरीदने का बहुत अच्छा फैसला किया है। भारत ने 5.43 अरब डॉलर (करीब 40 हजार करोड़ रुपये) में एस-400 सिस्टम की पांच बैटरी खरीदने का सौदा रूस से किया है। इसे दुनिया का सर्वोत्कृष्ट एयर डिफेंस सिस्टम माना जाता है। अमेरिका की कड़ी आपत्ति के बावजूद भारत ने रूस के साथ यह सौदा किया है। सौदे के तहत 2021 में भारत को सिस्टम मिलने शुरू हो जाएंगे।

पूर्व वायुसेना अध्यक्ष ने कहा कि रक्षा खरीद सौदों को लेकर राजनीति नहीं होनी चाहिए। इससे खरीद प्रक्रिया लंबित होती है जिसका असर देश की सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ता है और सुरक्षा बल हतोत्साहित होते हैं। इस सिलसिले में उन्होंने बोफोर्स तोप सौदे का उदाहरण दिया। कहा कि वह तोप बहुत अच्छी है लेकिन उसका सौदा विवादों में उलझ गया और अतिरिक्त खरीद के रास्ते भी बंद हो गए। धनोआ का इशारा राफेल लड़ाकू विमान सौदे को लेकर उत्पन्न विवाद की ओर भी था। उन्होंने कहा, विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान पाकिस्तानी विमानों के साथ डॉग फाइटिंग में मिग-21 की जगह राफेल में होते तो निश्चित रूप से परिणाम अलग होता। पूर्व वायुसेना अध्यक्ष ने कहा, देश में हथियार खरीद प्रक्रिया बहुत लंबी होने से सेनाओं का आधुनिकीकरण प्रभावित हो रहा है। इस प्रक्रिया को छोटा किए जाने की जरूरत है।

बीएस धनोवा। फाइल

न्यूज गैलरी

कोर्ट ने पूर्व सीएम फड़नवीस को 24 को हाजिर रहने को कहा

नागपुर : नागपुर की अदालत ने भाजपा नेता एवं महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस को 24 जनवरी को होने वाली सुनवाई में हाजिर रहने को कहा है। पूर्व मुख्यमंत्री के खिलाफ चुनावी हलफनामे में अपने खिलाफ लंबित मामलों की जानकारी नहीं देने को लेकर अदालत से आपराधिक मामला चलाने की मांग की गई है। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट आरएम सातव ने मामले की अगली सुनवाई की तिथि 24 जनवरी तय की है। अदालत ने कहा, 'आरोपित अगली सुनवाई पर कोर्ट में निश्चित रूप से उपस्थित रहें।' (प्रेट्र)

जगनमोहन को 10 को पेश होने का आदेश

हैदराबाद : सीबीआइ की विशेष अदालत ने एक मामले में आंध्र प्रदेश के सीएम वाईएस जगनमोहन रेड्डी को 10 जनवरी को कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है। मामला मुख्यमंत्री के फर्म में 'बदले में कराए गए' निवेशों से संबंधित है। सीएम ने निजी पेशी से छूट देने का आग्रह करते हुए अर्जी दायर की थी। (प्रेट्र)

हांगलू के खिलाफ शिकायतों को लटकाने वालों पर गिरेगी गाज

- पोखरियाल के सख्त रुख को देखते हुए ऐसे अफसरों की शुरू हुई खोजबीन
- महिला आयोग से पहले एचआरडी मंत्रालय से की गई थी यौन उत्पीड़न की शिकायत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति पद से रतनलाल हांगलू की भले ही विदाई हो चुकी है, लेकिन मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्रालय में अभी भी हलचल मची है। अब ऐसे अफसरों की तलाश की जा रही है जो हांगलू के खिलाफ लगातार मिल रही गंभीर शिकायतों को दबा कर बैठे थे। इनमें यौन उत्पीड़न से जुड़ी शिकायतें शामिल हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग से पहले मंत्रालय को शिकायत भेजी गई थी। जब मंत्रालय ने कदम नहीं उठाया, तो इसे राष्ट्रीय महिला आयोग के सामने ले जाया गया।

इलाहाबाद विवि के पूर्व कुलपति हांगलू को लेकर यह हलचल राष्ट्रपति भवन से उनके खिलाफ उच्चस्तरीय जांच कराने के निर्देश के बाद शुरू हुई है। मंत्रालय के अधिकारियों की भी भूमिका को संदेहास्पद पाया गया है। मंत्रालय से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों की मानें तो एचआरडी मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने भी इस मामले में सख्त रुख दिखाया है। तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित कर जांच शुरू कर दी गई है। यह पता लगाने के निर्देश भी दिए हैं कि उनके खिलाफ मिल रही इस तरह की गंभीर शिकायतों को छुपा कर क्यों रखा गया? साथ ही कौन-कौन इनमें शामिल है? इसे लेकर फाइलों की पड़ताल कराई जा रही है। वहीं इस मामले में शिकायतकर्ता से भी संपर्क साधा जा रहा है। माना जा रहा है कि शिकायतों को दबाने वाले अधिकारियों के नाम सामने आने के बाद उन सभी के खिलाफ भी कड़ी कार्रवाई होगी।

सूत्रों की मानें तो मंत्रालय के कई वरिष्ठ अधिकारियों के हांगलू से सीधे संपर्क थे। ये अधिकारी उनकी मदद कर रहे थे। यही वजह है कि शिकायतों पर जहां कोई कार्रवाई नहीं की गई है, वहीं उनके खिलाफ कराई गई जांच रिपोर्ट को भी छुपाया गया। वैसे भी हांगलू के खिलाफ शिकायतों का यह सिलसिला उनकी नियुक्ति के करीब साल भर बाद ही शुरू हो गया था। इस दौरान सबसे ज्यादा शिकायतें 2016 से 2018 के बीच हुई हैं।

उप्र के छह जिलों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

विकास की रफ्तार में सबसे पिछड़े जिलों में शुमार उत्तर प्रदेश के छह जिलों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। 'चैंपियंस ऑफ चेंज' की विभिन्न श्रेणियों में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले इन जिलों को केंद्र सरकार ने पुरस्कृत भी किया है। राज्यों की रैंकिंग में उत्तर प्रदेश 51 अंक लेकर दूसरे स्थान पर, जबकि 53 अंक के साथ केरल पहले पायदान पर है।

बेहतर प्रदर्शन करने वाले जिलों की रैंकिंग नीति आयोग ने निर्धारित मानकों के आधार पर की है। राष्ट्रीय स्तर पर इन जिलों में चलाए गए अभियान के साल भर बाद लगातार समीक्षा व रैंकिंग की जा रही है। इनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 20 जिलों को चुना गया है। इनमें से अकेले उत्तर प्रदेश के छह जिले बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराईच, सिद्धार्थनगर, सोनभद्र और चित्रकूट शामिल हैं।

20 जिलों की विकास रैंकिंग में उत्तर प्रदेश के बलरामपुर को पहला जबकि चित्रकूट को चौथा स्थान प्राप्त हुआ है। जिलों की यह रैंकिंग विकास की रफ्तार को तेज करने के लिए हर महीने भी की जाती है। जिन मानकों के आधार पर इन जिलों का चयन किया गया, उन्हीं के आधार पर उनके विकास की रफ्तार को मापा गया है। स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा, कृषि एवं जल संसाधन, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और आधारभूत संरचना जैसे इंडेक्स को आधार बनाया गया है। इन्हीं क्षेत्रों में विकास के कार्य कराए जा रहे हैं। आकांक्षी 117 जिलों में से बंगाल की सरकार ने हिस्सा लेने से मना कर दिया है, जिससे अब 27 राज्यों के 112 जिले ही रह गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर त्वरित विकास के बूते पिछड़े इन जिलों को भी देश के अन्य जिलों की तरह विकास की मुख्य धारा में लाना योजना का मकसद है। समग्र प्रगति में उत्तर प्रदेश के चयनित 20 जिले दूसरे नंबर पर रहे। इंडेक्स के आधार पर नंबर एक भी कई जिले रहे। इनमें आधारभूत संरचना में दिसंबर में बहराइच, शिक्षा के क्षेत्र में सोनभद्र, बलरामपुर, आधारभूत संरचना के क्षेत्र में फतेहपुर पूरे देश में पहले नंबर पर रहा। सोनभद्र को छोड़ इन सभी जिलों को केंद्र की ओर से तीन करोड़ रुपये का पुरस्कार भी मिला। सोनभद्र में जिला खनन कोष में 30 करोड़ रुपये से अधिक उपलब्ध था, लिहाजा इसे सिर्फ प्रशस्तिपत्र दिया गया।

देश के 112 आकांक्षी (पिछड़े) जिलों में उत्तर प्रदेश के आठ जिलों को शामिल किया गया है। केंद्र सरकार की विशेष योजना के तहत इन जिलों में विकास की बयार बहाने की कोशिश की जा रही है, ताकि वे पिछड़े जिलों की सूची से 2022 तक बाहर निकल सकें। इनमें 35 जिले नक्सल प्रभावित हैं।

चैंपियंस ऑफ चेंज

- नीति आयोग ने निर्धारित मानकों के आधार पर की जिलों की रैंकिंग, विकास रैंकिंग में बलरामपुर को पहला स्थान

बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों की औसत उपलब्धि

राज्य	उपलब्धि अंक
केरल	53
उप्र	51
हरियाणा	38
बिहार	38
मध्य प्रदेश	35
पंजाब	33
हिमाचल	33
ओडिशा	30
पूर्वोत्तर के राज्य	27

प्रधानमंत्री ने दो हफ्ते में तीसरी बार की मंत्रालयों के कामकाज की समीक्षा

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को मंत्रिपरिषद की एक बैठक में विभिन्न सेक्टरों की प्रगति की समीक्षा की। 21 दिसंबर के बाद यह तीसरी ऐसी बैठक थी। इस कवायद का मकसद अगले पांच साल के लिए प्रमुख मंत्रालयों के लिए कार्ययोजना को अंतिम रूप देना है।

सरकारी सूत्रों ने बताया कि बैठक के दौरान शीर्ष अधिकारियों ने शासन, तकनीक और संसाधनों जैसे सेक्टरों के बारे प्रधानमंत्री को जानकारी दी। सचिवों की विभिन्न समितियों द्वारा दिए प्रेजेंटेशन में मिले सुझावों के आधार पर सरकार विभिन्न मंत्रालयों के लिए पांच साल की कार्ययोजना को अंतिम रूप देगी। दरअसल, नीतियों के त्वरित और बेहतर कार्यान्वयन के लिए मंत्रालयों को कृषि, स्वास्थ्य और तकनीक जैसे विभिन्न सेक्टरों में विभाजित किया गया है। कार्ययोजना से शासन और विकास की नीतियों को ज्यादा व्यवस्थित तरीके से लागू करने और जमीनी स्तर पर लाभ लेने में मदद मिलेगी।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

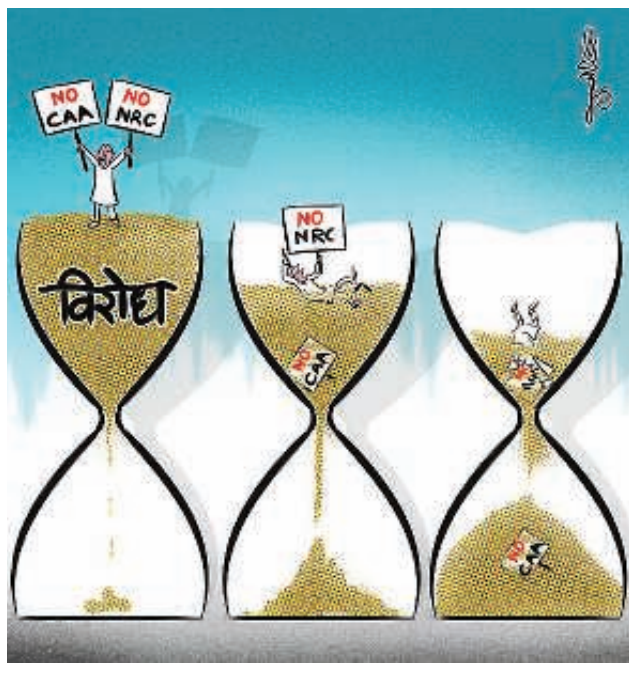

राकांपा ने सेवा दल से सावरकर पर विवादित पुस्तिका वापस लेने को कहा

- पुस्तिका में की गई हैं कई आपत्तिजनक टिप्पणियां

मुंबई, प्रेट्र : महाराष्ट्र की गठबंधन सरकार में प्रमुख घटक राकांपा ने कांग्रेस सेवा दल की विवादास्पद पुस्तिका को वापस लेने की मांग की है। पुस्तिका में विनायक सावरकर और महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे के रिश्तों को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है। राकांपा के मुख्य प्रवक्ता नवाब मलिक ने कहा कि चूंकि सावरकर जीवित नहीं हैं, इसलिए उनके खिलाफ ऐसी टिप्पणी करना गलत है।

हाल ही में यह पुस्तिका मध्य प्रदेश में कांग्रेस सेवा दल के एक शिविर में वितरित की गई थी। कांग्रेस सेवा दल की ओर से जारी इस पुस्तिका में सावरकर की देशभक्ति पर भी सवाल उठाए गए हैं। इसमें यह भी दावा किया गया है कि अंडमान जेल से रिहा होने के बाद सावरकर को अंग्रेजों से पैसा मिला था। नवाब मलिक ने कहा, 'पुस्तिका वापस ली जानी चाहिए। आपके किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। लेकिन जो व्यक्ति जीवित नहीं है, उसके खिलाफ ऐसी व्यक्तिगत टिप्पणी करना सही नहीं है।'

गौरतलब है कि पुस्तिका को लेकर शिवसेना ने भी कांग्रेस पर निशाना साधा था। शिवसेना सांसद संजय राउत ने एक दिन पहले कहा था, 'वीर सावरकर एक महान व्यक्ति थे और वह महान व्यक्ति बने रहेंगे। एक तबका उनके खिलाफ बातें करता रहता है। यह उनके दिमाग में भरी गंदगी को दिखाता है।' भाजपा नेता देवेंद्र फड़नवीस ने पुस्तिका पर प्रतिबंध लगाने की मांग करते हुए आरोप लगाया था कि कांग्रेस ने इसे प्रसारित करके अपनी भ्रष्ट छवि को प्रदर्शित किया है।

विवाद से आहत सावरकर के पौत्र अस्पताल में भर्ती

विनायक दामोदर सावरकर के पौत्र रंजीत सावरकर को हाई ब्लडप्रेशर की शिकायत के बाद शुक्रवार देर रात अस्पताल में भर्ती कराया गया। बताया जाता है कि 55 वर्षीय रंजीत सावरकर अपने दादा पर टिप्पणियों से तनाव में थे।

एक सूत्र ने बताया, 'रंजीत अपने दादा के पक्ष में बात रखने के लिए टेलीविजन स्टूडियो के चक्कर लगा रहे थे और इससे उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ा। रात उनका रक्तचाप 220 तक बढ़ गया, जिसके बाद उन्हें माहिम के रहेजा फोर्टिस अस्पताल में भर्ती कराया गया।' उनकी हालत अब स्थिर बताई जा रही है।

जबलपुर में एक साथ छह धनुष तोप का निर्माण युद्ध स्तर पर

नईदुनिया, जबलपुर : मध्य प्रदेश के जबलपुर की गन कैरिज फैक्ट्री में छह 'धनुष' तोप (155एमएम/45 कैलिबर) बनाने का काम युद्ध स्तर पर चल रहा है। तोप गाड़ी निर्माणी ने इस वित्तीय वर्ष (मार्च-2020) के अंत तक सेना को एकसाथ 12 स्वदेशी धनुष तोपों की खेप देने का लक्ष्य रखा है।

SIHANTA IAS
GS
SECURE PT in 120 DAYS
Free Workshop
6 Jan.
1.00 PM
Ph. 011-42875012, 8743045487
530, Ground Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जरूरत है उपसंपादक और वरिष्ठ उपसंपादक की

दैनिक जागरण नोएडा में उपसंपादक और वरिष्ठ उपसंपादक पद पर योग्य और उत्साही अभ्यर्थियों की आवश्यकता है। उपसंपादक पद के लिए तीन साल और वरिष्ठ उपसंपादक पद के लिए पांच साल का कार्य अनुभव अनिवार्य है। यदि आपमें आगे बढ़ने का जज्बा है और मुख्यधारा की पत्रकारिता में शामिल होकर करियर बनाना चाहते हैं तो हमें एक सप्ताह के भीतर निम्न पते या मेल पर अपना सीवी भेजें।

- शैक्षिक योग्यता : ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट BJMC or MJC with min. marks 50%
- इच्छुक अभ्यर्थी अपना सीवी निम्न ईमेल पर एचआर डिपार्टमेंट को भेजें : carreer@jagran.com
- ईमेल भेजते समय सब्जेक्ट लाइन में कृपया पद और लोकेशन जरूर लिखें।

दैनिक जागरण
डी-210-211
सेक्टर 63
नोएडा

100 रेल मार्गों पर 150 प्राइवेट ट्रेनें चलाने को लेकर रोडमैप तैयार किया है भारतीय रेल और नीति आयोग ने। इसको लेकर तैयार मसौदे के मुताबिक, इससे 22,500 करोड़ रुपये का निवेश आ सकता है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 जनवरी 2020

लालू ने दिया नया नारा, दो हजार बीस-हटाओ नीतीश

शब्द बाण

राज्य ब्यूरो, पटना

तुकबंदी और नारे गढ़ने के लिए प्रसिद्ध राजद प्रमुख व पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने बिहार विधानसभा चुनाव के लिए नया नारा दिया है। उन्होंने अपने ट्विटर पर दो लाइन में लिखा है, दो हजार बीस, हटाओ नीतीश। सुबह से ही इसकी खूब चर्चा शुरू हो गई। इससे पहले तीन दिनों से बिहार की राजनीति में पोस्टर वार चल रहा था, जिसमें शनिवार को लालू यादव ने यह नारा उछाल कर नया मोड़ दे दिया।

राजद प्रमुख के नए नारे का जवाब भी दिया गया है। उनके जवाब में भवन निर्माण मंत्री डॉ. अशोक चौधरी ने नया नारा दिया है, 'दो हजार बीस, फिर से नीतीश।' चौधरी शनिवार को सपरिवार मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिले। उन्हें नए साल की शुभकामनाएं दीं। वहां से निकल कर यह नारा दिया। चौधरी ने कहा कि नीतीश बिहार की जरूरत हैं। उनके विकल्प के रूप में राज्य में कोई चेहरा नहीं है।

▸ जदयू का जवाब : दो हजार बीस, फिर से नीतीश

लालू यादव

▸ पोस्टर वार से नारों पर उतरी बिहार की राजनीति

नीतीश कुमार। दोनों फाइल

लालू ने ट्विटर पर दिया नारा, राबड़ी ने बोला हमला

शनिवार को लालू ने लगातार दो ट्वीट किए। राबड़ी देवी ने भी ट्वीट करके राज्य सरकार पर हमला बोला और सीएम नीतीश कुमार को निशाने पर लिया। उन्होंने मुजफ्फरपुर के बालिका गृह कांड पर सवालों की झड़ी लगा दी। पूछा कि ब्रजेश ठाकुर के अखबार को करोड़ों रुपये का विज्ञापन क्यों दिया जाता था। लालू ने अपने दूसरे ट्वीट में लिखा, नीति आयोग ने नीतीश के शासन को पूरे देश में फिसड्डी साबित करते हुए जीरो बटा अंडा दिया है। नीतीश कुमार को अपने 15 साल का हिसाब केंद्र सरकार से भी पूछ लेना चाहिए। खाली पोस्टर में फड़फड़ाने से कुछ नहीं होने वाला। राजद प्रमुख ने नसीहत भी दी कि जब पंख नहीं हो तो उड़ने की जिद नहीं करनी चाहिए। बेकार में गिरकर घायल हो जाइएगा।

पटना में लगे राजद के शब्द ज्ञान पर कटाक्ष करते पोस्टर

राज्य ब्यूरो, पटना

▸ 'चरवाहा विद्यालय के आतंक' शीर्षक वाले पोस्टर में बताया गया कि राजद के पोस्टर बनाने वालों को नहीं आती हिंदी

पंद्रह साल बनाम पंद्रह साल को केंद्र में रख जदयू और राजद के बीच शुरू हुए पोस्टर वार के तहत शनिवार को पुनः एक पोस्टर राजधानी के कई चौराहों पर लग गया। पोस्टर किसने तैयार कराया है इसका कोई जिक्र नहीं पर उसमें राजद के शब्द ज्ञान पर जबरदस्त अंदाज में कटाक्ष किया गया है।

दो दिन पूर्व आयकर गोलंबर पर जो पोस्टर लगाया गया था उसमें लालू-राबड़ी के पंद्रह वर्ष बनाम नीतीश कुमार के शासन काल के पंद्रह वर्षों का जिक्र एक कोलाज के साथ दर्शाया गया था। उस पोस्टर में भी यह जिक्र नहीं था कि इसे किसने तैयार कराया है। इसकी काट में शुक्रवार को एक पोस्टर आया जो राजद की भावनाओं पर केंद्रित था। उसमें शाब्दिक अशुद्धियां थीं। उसी अशुद्धियों को शनिवार को जदयू की भावना पर केंद्रित पोस्टर के ऊपर के हिस्से में ही यह लिखा है, शाब्दिक ज्ञान नहीं, राजनैतिक ज्ञान दे रहे। राजद केंद्रित पोस्टर में नीति और टोकरी को गलत लिखा गया था। इसका जिक्र भी आज लगे पोस्टर में है।

राजद के पंद्रह वर्षों के शासनकाल को लालू प्रसाद के कार्टून के साथ दिखाते हुए शीर्षक दिया गया है, चरवाहा विद्यालय का आतंक। इसके साथ ही नीचे में लिखा है कराहता बिहार। पोस्टर के दूसरे हिस्से में संवरता बिहार शीर्षक से स्कूलों में छात्राओं की मौजूदगी, वृद्धजन पेंशन योजना, बिजली के क्षेत्र में बिहार की उपलब्धि और हर घर नल का जल योजना को तस्वीर के साथ दिखाया गया है।

लोजपा की तैयारी सभी 243 सीटों पर : चिराग पासवान

जागरण संवाददाता, शेखपुरा

▸ बिहार एनडीए में अभी सीटों के बंटवारे का फार्मूला तय नहीं हुआ

लोजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद चिराग पासवान ने कहा कि लोजपा आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर बिहार की सभी 243 सीटों पर अपनी तैयारी कर रही है। विधानसभा चुनाव के लिए बिहार एनडीए में अभी सीटों के बंटवारे का कोई फार्मूला तय नहीं हुआ है। हालांकि, यह तय है कि एनडीए के बैनर तले चुनाव लड़ा जाएगा और उसके नेता नीतीश कुमार ही रहेंगे। सांसद चिराग ने शनिवार को शेखपुरा में पत्रकार वार्ता में उक्त बातें कहीं।

उन्होंने कहा कि बंटवारे में जो सीट लोजपा को मिलेगी उस पर पार्टी अपना उम्मीदवार देगी। बाकी सीटों पर एनडीए के सहयोगी दलों के लिए हमारे लोग काम करेंगे। विधानसभा चुनाव में एनडीए क्लीन स्वीप करे, इसको लेकर लोजपा सभी सीटों अपनी तैयारी कर रही है। सीटों के बंटवारे के बारे में चिराग ने कहा अभी इसको लेकर कोई फार्मूला तय नहीं हुआ है। जल्द ही एनडीए के सभी वरिष्ठ नेता बैठकर फार्मूला तय करेंगे। राजद नेता तेजस्वी यादव की प्रस्तावित यात्रा पर सांसद ने कहा वे अपनी खोई जमीन तलाशने का काम कर रहे हैं। चिराग ने सीएए व एनपीआर को लेकर विपक्ष पर लोगों के बीच भ्रम पैदा करने का आरोप लगाया।

चिराग पासवान फाइल

न्यूज गैलरी

पीएलपीए संशोधन विधेयक को कानून बनाने पर उठाए सवाल

चंडीगढ़ : सुप्रीम कोर्ट के रोक लगाने के बावजूद पंजाब लैंड प्रिजर्वेशन एक्ट (पीएलपीए) संशोधन विधेयक को कानून बनाने पर कांग्रेस ने सवाल उठाए हैं। हरियाणा कांग्रेस की प्रधान ने सूचना का अधिकार (आरटीआइ) से मिली जानकारी का हवाला देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार वन क्षेत्रों को नष्ट कर चहेतों को फायदा पहुंचाना चाहती है। राज्यसभा सदस्य कुमारी सैलजा ने कहा कि संशोधित विधेयक पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा रोक लगाने के बावजूद राज्यपाल ने इस कानून को स्वीकृति कैसे दे दी। उन्होंने कहा कि इस कानून के जरिये नियमों को ताक पर रख कर अवैध निर्माण को मान्यता देने का रास्ता साफ किया जा रहा है। यह स्थिति तब है जब पूरे देश में सबसे कम वन क्षेत्र हरियाणा में है जो साढ़े तीन फीसद तक सिमट गया है। नया कानून लागू होने से यह और घट जाएगा। जंगल नष्ट होंगे और अवैध माइनिंग और अवैध निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। (राब्यू)

पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट के लिए प्रशासन जिम्मेदार : धनखड़

कोलकाता : बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने उत्तर 24 परगना जिले के नैहाटी में पटाखा फैक्ट्री में हुए विस्फोट के लिए राज्य प्रशासन को जिम्मेदार ठहराते हुए घटना की जांच कराए जाने की बात कही है। विस्फोट में चार लोगों की मौत हो गई थी। शनिवार को उन्होंने बयान देते हुए कहा, 'फैक्ट्री में विस्फोट में कई लोगों की मौत हुई है। मुझे इससे दुख पहुंचा है। ऐसे आरोप हैं कि अवैध रूप से चल रही उस फैक्ट्री में देसी बम बनाए जा रहे थे। इस मामले की गहन जांच होनी चाहिए। इसके लिए प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।' गौरतलब है कि शुक्रवार को उत्तर 24 परगना जिले के नैहाटी के मस्जिदपाड़ा स्थित पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट में दो महिलाओं सहित चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था। (जासं)

कांग्रेस विधायक के सुरक्षा गार्ड ने खुद मारी गोली

दंतेवाड़ा : छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में कांग्रेस विधायक देवती कर्मा के सुरक्षा में तैनात एक जवान ने शुक्रवार देर रात विधायक बंगले में खुद को गोली मारकर खुदकशी कर ली। सुबह शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। एके-47 की गोली उसके दाहिने सीने को चीरती निकल गई है। जानकारी के मुताबिक, विधायक की सुरक्षा में तैनात जवान आशोराम कश्यप ने बंगले में रात 12 .55 बजे खुद को गोली मारी। आवाज सुनकर वहां तैनात संतरी चंद्रभूषण मरकाम और अन्य लोग मौके पर पहुंचे और विधायक व अन्य को जगाया। घायल आशोराम को जिला हॉस्पिटल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। (नईदुनिया)

गहराता जा रहा पंजाब का आर्थिक संकट

बिगड़ती स्थिति ▸ 10 साल पहले कुल कर्ज 74,777 करोड़ रुपये था, अब 2,29,612 करोड़ का अनुमान

सरकार को सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय में 10,437 करोड़ का अंतर

इन्द्रप्रीत सिंह, चंडीगढ़

पंजाब के वित्त मंत्री मनप्रीत सिंह बादल ने राज्य की आर्थिक स्थिति पर बीते माह जिस तरह का पत्र मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह को लिखा है, उससे यह तो साफ है कि स्थिति हाथ से निकलती जा रही है। 10 साल पहले पंजाब पर कुल कर्ज 74,777 करोड़ रुपये था, लेकिन 2019-20 में इसके 2,29,612 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। सरकार को अपने सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय में 10,437 करोड़ रुपये का अंतर है, जिसको पूरा करने में खासी मशक्कत करनी पड़ रही है। आर्थिक संकट से निपटने के लिए मुख्यमंत्री ने वित्त विभाग और अपने अन्य सीनियर अधिकारियों की मीटिंग बुलाई। मीटिंग में सभी विभागों के खर्च को कम करने और आमदनी बढ़ाने के लिए जो आंकड़े पेश किए गए उसके अनुसार, 5,230 करोड़ रुपये के बिलों की अदायगी की जानी अभी बाकी है।

केंद्र की ओर जीएसटी के 4100 करोड़ लंबित : केंद्रीय वित्त मंत्री ने बीते माह 2,228 करोड़ रुपये की जीएसटी क्षतिपूर्ति राशि पंजाब को जारी कर दी, लेकिन दिसंबर की किश्त को मिलाकर केंद्र की ओर बकाया फिर से लगभग वहीं पहुंच गया है जहां दिसंबर के शुरू में था। केंद्र की ओर जीएसटी की कुल लंबित 4100 करोड़ रुपये की राशि में से 1400 करोड़ रुपये करों के बीच का गैप भी है। मनप्रीत बादल यह मुद्दा केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के सामने उठा चुके हैं।

इस साल देने हैं 30 हजार करोड़ : पंजाब सरकार को इस साल यानी वित्तीय वर्ष 2019-20 में मूल और ब्याज समेत कुल 30,309 करोड़ रुपये की राशि अदा करनी है।

इन मदों में सरकार को नहीं आया रेवेन्यू

केंद्रीय टैक्सों में हिस्सेदारी	1300 करोड़ रुपये
गैर सरकारी टैक्स	850 करोड़ रुपये
राज्य के स्रोतों से टैक्स	4000 करोड़ रुपये
जीएसटी	1287 करोड़ रुपये
केंद्र से मिलने वाली ग्रांट	3000 करोड़ रुपये

इस तरह बढ़ता गया कर्ज

वित्तीय वर्ष	कुल कर्ज (करोड़ रुपये)
2010-11	74,777
2011-12	83,099
2012-13	92,281
2013-14	1,02,236
2014-15	1,12,367
2015-16	1,28,836
2016-17	1,82,526
2017-18	2,07,736
2018-19	2,12,276
2019-20	2,29,612 (अनुमानित)

सरकार ने खर्च कम करने के लिए पेश किए कई सुझाव

बिजली सब्सिडी
सबसे बड़ा सुझाव बिजली सब्सिडी को रेशनलाइज करने का है क्योंकि वर्ष 2019-20 के लिए प्रस्तावित बिजली सब्सिडी 8969 करोड़ रुपये है। इसके तहत तीन सुझाव दिए गए हैं। सिर्फ छोटे व मध्यम किसानों को सब्सिडी देने से 3402 करोड़ रुपये बचेंगे। बड़ी इंडस्ट्री को सब्सिडी बंद करने से 370 करोड़ रुपये और एससी-बीसी वर्ग को 200 की बजाय सौ यूनिट मुफ्त बिजली देने से 671 करोड़ रुपये बचेंगे।

अतिरिक्त वेतन
पंजाब पुलिस के कर्मचारियों को मिलने वाली एक माह की अतिरिक्त तनख्वाह बंद की जाए। इससे 312 करोड़ रुपये बचेंगे। पुलिस कर्मचारियों के काम करने के घंटे तय नहीं हैं। ज्यादा ड्यूटी करने के कारण उन्हें एक माह की अतिरिक्त तनख्वाह मिलती है।

एनपीए
डॉक्टरों का एनपीए (नॉन प्रैक्टिस अलाउंस) बंद किया जाए। इससे 152 करोड़ रुपये बचेंगे।

भत्ता
कर्मचारियों को दिया जाने वाला मोबाइल भत्ता घटाया जाए, जिससे 45 करोड़ रुपये बचने का अनुमान है।

नए कार्य
वर्ष 2019-20 में किसी भी नए काम का आवंटन न हो।

अन्य खर्च
वेतन, पेंशन आदि को छोड़कर अन्य खर्चों में 20 फीसद कटौती की जाए। सभी विभागों की ओर से कैपिटल खर्च भी 20 फीसद कम किया जाए।

मप्र में कर्मचारी-पेंशनरों के लिए स्वास्थ्य बीमा योजना को मंजूरी

राज्य ब्यूरो, भोपाल

मध्य प्रदेश सरकार ने नए साल में राज्य के 12.55 लाख कर्मचारियों और पेंशनरों को स्वास्थ्य बीमा योजना की सौगात दी है। शनिवार को भोपाल स्थित मंत्रालय में आयोजित साल की पहली कैबिनेट बैठक में 'मुख्यमंत्री कर्मचारी स्वास्थ्य बीमा योजना' को मंजूरी दी गई। कैबिनेट ने मंत्रियों के स्वेच्छानुदान को भी दोगुना कर दिया है। मंत्रियों को अब एक करोड़ खर्च करने के अधिकार रहेंगे, पहले यह सीमा 50 लाख रुपये थी।

शनिवार को हुई कमलनाथ कैबिनेट की बैठक के बाद प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री तुलसीराम सिलावट ने बताया कि अब तय प्रीमियम देकर कर्मचारी और पेंशनर स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ ले सकेंगे। वे सामान्य बीमारी की स्थिति में पांच लाख और गंभीर बीमारी पर 10 लाख रुपये तक का इलाज निजी अस्पतालों में करा सकेंगे। 10 लाख से अधिक राशि की जरूरत होने पर स्टेट मेडिकल बोर्ड की सिफारिश जरूरी होगी। मंत्री ने बताया कि अभी तक पेंशनरों को सालाना 288 रुपये इलाज के लिए दिए जाते थे। अब वे 10 हजार रुपये तक का इलाज करा सकेंगे। योजना एक अप्रैल 2020 से लागू की जा रही है। मंत्री ने बताया कि योजना को लाभ नियमित, संविदा, पूर्ण कालिक, कार्यभारित सहित निगम-मंडल और स्वशासी संस्थाओं के कर्मचारियों को मिलेगा। उन्होंने बताया कि इसके बाद भी कुछ कैडर के कर्मचारी बच रहे होंगे, तो उन्हें भी योजना में शामिल कर लिया जाएगा।

चर्चा विफल, 3300 चिकित्सा शिक्षकों ने सौंपे इस्तीफे

नईदुनिया, भोपाल : मप्र के मुख्य सचिव एसआर मोहंती से मुलाकात के बाद भी चिकित्सा शिक्षकों की मांगों को लेकर कोई हल नहीं निकला। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री तुलसी सिलावट के साथ मप्र मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी मुख्य सचिव से मिले थे। मुख्य सचिव ने चिकित्सा शिक्षकों से कहा कि आंदोलन मत करो आपकी सभी मांगें मानी जाएंगी। इस पर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने कहा कि आश्वासन नहीं अब आदेश जारी होने के बाद ही वह आंदोलन से पीछे हटेंगे। समयबद्ध पदोन्नति व एक जनवरी 2016 से सातवें वेतनमान की मांग को लेकर मप्र के सभी 13 सरकारी मेडिकल कॉलेजों के चिकित्सा शिक्षक नौ जनवरी से काम नहीं करेंगे। सभी 3300 चिकित्सा शिक्षकों ने अपने-अपने डीन को सामूहिक इस्तीफा सौंप दिया है। मांगों को लेकर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शुक्रवार को हनुवंतिया में सीएम कमलनाथ से मुलाकात की थी।

दिलीप घोष के साथ मंच साझा करने पर तृणमूल विधायक को कारण बताओ नोटिस

जागरण संवाददाता, कोलकाता

▸ विधायक ने कहा-कार्रवाई हुई तो जनता देगी जवाब

▸ मेले के उद्घाटन में साथ दिखे थे दिलीप व समरेश दास

बंगाल भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष के साथ मंच साझा करने को लेकर तृणमूल कांग्रेस ने पूर्व मेदिनीपुर के एगरा से पार्टी विधायक समरेश दास को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुब्रत बख्शी के निर्देश पर उन्हें शोकॉज किया गया है। विधायक के साथ एगरा नगरपालिका के प्रधान शंकर बेरा और पार्षद हरिपद बेरा को भी कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। इसके अलावा एक नंबर ब्लाक से तृणमूल अध्यक्ष सिद्धेश्वर बेरा को उनके पद से हटा दिया गया है।

बताया जाता है कि शुक्रवार को एक धार्मिक व सामाजिक संगठन की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जहां प्रदेश प्रदेश इकाई के अध्यक्ष दिलीप घोष भी मौजूद थे। वहीं, कार्यक्रम के मंच पर एगरा के विधायक समरेश दास भी उपस्थित थे। मामले की जानकारी मिलने पर तृणमूल कांग्रेस की जिला इकाई हरकत में आई। आनन-फानन में विधायक समरेश दास को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया गया।

क्या खुद के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करेंगी ममता : भाजपा

बंगाल भाजपा की ओर से इस पर पलटवार करते हुए पूछा गया कि क्या मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पीएम नरेंद्र मोदी के साथ मंच साझा करने को लेकर खुद के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करेंगी? भाजपा के राज्य महासचिव सायंतन बसु ने शनिवार को कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी 11 जनवरी को कोलकाता आ रहे हैं। उनके साथ मुख्यमंत्री के मंच साझा करने की बात है, लेकिन क्या वे इसके बाद खुद के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करेंगी? गौरतलब है कि पीएम नरेंद्र मोदी 11 जनवरी को कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट की 150 वीं वर्षगांठ समारोह में शामिल होने कोलकाता आने वाले हैं। इस कार्यक्रम के लिए ममता बनर्जी को भी आमंत्रित किया गया है। मोदी 10 जनवरी को शहर में आएंगे और राजभवन में रात में ठहरेंगे। बसु ने कहा कि उक्त विधायक पर कार्रवाई करना गलत है क्योंकि मेले का उद्घाटन राजनीतिक नहीं एक सामाजिक कार्यक्रम था और आयोजकों ने क्षेत्र के सभी जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया था। उन्होंने कहा कि ममता ने अपना दिमागी संतुलन खो दिया है क्योंकि वे भाजपा से भयभीत हैं।

उधर, विवाद बढ़ता देख विधायक समरेश दास ने सफाई दी कि कार्यक्रम में भाजपा नेता आने वाले थे। उन्हें लगा कि मेला के उद्घाटन में यदि भाजपा नेता कोई राजनीतिक बात रखेंगे तो उसका खंडन करना जरूरी होगा इसलिए वे आयोजन में गए थे। उन्होंने कहा, 'मुझे कोई नोटिस नहीं मिला है और यदि मिलेगा तो मैं उसका जवाब दूंगा। यदि मेरे खिलाफ कोई कदम उठाया जाता है तो जनता इनका जवाब देगी।' मालूम हो कि एगरा तृणमूल कांग्रेस के नेता शिशिर अधिकारी के कुनबे का गढ़ है। उनके पुत्र शुभेंदु अधिकारी मुख्यमंत्री व तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी के करीबियों में से एक हैं।

विजयवर्गीय के बयान पर राजनीति तेज कांग्रेसियों ने बांटी 'कैलाश छाप' माचिस

नईदुनिया, इंदौर

▸ भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव ने शुक्रवार को दिया था विवादित बयान

▸ कांग्रेस ने की बयान पर आपराधिक प्रकरण दर्ज करने की मांग

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय के बयान पर मध्य प्रदेश में राजनीति गरमा गई है। कांग्रेस ने आक्रामक रख अख्तियार करते हुए विजयवर्गीय के बयान पर आपराधिक प्रकरण दर्ज करने की मांग की है। इंदौर में संभागायुक्त आकाश त्रिपाठी को सौंपे ज्ञापन में कांग्रेसियों ने शिकायत की है कि विजयवर्गीय शासन के खिलाफ विद्रोह भड़काकर अशांति फैलाना चाह रहे हैं। उधर, कांग्रेस के कार्यकर्ता इंदौर में दिनभर माचिस बांटते रहे। माचिस की डिबिया पर कैलाश विजयवर्गीय का फोटो छापकर लिखा गया है कि यह शहर में आग लगाने के काम आती है।

गौरतलब है कि शुक्रवार को अधिकारियों के नहीं मिलने से आक्रोशित विजयवर्गीय ने कहा था कि संभागायुक्त को समझना चाहिए कि वे जनता के नौकर हैं। अभी संघ के पदाधिकारी हैं नहीं तो आग लगा देता मैं इंदौर में। शनिवार को विधायक संजय शुक्ला, कार्यकारी शहर अध्यक्ष विनय बाकलीवाल ने संभागायुक्त आकाश त्रिपाठी को सौंपे ज्ञापन में यह भी कहा कि भाजपा महासचिव अशांति फैलाकर माफिया विरोधी मुहिम रोकने की कोशिश कर रहे हैं।

इंदौर में कांग्रेसियों ने बांटी कैलाश छाप माचिस। नईदुनिया

विजयवर्गीय ने ऐसा कोई बयान नहीं दिया : राकेश सिंह

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद राकेश सिंह ने जबलपुर में कहा कि कैलाश विजयवर्गीय ने ऐसा कोई भी बयान नहीं दिया है। मेरी उनसे बातचीत हुई है और उन्होंने ऐसी कोई भी बात कहने से इन्कार किया है।

बचपन से हिंसा और नफरत सीख रहे : दिग्विजय

विजयवर्गीय के बयान की निंदा करते हुए मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा कि कलाकारजी हताश और भटके हुए हैं। बचपन से उन्होंने हिंसा और नफरत का रास्ता सीखा है। उसी की वे राजनीति करते हैं। किसी ने कानून के खिलाफ बोला है तो उस पर कार्रवाई होना चाहिए।

रोष

कलेक्टर-एसपी से मिलीं टीमें, जताई नाराजगी, मप्र व केंद्र सरकार को सौंपी जाएगी रिपोर्ट

मप्र का कराहल रहा बंद, पंजाब व भोपाल की टीमों ने देखे ढहाए घर

नईदुनिया, श्योपुर-कराहल

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शुरू किए माफिया विरोधी अभियान के तहत राज्य के श्योपुर जिले के कराहल क्षेत्र में ढहाए गए घरों व निर्माणों को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। कुशवाह समाज ने जहां शनिवार को कराहल बंद रखा वहीं, सिख समाज के लोगों पर हुई कार्रवाई की जांच के लिए मप्र अल्पसंख्यक आयोग की टीम के अलावा पंजाब के अमृतसर से शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधन कमेटी (एसजीपीसी) की तीन सदस्यीय टीम भी पहुंची। अधिकारियों से मिलकर एसजीपीसी के सदस्यों ने नाराजगी जताई और 12 पीड़ित परिवारों को 50-50 हजार रुपये की तत्काल मदद दी।

राज्य सरकार के माफिया विरोधी अभियान को सिख समाज ने अपने खिलाफ बताते हुए कड़ा विरोध किया है। समाज ने इसके लिए सीएम कमलनाथ पर गंभीर आरोप लगाए हैं। लगातार बढ़ते विरोध के चलते मप्र अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष नियाज मुहम्मद व सदस्य अमरजीत भल्ला शनिवार को कराहल पहुंचे। वहीं, सिख समाज की शीर्ष संस्था एसजीपीसी ने भी अपना दल भेजा। दल में गुरचरण सिंह ग्रेवाल, इंदरमोहन सिंह व तेजिंदर सिंह शामिल थे। दोनों टीमों ने सेसईपुरा रेस्ट हाउस में कलेक्टर प्रतिभा पाल व एसपी नगेंद्र सिंह से दो घंटे तक चर्चा की। एसजीपीसी ने घर तोड़ने और बिना सुनवाई किए कार्रवाई करने पर नाराजगी जताई, वहीं प्रशासन ने कार्रवाई को उचित बताया। प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा के बाद दोनों टीमें कराहल के गुरुद्वारे में पहुंचीं। वहां श्योपुर के अलावा गुना, शिवपुरी, ग्वालियर से लेकर राजस्थान के कोटा व बारां जैसे शहरों से सिख समाज के सैकड़ों लोग जुटे थे।

श्योपुर में मप्र अल्पसंख्यक आयोग व एसजीपीसी की टीम को आपबीती बतातीं चरणजीत कौर। नईदुनिया

हम कार्रवाई के खिलाफ नहीं हैं। अगर कोई गलत है तो उस पर कार्रवाई का तरीका होता है। लोगों को सुना जाता है, लेकिन इसमें ऐसा नहीं हुआ। लोगों के घर तोड़कर उन्हें बेघर कर दिया। हमने प्रभावित परिवारों से बात की है। एसजीपीसी यह रिपोर्ट गृह मंत्री अमित शाह को देगी।
- गुरचरण सिंह ग्रेवाल, सदस्य, एसजीपीसी

आयोग के संज्ञान में यह मामला आया तो हमने स्वत: ही संज्ञान लिया। इस मसले पर अफसरों से बात की और प्रभावित लोगों से भी मिले। कलेक्टर-एसपी ने कहा लोगों को सुना जाएगा। उनके दस्तावेज देखे जाएंगे। जो कुछ अनुचित हुआ है, उस संबंध में हम अपनी रिपोर्ट सरकार को देंगे।
-नियाज मुहम्मद, अध्यक्ष मप्र अल्पसंख्यक आयोग

झारखंड सरकार में नहीं बढ़ेंगे कांग्रेस के मंत्री

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड में मंत्रिपरिषद में कांग्रेस को आधी सीटें मिलने से रहीं और अब इस संदर्भ में कोई नई बात नहीं होने की जानकारी भी मिल रही है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पूर्व में कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी और सीनियर नेताओं से हुई बात के आधार पर ही पूरी टीम का स्वरूप तय होगा। इसके बाद संभावना है कि कांग्रेस पांच मंत्रियों के पद को स्वीकार कर ले और आगे की रणनीति पर काम शुरू करे। पार्टी बोर्ड-निगम पर अधिक ध्यान लगा रही है। राज्य में करीब डेढ़ दर्जन बोर्ड और निगम हैं, जिसमें से झामुमो-कांग्रेस आधा-आधा बांटकर काम चला सकते हैं। कांग्रेस के नेता इसके लिए खेमेबंदी में लग गए हैं।

झारखंड में मंत्री बनने के लिए रेस में शामिल कांग्रेस नेताओं ने अब दूसरे विकल्पों पर विचार करना शुरू कर दिया है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण विकल्प हैं बोर्ड और निगमों की अध्यक्षता। इसके लिए लॉबिंग भी शुरू हो चुकी है। इसके माध्यम से कांग्रेस कुछ विधायकों के साथ-साथ उन लोगों को भी मौका देगी, जिन्होंने चुनाव नहीं लड़कर पार्टी के निर्णय के अनुरूप काम किया था। अब ऐसे नेताओं को पुरस्कार का इंतजार है और यह पुरस्कार बोर्ड-निगम के रूप में मिल सकता है। कई ऐसे नेता हैं जिन्होंने पिछले चुनाव में बेहतर प्रदर्शन के बावजूद इस चुनाव में पार्टी हित में गठबंधन का साथ दिया। ऐसे नेताओं के लिए भी पार्टी आलाकमान के पास प्रस्ताव पहुंचे हैं। इसमें प्रदेश कांग्रेस की भी महती भूमिका होगी। सूत्रों की मानें तो प्रदेश के पांच कार्यकारी अध्यक्षों में से एक-दो को बोर्ड व निगमों में जगह देने की तैयारी की जा रही है। ऐसे भी अध्यक्ष का पद रिक्त होना है, जिसके बाद टीम में बदलाव की भी पूरी संभावना है।

550 साल पहले सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानकजी का जन्म ननकाना साहिब में हुआ था। यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित है, जो सिखों का बेहद पवित्र स्थल माना जाता है।

लोकमान्य की भूमिका को आगे बढ़ा रहा जागरण : दीपक तिलक

दैनिक जागरण के प्रधान संपादक संजय गुप्त लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित

राज्य ब्यूरो, मुंबई : देश के स्वतंत्रता आंदोलन में धर्म व राष्ट्रीयता के विचारों की पैरवी लोकमान्य तिलक ने की थी। आज उनकी इसी भूमिका को दैनिक जागरण अपनी ध्येयवादी पत्रकारिता से आगे बढ़ा रहा है। यह बात पुणे में दैनिक केसरी के न्यासी संपादक दीपक तिलक ने कही।

मराठी दैनिक पत्र 'केसरी' के 139वें स्थापना दिवस पर शनिवार को दैनिक जागरण के प्रधान संपादक संजय गुप्त को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दीपक तिलक ने इस अवसर पर लोकमान्य और जागरण की पत्रकारिता की एकरूपता का उल्लेख करते हुए कहा कि इस बार पुरस्कार पर विचार शुरू हुआ तो संजय गुप्त के अलावा दूसरा नाम सामने नहीं आया। सम्मान में तिलक की प्रतिमा, शॉल, श्रीफल, मानपत्र और एक लाख रुपये नकद दिए जाते हैं। समारोह का आयोजन लोकमान्य तिलक के निवास और केसरी के कार्यालय रहे तिलकवाड़ा में किया गया।

सम्मान ग्रहण करने के बाद संजय गुप्त ने कहा, 'यह केवल एक पुरस्कार नहीं, बल्कि आशीर्वचन और बड़ी जिम्मेदारी भी है। यह पुरस्कार तिलक जी की कसौटी पर खरे उतरने का मार्गदर्शन भी है। हमें अपने आप से यह सवाल जरूर पूछते रहना होगा कि हम इस कसौटी पर खरे उतर रहे हैं या नहीं। मैं यहां स्वतंत्रता आंदोलन के नायक रहे लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जी की कर्मभूमि पर आकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। गणेश चतुर्थी और शिवाजी जयंती जैसे उत्सवों से ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनांदोलन खड़ा करने की बात हो या स्वदेशी के उपयोग और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार की, मैं राष्ट्रीयता की इसी भावभूमि पर दैनिक जागरण को भी खड़ा पाता हूं।' संजय गुप्त ने आपातकाल के दौरान जागरण की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पत्र ने पत्रकारिता धर्म से कभी समझौता नहीं किया, चाहे परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल रही हों। उन्होंने कहा कि दैनिक जागरण समूह आस्थावान, राष्ट्रभक्त और भारतीय मूल्यों का संवाहक है, जिसके संस्कारों में सनातन भारतीयता है।

दैनिक जागरण के प्रधान संपादक संजय गुप्त को पुणे में लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें दैनिक केसरी के न्यासी संपादक दीपक तिलक (दाएं) और महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बालासाहब थोरात ने सम्मानित किया ● प्रेट्र

झारखंड सरकार को लागू करना ही होगा सीएए : भाजपा

राज्य ब्यूरो, रांची

- सीएए पर भ्रम को दूर करने के लिए भाजपा चलाएगी अभियान

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लेकर देश भर में छिड़ी बहस के बीच भाजपा ने कहा कि राज्य सरकार को झारखंड में सीएए को लागू करना ही होगा। शनिवार को भाजपा प्रदेश महामंत्री दीपक प्रकाश ने कहा कि यह संसद के दोनों सदनों से पारित हुआ है। अब यह भारत के कानून का हिस्सा बन चुका है। राज्य सरकारें इससे पीछे नहीं हट सकतीं। झारखंड या देश के अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री गैर संवैधानिक काम नहीं कर सकते।

दीपक प्रकाश ने कहा कि सीएए का विरोध करना दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसा करनेवाले संविधान का अपमान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा ने नागरिकता संशोधन अधिनियम की सच्चाई को बताने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान प्रारम्भ किया है। विपक्ष द्वारा फैलाए जा रहे झूठ और भ्रम को दूर करने के लिए पार्टी ने जन-जन तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जाने का निर्णय लिया है।

आलमगीर आलम बने झारखंड के संसदीय कार्य मंत्री

राज्य ब्यूरो, रांची : झारखंड के कैबिनेट मंत्री आलमगीर आलम को शनिवार को संसदीय कार्य विभाग के मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई। झारखंड विधानसभा के छह जनवरी से शुरू होनेवाले विशेष सत्र शुरू होने से पहले संसदीय कार्य विभाग की जिम्मेदारी किसी को देना आवश्यक था। इस कारण इसकी अधिसूचना शनिवार को जारी कर दी गई है। झारखंड में मुख्यमंत्री के अलावा तीन मंत्रियों ने पद की शपथ ली है, लेकिन विभागों का बंटवारा अभी नहीं हुआ है। ऐसे में सभी विभाग मुख्यमंत्री के पास ही हैं। माना जा रहा है कि 14 जनवरी के बाद मंत्रिमंडल का विस्तार और विभागों का बंटवारा होगा।

न्यूज गैलरी

भारतीय पुलिस पर इमरान के ट्वीट की कड़ी आलोचना

नई दिल्ली : पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने बांग्लादेश में पुलिस कार्रवाई का एक वीडियो भारतीय बताकर पोस्ट कर दिया था जिसके बाद वह जमकर ट्रोल हुए थे। इमरान खान ने शनिवार को एक तस्वीर भी पोस्ट की जिसमें नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ हिंसा के दौरान एक वाहन जल रहा है और भारतीय सुरक्षा बल वहां तैनात हैं। इमरान ने लिखा, 'भारतीय पुलिस की बर्बरता निचले स्तर पर पहुंच गई है क्योंकि फासीवादी मोदी सरकार के नस्ली सफाये के एजेंडे के तहत भारत में मुस्लिमों का नरसंहार जारी है।' इस पर भाजपा नेता शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट किया, 'पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लगातार भारत में मुस्लिमों पर अत्याचार की अफवाहें फैला रहे हैं जबकि शुक्रवार को ही दुनिया ने उनके देश में अल्पसंख्यकों की स्थिति देखी है। मैं अंतरराष्ट्रीय समुदाय से इन बदतर होते हालात पर संज्ञान लेने का अनुरोध करता हूं।' (आइएएनएस)

राहुल गांधी सीएए पर 10 लाइन बोलकर तो दिखाएं : नड्डा

नई दिल्ली : नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लेकर हो रहे विरोध प्रदर्शन के बीच भाजपा ने भी विपक्षी दलों के खिलाफ आक्रामक रवैया अख्तियार कर लिया है। शनिवार को गुवाहाटी में भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को सीएए के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है। उन्होंने कांग्रेस नेता को सीएए पर 10 लाइन बोलने की चुनौती तक दे डाली। भाजपा के बूथ अध्यक्षों की रैली में नड्डा ने कहा कि राहुल गांधी सीएए के बारे में 10 लाइन और वह इस कानून का क्यों विरोध कर रहे हैं, इसके बारे में दो लाइन तो बोलकर दिखाएं। नड्डा ने कहा कि राहुल गांधी को कुछ भी पता नहीं है। वह सिर्फ वोट बैंक की राजनीति कर रहे हैं। (एजेंसियां)

एनआइए ने 532 किलो हेरोइन मामले में एक और गिरफ्तार

मोहाली : एनआइए ने अटारी बॉर्डर से बीते साल पकड़ी गई 532 किलो हेरोइन मामले में एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। शुक्रवार रात अमित गंभीर को एनआइए की टीम ने अमृतसर से गिरफ्तार किया। उस पर ड्रग मनी ट्रांजेक्शन का आरोप है। उसे शनिवार को मोहाली की एनआइए कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने मामले की सुनवाई के बाद अमित का दस जनवरी तक पुलिस रिमांड दिया है। उल्लेखनीय है कि 29 जून 2019 को इंटेग्रेटेड चेक पोस्ट, अटारी पर अमृतसर के नमक व्यापारी गुरपिंदर सिंह और जम्मू-कश्मीर के हंदवाड़ा के तारिक अहमद को पाकिस्तान से आई 532 किलो हेरोइन व 52 किलो नशीले पदार्थ सहित गिरफ्तार किया था। (जासं)

पाक ने नहीं दी नगर कीर्तन निकालने की अनुमति

ननकाना साहिब पर हमला ▶ मुस्लिम नेताओं के प्रतिनिधिमंडल के साथ खालिस्तान समर्थक नेता पहुंचा गुरुद्वारे

पाक की सफाई, गुरुद्वारे को न छुआ गया न नुकसान पहुंचाया गया

इस्लामाबाद, एजेंसियां : पाकिस्तान का दोहरा चरित्र एक बार फिर सामने आ गया, जब उसने गुरुद्वारा श्री ननकाना साहिब पर शुक्रवार को भीड़ के हमले के बाद शनिवार को गुरुद्वारे से सिख समुदाय को नगर कीर्तन निकालने की अनुमति नहीं दी। हालांकि, पाकिस्तान ने शहर में तनाव को इसका कारण बताया है।

उधर, शनिवार को मुस्लिम नेताओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने गुरुद्वारा ननकाना साहिब का दौरा भी किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने सिख समुदाय के लोगों से बातचीत की और गुरुद्वारे पर भीड़ के हमले की निंदा की। उनके साथ खालिस्तान समर्थक नेता गोपाल चावला भी था। हालांकि, मुस्लिम नेताओं के साथ खालिस्तान समर्थक नेताओं की मौजूदगी पर पाक ने कुछ नहीं कहा। प्रतिनिधिमंडल में उसकी उपस्थिति से इस पूरे प्रकरण में पाकिस्तान के नापाक इरादे काफी हद तक साफ हो जाते हैं।

हालांकि पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान जारी कर उन खबरों को खारिज किया जिनमें कहा गया था कि गुरुद्वारा ननकाना साहिब को भीड़ ने हमला करके अपवित्र कर दिया है।

पाकिस्तान में शनिवार को सुनसान पड़े ननकाना साहिब गुरुद्वारा का दृश्य। यहां भीड़ ने हमला कर दिया था। एएनआइ

पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय की ओर कहा गया कि गुरु नानक देव जी के जन्म स्थान को न किसी ने छुआ है और न ही नुकसान पहुंचाया गया है। मंत्रालय ने कहा, पंजाब प्रांत के अधिकारियों ने सूचित किया है कि शुक्रवार को ननकाना साहिब शहर में मुस्लिमों के दो गुटों में झड़प हुई थी। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने बताया कि एक चाय की दुकान पर एक मामूली घटना को लेकर बहस हो गई थी और जिला प्रशासन ने तुरंत हस्तक्षेप करके आरोपित को गिरफ्तार कर लिया था। मंत्रालय के बयान के मुताबिक, घटना को सांप्रदायिक मामले का रूप देना पूरी तरह प्रेरित है। पाकिस्तान सरकार कानून-व्यवस्था बनाए रखने और लोगों खासकर अल्पसंख्यकों को सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

जांच के लिए पाक जाएगी एसजीपीसी की टीम

जागरण संवाददाता, अमृतसर

- एसजीपीसी अध्यक्ष का विदेश मंत्री को पत्र, कहा- सिखों को निशाना बनाने वालों पर हो सख्त कार्रवाई
- पाक के भारत स्थित राजदूत को भी पत्र, पाकिस्तानी पंजाब के राज्यपाल ने दिया सुरक्षा का भरोसा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा श्री ननकाना साहिब पर उग्र कट्टरपंथी भीड़ के हमले के मामले की अपने स्तर पर जांच करेगी। इसके लिए एसजीपीसी की चार सदस्यों वाली टीम अगले हफ्ते पाकिस्तान जाएगी।

इस टीम में एसजीपीसी के अध्यक्ष गोबिंद सिंह लोंगोवाल, एसजीपीसी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजिंदर सिंह मेहता, मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंह और एसजीपीसी सदस्य सुरजीत सिंह भिट्टेवड्ड शामिल हैं। श्री हरिमंदिर साहिब के एडिशनल मैनेजर राजिंदर सिंह रूबी भारत में इसके को-ऑर्डिनेटर होंगे। टीम को पाकिस्तान भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस बीच शनिवार को पंजाब में इस घटना के विरोध में जमकर प्रदर्शन हुआ।

लोंगोवाल ने भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर को पत्र लिख कर कहा है कि पाकिस्तान में हुई घटना से सारे विश्व में रहने वाले सिखों में भारी रोष है। इसलिए सिखों को निशाना बनाने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) के मुख्य सचिव डॉ. रूप सिंह ने बताया कि पाकिस्तानी पंजाब के राज्यपाल चौधरी मुहम्मद सरवर के साथ उनकी फोन पर बातचीत हुई है। उन्होंने सिखों की हिफाजत और गुरु घरों की मर्यादा बहाल रखने के लिए कहा गया है। राज्यपाल ने भरोसा दिया है कि सरकार सिखों को कोई मुश्किल नहीं आने देगी।

पंजाब में भारी विरोध :

पंजाब में इस घटना का भारी विरोध हो रहा है। शनिवार को शिरोमणि अकाली दल और भाजपा कार्यकर्ताओं ने जगह-जगह पाक पीएम इमरान खान के पुतले जलाए। पंजाब के सभी जिलों में लोगों ने प्रदर्शन किया। अमृतसर में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्वेत मलिक के नेतृत्व में लोगों ने नारेबाजी की। शिअद-भाजपा के कई विधायक और बड़े नेता भी प्रदर्शन में शामिल हुए।

हमला करने वाले पागल : बादल

पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने कहा कि धार्मिक स्थानों का तो हर कोई सम्मान करता है। पागल लोग ही धार्मिक स्थानों पर हमला करते हैं। यह बहुत दुखदाई घटना है। केंद्र सरकार तुरंत इस मामले में पाक सरकार से तालमेल करे और अमन-शांति बहाल करे। सिखों की सुरक्षा यकीनी बनाई जाए।

पीएम पर दबाव बनाएं हरसिमरत

आम आदमी पार्टी के विपक्ष के नेता एडवोकेट हरपाल सिंह चीमा ने श्री ननकाना साहिब पर हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर दबाव डालना चाहिए। पाक में सिखों की सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए।

अहम मुद्दों पर चर्चा के लिए दिनभर चला संघ की बैठकों का दौर

नईदुनिया, इंदौर : इंदौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तीन दिवसीय बैठक से पहले शनिवार को संघ पदाधिकारियों ने दिनभर हुई आंतरिक बैठकों में संघ से जुड़े विषयों और देश के अलग-अलग प्रांतों के ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत और सरकार्यवाह भय्याजी जोशी के साथ दत्तात्रेय होसबोले, मनमोहन वैद्य सहित अन्य प्रमुख पदाधिकारियों ने संघ द्वारा संचालित होने वाली सालाना गतिविधियों के क्रम और समय को लेकर चर्चा की। साथ ही वार्षिक कैलेंडर तैयार कराया।

सूत्रों के मुताबिक, इस वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का फोकस सोशल इंजीनियरिंग और नागरिकता संशोधन कानून को लेकर जनता के बीच जन जागरण पर रहेगा। इसके अलावा पूर्वोत्तर राज्यों की समस्या को लेकर रविवार को पदाधिकारियों और विषय विशेषज्ञों के बीच मंथन होगा।

गौरतलब है कि बीते दो दिन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत और भय्याजी जोशी शहर के चुनिंदा आयोजनों में शामिल हुए और गणमान्य नागरिकों से मुलाकात भी की, लेकिन शनिवार को वे बैठक स्थल पर ही रहे। रविवार को अलग-अलग प्रांतों से आए पदाधिकारियों सहित 35 से 40 लोग बैठकों में शामिल होंगे। मालूम हो, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संघ की तीन दिवसीय बैठक पांच जनवरी से शुरू होगी।

जिनके साथ अन्याय हुआ, उनके साथ खड़े हैं हम : प्रियंका

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी शनिवार को मेरठ में नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में हुई हिंसा में मारे गए लोगों के स्वजनों से मुलाकात की। इस मौके पर एक बच्चे को दुलारती प्रियंका। मदन मौर्य

जेएनएन मेरठ

कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका वाड्रा गुपचुप तरीके से शनिवार सुबह मुजफ्फरनगर पहुंच गईं। मौलाना असद रजा हुसैन से मिलने के बाद वह हिंसा में मारे गए नूर मोहम्मद के घर पहुंचीं और पत्नी को ढांढ़स बंधाया। प्रियंका ने कहा कि पुलिस का काम जनता को सुरक्षा व न्याय दिलाना है लेकिन, मुजफ्फरनगर में इसका उल्टा हुआ है। कहा कि जिसके साथ भी अन्याय हुआ है, हम उनके साथ खड़े हैं। प्रियंका ने बताया कि उन्होंने राज्यपाल को पत्र लिखकर 20 दिसंबर की घटना की पूरी जानकारी दी है।

कांग्रेस नेता व पूर्व राज्यसभा सदस्य हरेंद्र मलिक के आवास पर प्रियंका वाड्रा ने कहा कि उनकी मुलाकात घायल मौलाना असद रजा हुसैनी से हुई है। मौलाना 20 दिसंबर को अपने मदरसे में बैठे थे, तभी पुलिस भीतर घुस आई और उन्हें बेरहमी से पीटा। वह उस युवती से भी मिलीं जिसे पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया था। वह उपद्रव में मारे गए नूर मोहम्मद की पत्नी से भी मिलीं। प्रियंका मुजफ्फरनगर के बाद मेरठ पहुंचीं। मेरठ में हुई हिंसा के दौरान मारे गए छह में से पांच लोगों के स्वजनों से मुलाकात की। उधर, दादरी चेकपोस्ट पर सीओ जितेंद्र सरगम ने शनिवार को प्रियंका को धारा 144 के उल्लंघन का नोटिस तामील कराया। मेरठ में परतापुर के निकट साईंधाम कालोनी में एनएसयूआइ कार्यकर्ता के घर उपद्रव में मारे गए लोगों के स्वजनों से मुलाकात की। यहां कांग्रेसियों में धक्का मुक्की भी हुई।

हिंसा में हताहतों के स्वजन को भेजा पत्र

सीएए के विरोध में फीरोजाबाद में 20 दिसंबर को हुए उपद्रव और हिंसा में मारे गए लोगों के स्वजनों को कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका वाड्रा ने पत्र भेजा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि अपने आपको अकेला न समझें, हौसला न खोएं। हम आपके साथ हैं। वरिष्ठ नेता राशिद अल्वी के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने हताहत उपद्रवियों के स्वजनों से शुक्रवार को गुपचुप मुलाकात कर उन्हें यह पत्र सौंपा। प्रदेश के अन्य जिलों की तरह सीएए के विरोध में फीरोजाबाद में भी हिंसा हुई थी। आगजनी और तोड़फोड़ में लाखों की संपत्ति के नुकसान के साथ ही छह युवकों की मौत हुई थी।

दिल्ली के दंगों में शामिल थे 25 से ज्यादा बांग्लादेशी घुसपैठिए

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- जामिया नगर, एनएफसी, दरियागंज, सीलमपुर, जाफराबाद व सीमापुरी में प्रदर्शन के दौरान हुई थी हिंसा
- एसआइटी कर रही सभी 10 मामलों की जांच, पीएफआइ के कार्यकर्ताओं से होगी पूछताछ

पिछले साल दिसंबर में दिल्ली में सीएए और एनआरसी के विरोध में हुई हिंसा में 25 से ज्यादा बांग्लादेशी घुसपैठिए शामिल थे। प्रदर्शनकारियों को दंगा करने के लिए उकसाने में इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया का नाम भी सामने आया है। जामिया नगर में दंगे के पहले दिन ही पुलिस को पीएफआइ के बारे में पता लग गया था। दंगों की जांच कर रही क्राइम ब्रांच की एसआइटी का कहना है कि कानून के विरोध में 14 से 20 दिसंबर के बीच जामिया, जाफराबाद, सीलमपुर और दरियागंज में इस्लामिक कट्टरपंथियों ने अवैध रूप से भारत में घुसे बांग्लादेशियों की मदद से माहौल बिगाड़ा था। पुलिस पर पथराव, तोड़फोड़ और आगजनी में स्थानीय लोगों की भीड़ में बड़ी संख्या में अवैध बांग्लादेशी शामिल थे। दंगे के मामले में कुल 10 केस दर्ज किए गए हैं।

अभी इस मामले को लेकर राजनीति किए जाने से एसआइटी किसी नए आरोपित को गिरफ्तार नहीं कर रही है। करीब 70 की संख्या में दंगाई पहले गिरफ्तार किए जा चुके हैं। माहौल शांत हो जाने के बाद एसआइटी दंगे में शामिल अन्य आरोपितों व उकसाने में शामिल लोगों को गिरफ्तार करेगी। अभी एसआइटी दंगा ग्रस्त इलाकों से हासिल हुए सीसीटीवी फुटेज और खुफिया सूचना के आधार दंगाइयों की पहचान में जुटी है। एसआइटी ने दिल्ली हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को पत्र लिख एक क्लेम कमिश्नर भी नियुक्त करने का अनुरोध किया है ताकि वे दंगे के दौरान तोड़फोड़ करने वालों पर जिम्मेदारी तय कर हर्जाना वसूला जा सके।

दिल्ली में बड़ी संख्या में बांग्लादेशी घुसपैठिए : क्राइम ब्रांच के मुताबिक उत्तर-पूर्वी जिले व दक्षिण-पूर्वी जिले में बड़ी संख्या में अवैध बांग्लादेशी रहते हैं। हमेशा से शक रहा है कि देश में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों का पाकिस्तानी सुरक्षा एजेंसी आइएसआइ से गठजोड़ है।

मौसम

उत्तराखंड व हिमाचल के उच्च पहाड़ी इलाकों में फिर शुरू हुई बर्फबारी, अधिकतम और न्यूनतम तापमान में होगी दो से चार डिग्री तक की गिरावट

दिल्ली में धूप ने दी राहत, दो दिन बाद बारिश से फिर बढ़ेगी ठंड

जेएनएन, नई दिल्ली : दिल्ली में शनिवार को दिनभर धूप निकली जिसकी वजह से ठंड से लोगों को राहत मिली। अधिकतम तापमान सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस ज्यादा पहुंच गया है।

वहीं, न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री सेल्सियस ज्यादा 8 डिग्री दर्ज हुआ। मौसम विभाग के अनुसार रविवार के दिन बादल छाने के साथ घना कोहरा छा सकता है। इसके अलावा 7 से 8 जनवरी के दौरान दिल्ली और आस पास के इलाकों में बारिश होने की संभावना है।

तापमान में फिर से होगी गिरावट : मौसम विज्ञानी कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि उत्तर भारत में छह जनवरी को नया पश्चिमी विक्षोभ पैदा होगा। इससे मौसम में परिवर्तन आएगा। वहीं, क्योंकि उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों में पश्चिमी विक्षोभ के कारण बर्फबारी शुरू हो गई है। ऐसे में सात से 10 जनवरी के दौरान अधिकतम व न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज हो सकती है।

पहाड़ों पर फिर बर्फबारी, शीतलहर शुरू: उत्तराखंड और हिमाचल में शनिवार को मौसम की करवट ने लोगों को चौंका दिया। मौसम विभाग ने दो दिनों के बाद राज्य में बारिश और बर्फबारी का अनुमान जताया था, लेकिन दोनों ही राज्यों के उच्च इलाकों में सुबह से ही बर्फबारी होने लगी। यह सिलसिला पूरे दिन रुक-रुक कर चलता रहा। इसके चलते दोनों राज्यों के मैदानी इलाके भी शीतलहर में चपेट में है।

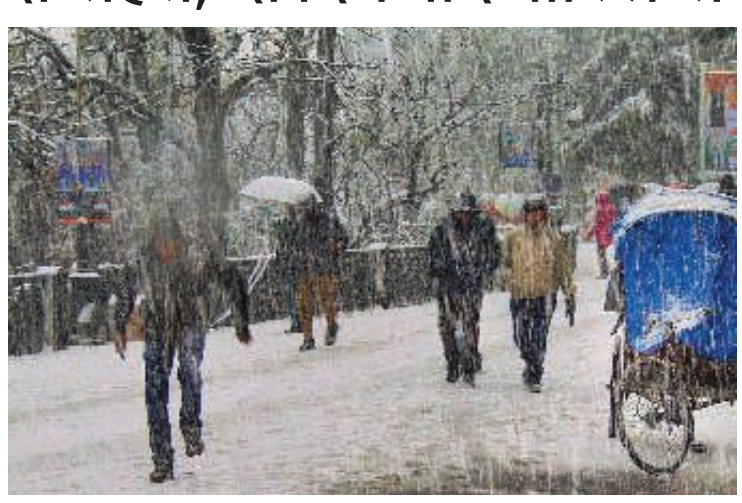

पहाड़ों की रानी मसूरी में शनिवार को दोपहर बाद बर्फबारी शुरू हो गई। इससे पहाड़ी एवं मैदानी इलाके शीतलहर की चपेट में आ गए। मालरोड पर बर्फबारी के बीच पर्यटक। जागरण

बर्फीली हवाओं ने छुड़ाई कंपकंपी

हिमाचल में भी बर्फीली हवाओं ने मैदानी इलाकों में दिनभर कंपकंपी छुड़ाई। मसूरी में नए साल का पहला हिमपात हुआ। वहीं, हिमाचल के शिमला, कुफरी, नारकंडा व मनाली में बर्फबारी हुई। इससे उच्च पहाड़ी इलाके बर्फ से लकदक हो गए हैं।

ठंड में मिली राहत

कश्मीर में पिछले कई दिनों से चल रहे शुष्क मौसम को शनिवार की बारिश और बर्फबारी ने पूरी तरह भिगो दिया। इससे न्यूनतम पारे में भी काफी सुधार हुआ और भीषण ठंड में लोगों को मामूली राहत भी मिली। मौसम विभाग ने रविवार और सोमवार को भी बारिश और बर्फबारी के आसार जताए हैं। इससे ठंड भी बढ़ेगी।

पूरी जानकारी के बिना सीएए पर टिप्पणी नहीं करूंगा : कोहली

- खुद को विवादों में नहीं घसीटना चाहते भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान
- नोटबंदी पर दिए बयान को लेकर कोहली को आलोचना झेलनी पड़ी थी

गुवाहाटी, प्रेट्र : भारतीय कप्तान विराट कोहली ने शनिवार को नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) पर बिना किसी पूर्ण जानकारी के टिप्पणी करने से इन्कार कर दिया। कोहली ने 2016 में नोटबंदी को 'भारतीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण कदम' करार दिया था जिसके लिए उन्हें आलोचना भी झेलनी पड़ी थी और लोगों ने इस विषय पर उनकी जानकारी को लेकर सवाल उठाए थे। सीएए के खिलाफ गुवाहाटी में बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन हुए थे और ऐसे में भारतीय कप्तान से जब इस संबंध में सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब देने में बेहद सतर्कता बरती।

कोहली ने कहा, 'इस मसले पर मैं गैरजिम्मदार नहीं होना चाहता और ऐसा कुछ नहीं कहना चाहता हूं जिस पर दोनों पक्षों की आम राय न हो। मुझे इसके बारे में संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए कि इसका क्या मतलब है और इसको लेकर क्या चल रहा है और इसी के बाद मुझे इस पर बयान देने के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।'

कप्तान ने स्पष्ट किया कि वह जिस विषय के बारे में ज्यादा नहीं जानते उस पर टिप्पणी करके खुद को विवादों में नहीं घसीटना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'क्योंकि आप एक बात कह सकते हैं और उसके बाद कोई दूसरी बात कह सकता है। इसलिए मैं ऐसी किसी चीज में नहीं पड़ना चाहता जिसकी मुझे पूर्ण जानकारी नहीं हो और इस टिप्पणी करना मेरे लिहाज से जिम्मेदारी भरा नहीं होगा।' कोहली हालांकि सुरक्षा व्यवस्था से संतुष्ट हैं। भारत को श्रीलंका के खिलाफ यहां रविवार को सीरीज का पहला टी-20 मैच खेलना है।

5.80 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है बिहार के चनपटिया में। यह ठगी चर्चित टीवी शो कौन बनेगा करोड़पति में लॉटरी फंसने का झांसा देकर की गई है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 जनवरी 2020

न्यूज गैलरी

बंगाल में एक लीटर सर्प विष के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

कोलकाता : बंगाल के मालदा जिले से पुलिस ने करीब एक लीटर सर्प विष के साथ तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक आलोक राजोरिया ने शनिवार को बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई हुए पुलिस टीम ने शुक्रवार रात मालदा के एक होटल में छापामारी कर तस्करों के पास से सर्प विष जब्त किया। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत मामला दर्ज कर सर्प विष के स्रोत और गंतव्य का पता लगाने की कोशिश की जा रही है। तीनों आरोपितों को शनिवार को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें चार दिनों की पुलिस कस्टडी में भेज दिया गया। (जेएनएन)

भारती सिंह, रवीना टंडन व फराह खान पर एक और केस

रूपनगर : ईसाई धर्म के खिलाफ कथित रूप से अपशब्द कहने के आरोपों का सामना कर रहीं अभिनेत्री रवीना टंडन, टीवी कलाकार भारती सिंह और फिल्म निर्माता फराह खान के खिलाफ पंजाब में एक और मामला दर्ज हो गया है। रूपनगर पुलिस ने यह कार्रवाई डॉ. चरण मसीह के बयान पर की है। तीनों पर एक चैनल पर शो के दौरान हलालुईया शब्द को गलत उच्चारण करके ईसाई भाईचारे की धार्मिक भावना भड़काने के आरोप लगे हैं। रूपनगर में 28 दिसंबर को ऑल इंडिया क्रिश्चयन वेलफेयर फ्रंट की तरफ से तीनों के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया गया था और एसएसपी स्वपन शर्मा से कार्रवाई की अपील की गई थी। (जासं)

श्रीनगर में सुरक्षाबलों पर ग्रेनेड हमला, दो घायल

वारदात ▸ दो वाहन भी क्षतिग्रस्त, नए साल में पहला आतंकी हमला

श्रीनगर में बढ़ाई गई सुरक्षा, आतंकियों की तलाश में अभियान चलाया

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

आतंकियों ने शनिवार को श्रीनगर के डाउन-टाउन में सुरक्षाबलों के एक दल पर ग्रेनेड हमला किया। इसमें दो नागरिक घायल हो गए और दो निजी वाहनों को भी क्षति पहुंची। बता दें कि 2020 में हुआ यह पहला आतंकी ग्रेनेड हमला है। फिलहाल, किसी भी आतंकी संगठन ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। आतंकी हमले के बाद श्रीनगर में सुरक्षा बढ़ाने के साथ आतंकियों की तलाश शुरू कर दी गई है।

जानकारी के अनुसार, दोपहर करीब 12 बजे डाउन-टाउन के कावडरा इलाके में आतंकियों ने सीआरपीएफ के जवानों के एक वाहन को निशाना बनाते हुए ग्रेनेड हमला किया। ग्रेनेड निशाना चूक गया और सीआरपीएफ के वाहन से कुछ दूरी पर सड़क के किनारे एक जोरदार धमाके के साथ फटा। धमाका के बाद मची अफरा-तफरी के बीच आतंकी भी वहां से भाग निकले।

सीआरपीएफ और पुलिस के जवानों ने तुरंत पूरे इलाके को घेरते हुए वहां जख्मी पड़े दो लोगों को उपचार के लिए निकटवर्ती अस्पताल पहुंचाया। इनमें से 16 वर्षीय किशोर की हालत को देखते हुए उसे भर्ती कर लिया गया, जबकि दूसरे को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। धमाके में दो निजी वाहनों को भी क्षति पहुंची है।

बढ़ाई इलाके की सुरक्षा : इस बीच, पुलिस ने श्रीनगर शहर के भीतरी और बाहरी इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी है। विभिन्न सड़कों पर नाके स्थापित किए गए हैं, जहां से गुजरने वाले वाहनों और संदिग्ध तत्वों की छानबीन की जा रही है। हालांकि देर शाम तक किसी आतंकी का सुराग नहीं मिला था।

श्रीनगर के कावडारा में शनिवार को ग्रेनेड हमले के बाद चौकसी करते सुरक्षाबलों के जवान। आतंकियों ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कर्मियों को निशाना बनाकर ग्रेनेड फेंका था। इस हमले में 16 वर्षीय किशोर घायल हो गया। प्रेट्र

माहौल बिगाड़ना चाहते हैं आतंकी

आइजी सीआरपीएफ रविदीप साही ने कहा कि आतंकी इस समय हालात बिगाड़ने की हर संभव कोशिश कर रहे हैं। इस हमले का निशाना सीआरपीएफ जवान थे। हमले में लिप्त आतंकियों को पकड़ने के लिए हमने पुलिस के साथ मिलकर एक अभियान चलाया है।

निसार चार दिन पहले बच निकला था

प्रथम पृष्ठ से आगे

वहीं, उसका पाकिस्तानी साथ मुठभेड़ में मारा गया था। निसार का एक ओवरग्राउंड वर्कर रईस अहमद लोन भी कुछ ही दिन पहले पकड़ा गया था। सूत्रों ने बताया कि निसार चार से पांच दिन पहले गांदरबल में भी सुरक्षाबलों की घेराबंदी से बच निकला था। सूत्रों ने बताया कि निसार ने सुरक्षाबलों को देखते ही भागने का प्रयास किया था, लेकिन इस बार वह कामयाब नहीं हुआ। श्रीनगर में उसके साथ आए उसके अन्य साथियों की तलाश की जा रही है। शुरुआती पूछताछ में उसने गांदरबल, बांडीपोरा और श्रीनगर में सक्रिय लश्कर के कुछ आतंकियों और छह ओवरग्राउंड वर्करों के नाम व उनके नेटवर्क के बारे में कई अहम जानकारियां दी हैं।

लश्कर के डिवीजनल कमांडर बिल्लू का है करीबी : राज्य पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने निसार अहमद डार की गिरफ्तारी की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि वह श्रीनगर में किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने के मकसद से आया था। वह बांडीपोरा और उसके साथ सटे इलाकों में सक्रिय लश्कर के दुर्दांत डिवीजनल कमांडर सलीम अहमद पर्रे उर्फ बिल्लू के करीबियों में से एक है। उसके खिलाफ वर्ष 2016 से लेकर अब तक करीब आठ एफआइआर दर्ज हैं। वह दो बार पीएसए के तहत भी जेल में बंद रह चुका है।

पाकिस्तानी सेना की गोलाबारी में युवती घायल, लोगों में दहशत

जागरण संवाददाता, राजौरी : नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर पाकिस्तान की नापाक हरकतें जारी हैं। पाकिस्तानी सेना भारतीय चौकियों के साथ रिहायशी क्षेत्रों को भी निशाना बना रही है। शनिवार को भी पाक सेना ने राजौरी के उपजिला नौशहरा के पुखर्नी सेक्टर में गोलाबारी की, जिसमें एक युवती घायल हो गई।

पाकिस्तानी सेना ने शनिवार को पुखर्नी सेक्टर में गोलीबारी की। इस दौरान एक गोली दीवार से टकराने के बाद कौसर अख्तर पुत्री अब्दुल रशीद को लगी और वह मामूली रूप से घायल हो गई। उसी समय परिवार के सदस्य और आसपास के लोग कौसर को लेकर उप जिला अस्पताल नौशहरा पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे घर भेज दिया।

कालाकोट के जंगलों में चलाया सेटेलाइट फोन, तलाश तेज : पिछले पांच दिन से आतंकियों की तलाश में जंगलों का चप्पा-चप्पा खंगाल रहे सुरक्षाबलों को शनिवार अहम सुराग मिला। सूत्रों के अनुसार, पिछले सप्ताह सीमा पार से घुसपैठ कर भारतीय क्षेत्र में घुसे तीन से चार आतंकी रास्ता भटक चुके हैं। इन आतंकियों ने रास्ते की तलाश में कालाकोट के जंगलों में सेटेलाइट फोन चलाया, जिसकी भनक सुरक्षाबलों को लग गई। अब कालाकोट के चिंगस, डगयेना और खड़ाडियां के जंगलों में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान शुरू किया गया है।

जहां 16 दिन पहले पकड़ी गई हेरोइन, वहां पहुंचा पाक का ड्रोन

नवीन राजपूत, अमृतसर : सितंबर 2019 में ड्रोन के जरिए हथियार भेजने के बाद अब कोहरे का फायदा उठाकर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ ने एक बार फिर ड्रोन के जरिए भारतीय सीमा में घुसपैठ की कोशिश की है। भारतीय सीमा में ड्रोन भेजे जाने की ताजा घटना शुक्रवार मध्यरात्रि की है। भारत-पाकिस्तान सीमा के साथ लगते जिला अमृतसर के देहात क्षेत्र के गांव छन्ना घोगा के साथ लगती कंटीली तार पर ड्रोन की आवाज सुनी गई। यह गांव पहले ही नशा तस्करी के लिए बदनाम है और इसी गांव से पुलिस ने विगत 19 दिसंबर को 15 किलो हेरोइन के साथ पांच तस्करों को गिरफ्तार भी किया था। आशंका जताई गई है कि या तो ड्रोन द्वारा हेरोइन सप्लाई दी जानी थी या हथियार गिराए जाने थे। खुफिया एजेंसियों द्वारा इस घटना की रिपोर्ट केंद्र और पंजाब सरकार को भेज दी गई है। हालांकि बॉर्डर जोन के आइजी सुरिंदरपाल परमार ने इस मामले में कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया। सूत्रों के अनुसार, शुक्रवार मध्यरात्रि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ ने ड्रोन को भारतीय सीमा में प्रवेश करवाया। हल्के कोहरे में ड्रोन की आवाज से भारत-पाक सीमा पर सन्नाटा टूट गया।

पुराने तस्करों का रिकार्ड खंगालने में जुटी पुलिस : सूचना के बाद अमृतसर देहाती पुलिस ने छन्ना घोगा और दुज्जोवाली गांव के पुराने तस्करों का रिकॉर्ड खंगालना शुरू कर दिया है। इस क्षेत्र में कितने तस्करों पर मामले दर्ज हैं, कितने जेल में बंद हैं, कितने जमानत पर या सजा पूरी करके छूट चुके हैं आदि की जानकारी जुटाई जा रही है।

कोटा में बच्चे के साथ अब मां की भी मौत

जागरण संवाददाता, जयपुर

राजस्थान के कोटा स्थित जेकेलोन अस्पताल में शनिवार को एक और बच्चे सहित उसकी मां की भी मौत हो गई। जिस सात माह के बच्चे की मौत हुई, उसे दो जनवरी को बारां के अस्पताल से कोटा जेकेलोन अस्पताल रेफर किया गया था। उसे निमोनिया हुआ था। परिजनों के अनुसार, बच्चे सहित मां को भी जेकेलोन अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

आरोप है कि महिला को बारां के सरकारी अस्पताल में गलत ब्लड चढ़ाया गया था। वहां से लाकर उसे बच्चे सहित जेकेलोन अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जानकारी के अनुसार, जेकेलोन अस्पताल प्रशासन को गलत ब्लड चढ़ाए जाने की सूचना थी, लेकिन फिर भी इलाज में लापरवाही बरती गई। इस मामले में चिकित्सा मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने अस्पताल अधीक्षक से रिपोर्ट मांगी है। अस्पताल में 35 दिन में 107 बच्चों की मौत पर राज्य की अशोक गहलोत सरकार घिरती जा रही है। भाजपा इस मामले को लेकर आंदोलन की तैयारी कर रही है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने कहा कि एक माह में बच्चों की मौतों आंकड़ा इतना अधिक है कि जिसे देखकर सरकार की लापरवाही साफ नजर आती है। भाजपा इस मुद्दे को लेकर सरकार को घेरेगी।

घटना पर संवेदनशील नहीं कांग्रेस : मायावती

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोटा में बच्चों की मौत पर बसपा प्रमुख मायावती ने दो ट्वीट कर कांग्रेस सरकार की खिंचाई की। मायावती ने लिखा, 'राजस्थान की कांग्रेसी सरकार में कोटा में लगभग 105 मासूम बच्चों की हुई मौत अति चिंताजनक लेकिन, इसको लेकर कांग्रेस व इनकी सरकार कतई भी संवेदनशील नजर नहीं आती है।' अगले ट्वीट में लिखा, 'यहां पूर्व में यूपी के गोरखपुर में हुई बच्चों की दर्दनाक मौत से सबक सीखकर अब यूपी सरकार को भी अपने अस्पतालों की देखरेख के लिए काफी सतर्क रहना चाहिए।'

डॉक्टरों ने किया कसाइयों जैसा व्यवहार

जागरण संवाददाता, कोटा

कोटा के जेकेलोन अस्पताल में 35 दिन में 107 बच्चों की मौत के बाद देशभर में जहां बवाल मचा हुआ है वहीं शनिवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और राज्य के उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट मृतक बच्चों के परिजनों से मिलने कोटा पहुंचे तो पीड़ितों ने अस्पताल के भयावह हालात बयान किए। बिरला और पायलट को पीड़ित परिवारों ने बताया कि कैसे डॉक्टरों की लापरवाही के कारण उनके बच्चों की मौत हुई। डॉक्टर कसाइयों की तरह व्यवहार करते थे।

शादी की पहली वर्षगांठ से तीन दिन पहले ही बेटी की मौत : कोटा के अनंतपुरा इलाके में रहने वाले एक मुस्लिम परिवार से मिलने शनिवार सुबह जब लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला पहुंचे तो वहां मातम छाया था। यहां 26 वर्षीय आसिम हुसैन की 15 दिन की बेटी की मौत डॉक्टरों की अनदेखी से हुई। इस परिवार ने डॉक्टरों की लापरवाही बताई। आसिम की पत्नी रूखसार ने 15 दिसंबर को बेटी को जन्म दिया। 29 दिसंबर शाम को बच्ची को बुखार हुआ तो जेकेलोन अस्पताल ले गए। वहां बच्ची को भर्ती कर लिया गया। ऑक्सीजन देने के लिए वेंटिलेटर पर रखा गया था, लेकिन उसे संभाला नहीं गया। आसिम जब अपनी बेटी की बिगड़ती तबीयत को लेकर रोते हुए डॉक्टर के पास गए तो उसने शराब पी रखी थी। शराब के नशे में डॉक्टर ने आसिम को भगा दिया, बच्ची का इलाज नहीं किया। अगले ही दिन बच्ची की मौत हो गई।

अपने बेटे को खोने वाला पिता बोला, हम रोते थे और डॉक्टर हंसी-मजाक करते थे : उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट शनिवार सुबह जब कोटा के छतरपुर इलाके में संजय रावल के घर पहुंचे तो आसपास के लोग एकत्रित थे। संजय रावल ने बताया कि उसके बेटे तेजस की मौत डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की लापरवाही से हुई। बताया कि मेरे पहले से दो बेटियां हैं, पत्नी ने बेटे को जन्म दिया तो परिवार में खुशी का माहौल था। इस बीच तेजस की 29 दिसंबर तो तबीयत बिगड़ गई। वे उसे जेकेलोन अस्पताल ले गए। पहले तो डॉक्टरों ने उसे भर्ती करने से ही इन्कार कर दिया, लेकिन काफी मशक्कत के बाद उसे वार्ड में जगह दे दी गई। बच्चे को निमोनिया था, उसकी हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी। बच्चे की बिगड़ती हालत को देखकर हम दिन-रात रोते थे, लेकिन डॉक्टर हंसी-मजाक करते रहते थे। डॉक्टरों को जब बच्चे की बिगड़ती तबीयत के बारे में बोलते तो कहते बच्चा अभी मर नहीं रहा है, तुम अपना काम करो।

डॉक्टरों ने इलाज पर नहीं दिया ध्यान : अपनी 15 दिन की बेटी को खोने वाले ओम प्रकाश ने बताया कि बच्ची को निमानिया होने पर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लेकिन डॉक्टरों ने इलाज पर ध्यान नहीं दिया। डॉक्टरों से जब बच्ची की तबीयत के बारे में बात करते तो वे कसाइयों जैसा व्यवहार करते थे।

राजस्थान के उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने शनिवार को जेके लोन हास्पिटल का दौरा किया। प्रेट्र

पाक ने 3289 बार किया संघर्ष विराम का उल्लंघन

राज्य ब्यूरो, जम्मू

पाकिस्तानी सेना ने बीते 16 वर्षों के दौरान जम्मू कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा से लेकर नियंत्रण रेखा पर वर्ष 2019 में सबसे ज्यादा बार सीजफायर का उल्लंघन कर गोलाबारी की। एक जनवरी 2019 से 31 दिसंबर 2019 तक पाक सेना ने 3,289 बार सीजफायर का उल्लंघन कर भारत के सैन्य व नागरिक ठिकानों को निशाना बनाया। यानी रोजाना औसतन नौ बार गोलाबारी की। अगस्त 2019 से 31 दिसंबर 2019 की समाप्ति तक 1,565 बार पाकिस्तानी सेना ने भारतीय ठिकानों पर गोलाबारी की है। यह जानकारी सामाजिक कार्यकर्त्ता रोहित चौधरी को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आरटीआइ के जवाब में दी है।

गृहमंत्रालय द्वारा उपलब्ध करवाए गए आंकड़ों के मुताबिक, अक्टूबर में सबसे ज्यादा 398 बार और उसके बाद 333 बार नवंबर के दौरान पाकिस्तानी सेना ने सीजफायर किया। अगस्त में 323, जुलाई में 314, सितंबर में 308 और मार्च में 275 बार पाकिस्तानी सेना ने गोलाबारी की।

2018 में 2936 बार किया सीजफायर, मारे गए थे 63 लोग : जम्मू कश्मीर पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों के बीच डर का माहौल पैदा करने के लिए ही पाकिस्तानी सेना अंतरराष्ट्रीय सीमा और एलओसी पर स्थित भारतीय सैन्य व नागरिक ठिकानों पर गोलाबारी करती है। वर्ष 2018 में पाकिस्तानी सेना ने 2936 बार सीजफायर किया था, जिसमें 63 लोगों की मौत हुई थी और 250 से ज्यादा जख्मी हुए थे। इस दौरान कई बार पाकिस्तानी सेना के साथ फ्लैग मीटिंग हुई, जिसमें पाक सेना ने शांति बनाए रखने का यकीन दिलाया, लेकिन उसने हमेशा वादा तोड़ा दिया। वर्ष 2018 में की घटनाओं की तुलना में 2019 में 300 घटनाएं ज्यादा हुईं। वर्ष-2017 के साथ तुलना की जाए तो बीते वर्ष तीन गुना ज्यादा पाकिस्तानी सेना ने सीजफायर तोड़ा है। 2017 में पाकिस्तानी सेना की गोलाबारी में 12 नागरिकों व 19 सुरक्षाकर्मियों सहित 31 लोगों की मौत हुई थी और 151 अन्य जख्मी हुए थे।

2003 में किया था जंगबंदी का एलान : वर्ष 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के शासनकाल के दौरान पाकिस्तान के साथ दोस्ताना संबंधों की बहाली की जा रही थी। दोनों देशों में आपसी विश्वास बहाली के विभिन्न कदम उठाए जा रहे थे, तो पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने 26 नवंबर 2003 को ईद के दिन जंगबंदी का एलान किया था। 2004 और 2005 में कोई घटना नहीं हुई, लेकिन वर्ष 2006 में तीन बार पाकिस्तानी सेना ने जंगबंदी को तोड़ा और उसके बाद लगातार जंगबंदी की घटनाएं बढ़ती चलीं गईं।

चार महीने में 309 आतंकी घटनाएं

पांच अगस्त को जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद नवंबर माह तक राज्य में 309 आतंकी घटनाएं हुई हैं। इनमें घटनाओं में 26 आतंकी मारे गए हैं, जबकि 47 को हिरासत में लिया है। जम्मू के आरटीआइ कार्यकर्ता रमन शर्मा द्वारा केंद्रीय गृह मंत्रालय से मांगी गई जानकारी के जवाब में यह खुलासा हुआ है। गृह मंत्रालय द्वारा उपलब्ध करवाई गई जानकारी में बताया गया है कि सितंबर महीने में सबसे अधिक 152 घटनाएं हुईं, जबकि अक्टूबर में 97 घटनाएं हुईं। अगस्त महीने में 50 और नवंबर में सिर्फ 10 घटनाएं ही हुई। गृह मंत्रालय द्वारा उपलब्ध करवाई गई जानकारी के मुताबिक चार महीने के 19 नागरिकों की मौत हुई। चार जवान शहीद हुए और चालीस जवान घायल हुए हैं।

सीजफायर का उल्लंघन कर नागरिक व सैन्य ठिकानों पर की गोलाबारी

वर्ष	घटनाएं	वर्ष	घटनाएं
2006	03	2012	114
2007	21	2013	347
2008	77	2014	583
2009	28	2015	405
2010	44	2017	971
2011	62	2018	2936

केवल नोटबंदी की अवधि तक ही सीमित नहीं है नोटिस

प्रथम पृष्ठ से आगे

गोयल कहते हैं कि सराफा कारोबारियों को मिले नोटिस केवल नोटबंदी की अवधि तक ही सीमित नहीं है। कई मामलों में तो इससे पहले के वर्षों की डिमांड निकालकर नोटिस भेजे गए हैं। उनके मुताबिक 'कुछ मामलो में तो 2011-12 और 2013-14 में किए गए कारोबार को लेकर भी नोटिस मिले हैं।' गोयल ने कहा कि दो लाख रुपये तक की बिक्री नकद में करने की छूट है। साथ ही ज्वैलर आमतौर पर एक किलोग्राम सोने की बिक्री आभूषणों के रूप में अलग-अलग वजन में करता है। इस वजह से नकद कारोबार की मात्रा अलग-अलग हो सकती है। इसलिए भी जमा कराई गई नकदी अधिक लगती है।

यह है मामला : अधिकारियों के मुताबिक नोटबंदी के दौरान ज्वैलरों ने पुरानी करेंसी में बड़ी मात्रा में बिक्री की थी। आयकर विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि नोटिस भेजने से पूर्व सराफा कारोबारियों की बिक्री और स्टॉक का पूरा असेसमेंट किया गया है। कई मामलों में डिलीवरी किए बिना बिक्री दिखाने के मामले भी आए हैं। कई मामलों में ज्वैलरों ने बिना केवाईसी वाले खुदरा सराफा कारोबारियों को बिक्री दिखाई है।

महात्मा गांधी की थीम पर फ्लावर शो

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वी जयंती वर्ष पर गुजरात के अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट में फ्लावर शो 2020 का आयोजन किया गया। इसकी थीम महात्मा गांधी पर आधारित है। शो में कई सौ प्रजातियों के पुष्पों की प्रदर्शनी लगाई गई है। इस प्रदर्शनी में महात्मा गांधी की दांडी यात्रा को दर्शाया है, जो लोगों के लिए खास आकर्षण का केंद्र है। एएनआइ

बदला मिजाज

उमर को अब न कबाब चाहिए और न ही महबूबा को चिकन सूप या गोश्ताबा, अब साग, दाल, सब्जी, चपाती और चावल के अलावा फल हैं मुख्य खुराक

हालात बदले, तो उमर व महबूबा का जायका भी बदल गया

नवीन नवाज, जम्मू

जम्मू-कश्मीर में प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था क्या बदली। प्रदेश के दो पूर्व मुख्यमंत्रियों ने अपना जायका भी बदल लिया है। दोनों अब शाकाहारी हो गए हैं। अपने खाने की आदत बदलने वाले इन पूर्व मुख्यमंत्रियों में नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की अध्यक्षा व पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती शामिल हैं। उमर अब्दुल्ला न कबाब की इच्छा जताते हैं और न महबूबा को चिकन सूप या गोश्ताबा और रिसता चाहिए।

गौरतलब है कि पांच अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम के लागू होने के साथ ही जम्मू-कश्मीर राज्य दो केंद्र शासित राज्यों जम्मू-कश्मीर व लद्दाख में बदल गया। अनुच्छेद 370 समाप्त हो गया। इस प्रक्रिया के दौरान प्रशासन ने एहतियात के तौर पर राज्य के तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती समेत नेशनल कांफ्रेंस, कांग्रेस, माकपा और पीपुल्स कांफ्रेंस समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के सभी प्रमुख नेताओं व कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया।

ये है मुख्यमंत्रियों की पसंद : उमर अब्दुल्ला को कबाब बहुत पसंद हैं। इसके अलावा वह राजमा-चावल और दक्षिण भारत और गुजरात का शाकाहारी खाना भी खूब पसंद करते हैं। पीडीपी की अध्यक्षा महबूबा मुफ्ती को चिकन, चिकन सूप और वाजवान में रिसता व गोश्ताबा के अलावा चाइनीज खाना पसंद है।

एक महीने से नहीं खा रहे मांसाहारी खाना : हरि निवास में एहतियातन हिरासत काट रहे उमर अब्दुल्ला और लालचौक से कुछ ही दूरी पर स्थित एक सरकारी गेस्ट हाऊस में हिरासत में रखी गई महबूबा मुफ्ती को जेल मैन्युल के मुताबिक शाकाहारी और मांसाहारी दोनों ही प्रकार का खाना क्रमानुसार प्रदान किया जाता है, दोनों नेताओं ने शुरू में कई दिनों तक इच्छानुसार मांसाहारी खाना लिया। इसके अलावा वह नाश्ते में ब्राउन ब्रेड, चपाती और फल भी लेते हैं। हालांकि बीते एक माह से दोनों ने हिरासत में एक बार भी मांसाहारी खाना नहीं खाया है। दोनों ही पूरी तरह से शाकाहारी खाना ले रहे हैं।

बाहर से बनकर आ रहा है खाना : दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों की सुरक्षा में तैनात संबंधित अधिकारियों ने बताया कि साग, दाल, सब्जी, चपाती और चावल ही दोनों की मुख्य खुराक हैं। इसके अलावा वह फल भी ले रहे हैं। यह खाना बाहर से ही बनकर आ रहा है। इन दोनों नेताओं को जहां रखा गया है, वहां खाना पकाने की इजाजत नहीं है।

हालांकि दोनों के लिए चाय और हल्का नाश्ता तैयार करने की सुविधा का प्रावधान रखा गया है। चाय दोनों को जब इच्छा होती है, संबंधित कर्मियों को सूचित करते हैं और चाय तैयार हो जाती है। अगर कोई मुलाकात करने के लिए आता है तो उसे भी यह चाय पिला सकते हैं। इनसे मिलने वाले अगर वह निकट संबंधी हैं तो खाना लेकर आ सकते हैं, लेकिन उक्त भोजन की जांच अनिवार्य है।

उमर अब्दुल्ला।

महबूबा मुफ्ती। दोनों फाइल

पत्नी व दो बच्चों की हत्या कर करने लगा मंत्र जाप, गिरफ्तार

जासं, सीतामढ़ी

▸ दो को टुकड़ों में काटा, छह माह की बच्ची का गला घोंटा

बिहार में सीतामढ़ी के अबिदपुर गांव में शनिवार तड़के एक सिरफिरे युवक ने पत्नी और एक बच्चे को कुल्हाड़ी और हंसुआ से टुकड़ों में काट डाला। छह माह की दुधमुंही बच्ची की भी गला दबाकर हत्या कर दी। इसके बाद सड़क पर बैठकर मंत्र जाप करने लगा। इस बीच घटना की खबर मिलते ही सनसनी फैल गई। देखते ही देखते भीड़ जुटी। पुलिस भी पहुंच गई। संयोग रहा कि घटना के दौरान दो बच्चों ने छिपकर जान बचाई। पुलिस ने आरोपित कमलेश चौधरी को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल कुल्हाड़ी, हंसुआ को जब्त कर लिया। बाद में एसपी अनिल कुमार भी पहुंचे। स्थानीय लोगों से भी पूछताछ हुई। गिरफ्तार कमलेश चौधरी के बड़े भाई शिवजी चौधरी ने कहा कि वह मानसिक रूप से बीमार है। आए दिन परिवार के साथ मारपीट करता रहता था।

अचानक उठा, पत्नी से होने लगी कहासुनी : पुलिस के अनुसार, कमरे में एक पलंग पर सभी सो रहे थे। सुबह तीन बजे कमलेश अचानक उठा और पत्नी से कहासुनी करने लगा। हाथापाई भी हुई। इसके बाद कमरे में पहले से छिपाकर रखी एक बोरी से कुल्हाड़ी और हंसुआ निकाला और लगातार प्रहार करने लगा। पत्नी पर कुल्हाड़ी से प्रहार किया। हंसुआ से गर्दन धड़ से अलग कर दी। इस बीच पुत्र प्रवीण (5) भी जाग गया। चिल्लाने लगा तो उसे भी काट डाला। इसके बाद पलंग पर चीख रही दुधमुंही बच्ची (6 माह) का गला घोंट दिया। इस दौरान दूसरा पुत्र नवीन व पुत्री खुशबू नींद से जागे। दोनों को कुल्हाड़ी दिखाई। दोनों कमरे में ही डर से दुबक गए। दोनों की जान बच गई।

बड़ी समस्या कारगर समाधान

कड़ाके की ठंड से जनजीवन बेहाल हुआ। जीवन का हर पहलू इसके प्रतिकूल असर से हलकान रहा। रिकॉर्ड टूटे। मौसम विभाग बताता है कि 119 साल पहले ऐसा जाड़ा पड़ा था। केवल सर्दी की बात नहीं है। गर्मी और बरसात के मौसम में भी ऐसे ही रिकॉर्ड टूटते हैं। कम समय में अधिकाधिक बारिश का और गर्मी में दिनोंदिन रिकॉर्ड तोड़ता पारा। इस हाड़ कंपाने वाली सर्दी की तमाम वजहों में से ग्लोबल वार्मिंग भी कारक माना गया। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि मौसम के सहज रूप-रंग में आई ये विकृति ग्लोबल वार्मिंग के चलते ही है। वे इसका इलाज भी सुझाते हैं। तमाम उपायों में धरती को फिर से उसके गहने यानी हरियाली से आच्छादित करना इसका कुदरती कारगर समाधान है। साल 2020 की पूर्व संध्या पर इस दिशा में खुशखबरी भी मिली। पिछले दो साल में देश के वन क्षेत्र में पांच हजार वर्ग किमी की वृद्धि हुई है। देश का 21.67 फीसद हिस्सा हरियाली से आच्छादित हो चुका है। पेड़ों के तनों में कार्बन डाईआक्साइड सोखने की अद्भुत क्षमता होती है। हरियाली के अभाव में यही कार्बन उत्सर्जन वायुमंडल में जाकर मौसम को गड़बड़ा रहा है। दुनिया के कई देशों में जंगल तेजी से काटे जा रहे हैं, भारत से इस आशय की खबर राहत देती है। जलवायु परिवर्तन को लेकर तय वैश्विक लक्ष्यों को हासिल करने में भारत हमेशा संजीदा रहा है। हमारी संस्कृति-सभ्यता प्रकृति को ईश्वर का दर्जा देती है। जलवायु परिवर्तन के मोर्चे पर दूसरे देशों के लिए भारत मिसाल बनता दिख रहा है। वे हमसे सीख सकते हैं कि अपनी परंपरा से प्रकृति और पर्यावरण कैसे बचाए जा सकते हैं। नया साल 2020 का पहला सप्ताह है। ये संकल्प सप्ताह के नाम से जाना जाता है। आइए, इस मौके पर हम संकल्प लें, कि धरती की हरियाली को कम नहीं होने देंगे और इस साल कम से कम एक पौधा लगाकर पेड़ बनने तक उसकी देखभाल करेंगे।

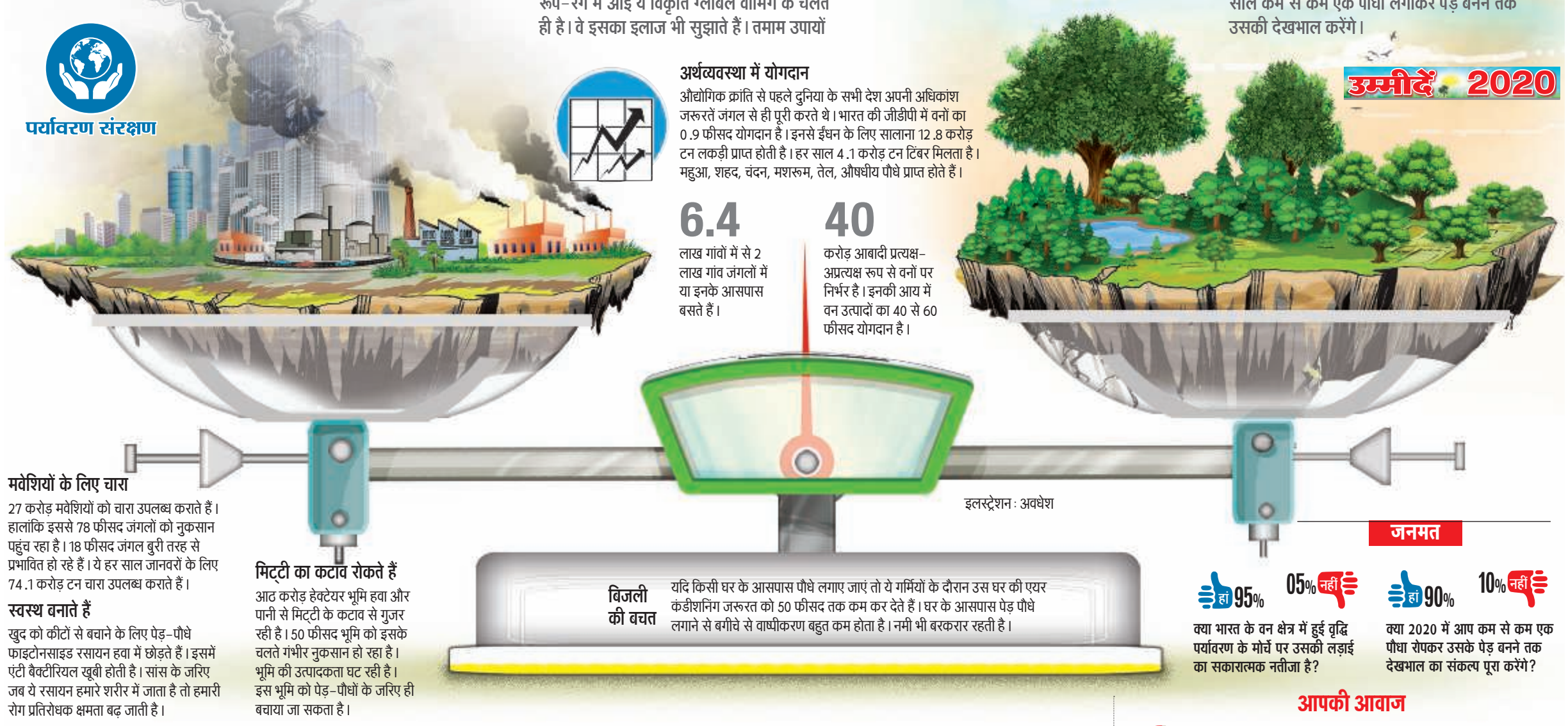

अर्थव्यवस्था में योगदान

औद्योगिक क्रांति से पहले दुनिया के सभी देश अपनी अधिकांश जरूरतें जंगल से ही पूरी करते थे। भारत की जीडीपी में वनों का 0.9 फीसद योगदान है। इनसे ईंधन के लिए सालाना 12.8 करोड़ टन लकड़ी प्राप्त होती है। हर साल 4.1 करोड़ टन टिंबर मिलता है। महुआ, शहद, चंदन, मशरूम, तेल, औषधीय पौधे प्राप्त होते हैं।

6.4 लाख गांवों में से 2 लाख गांव जंगलों में या इनके आसपास बसते हैं।

40 करोड़ आबादी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से वनों पर निर्भर है। इनकी आय में वन उत्पादों का 40 से 60 फीसद योगदान है।

मवेशियों के लिए चारा

27 करोड़ मवेशियों को चारा उपलब्ध कराते हैं। हालांकि इससे 78 फीसद जंगलों को नुकसान पहुंच रहा है। 18 फीसद जंगल बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। ये हर साल जानवरों के लिए 74.1 करोड़ टन चारा उपलब्ध कराते हैं।

स्वस्थ बनाते हैं

खुद को कीटों से बचाने के लिए पेड़-पौधे फाइटोनसाइड रसायन हवा में छोड़ते हैं। इसमें एंटी बैक्टीरियल खूबी होती है। सांस के जरिए जब ये रसायन हमारे शरीर में जाता है तो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

मिट्टी का कटाव रोकते हैं

आठ करोड़ हेक्टेयर भूमि हवा और पानी से मिट्टी के कटाव से गुजर रही है। 50 फीसद भूमि को इसके चलते गंभीर नुकसान हो रहा है। भूमि की उत्पादकता घट रही है। इस भूमि को पेड़-पौधों के जरिए ही बचाया जा सकता है।

बिजली की बचत यदि किसी घर के आसपास पौधे लगाए जाएं तो ये गर्मियों के दौरान उस घर की एयर कंडीशनिंग जरूरत को 50 फीसद तक कम कर देते हैं। घर के आसपास पेड़ पौधे लगाने से बगीचे से वाष्पीकरण बहुत कम होता है। नमी भी बरकरार रहती है।

इलस्ट्रेशन : अवधेश

जनमत

हां 95% नहीं 05% — क्या भारत के वन क्षेत्र में हुई वृद्धि पर्यावरण के मोर्चे पर उसकी लड़ाई का सकारात्मक नतीजा है?

हां 90% नहीं 10% — क्या 2020 में आप कम से कम एक पौधा रोपकर उसके पेड़ बनने तक देखभाल का संकल्प पूरा करेंगे?

आपकी आवाज

जब प्रदूषण जी का जंजाल बना है और शुद्ध हवा के लिए लोग तरस रहें हैं तो हर एक को चाहिए कि वह वृक्षारोपण को बढ़ावा दे। ताकि भावी पीढ़ी को भी शुद्ध हवा नसीब हो सके। क्योंकि जो हालात हैं उसमें आने वाले दिनों में लोगों को पानी की बोतल की तरह आक्सीजन की बोतल लेकर न चलना पड़े।

-डॉ. हर्षवर्द्धन

पर्यावरण असंतुलन की वजह से वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए हर एक आदमी को चाहिए कि कम से कम एक पेड़ लगाकर उसकी देखभाल कर बड़ा बनाएं। मेरी पूरी कोशिश रहेगी।

-जफर अहमद

कार्बन स्टॉक में वृद्धि, मगर धीरे-धीरे

इसी रफ्तार से वनों का दायरा बढ़ता रहा, तब भी हम कार्बन सोखने के लक्ष्य से 0.25 से 0.75 अरब टन पीछे रह जाएंगे। अच्छी बता यह है कि वनों की कार्बन सोखने की क्षमता में विस्तार के साथ देश कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए भी प्रयासरत है।

डॉ. सुभाष आशुतोष- महानिदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण

देश में वनावरण बढ़ना अच्छा संकेत है। पिछले दो साल की अवधि में इसमें 3976 वर्ग किमी का विस्तार हुआ है। इसी के अनुरूप देश के वनों की कार्बन स्टॉक (अपने भीतर समेटने) की दर में 4.26 करोड़ टन का इजाफा हुआ। हालांकि, यह रफ्तार हमारे उन लक्ष्यों के हिसाब से नहीं है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2015 के पेरिस समझौते के अनुरूप देश के लिए तय किए थे। समझौते के मुताबिक हमें वर्ष 2030 तक वनों की कार्बन सोखने की क्षमता में 2.5 से 03 अरब टन (कार्बन डाईऑक्साइड के समतुल्य) का इजाफा करना है। यदि इसी रफ्तार से वनों का दायरा बढ़ता रहा, तब भी हम लक्ष्य से 0.25 से 0.75 अरब टन पीछे रह जाएंगे। फिर भी हमें निराश होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि इस समय हमारा देश न सिर्फ वनों की कार्बन सोखने की क्षमता में विस्तार पर काम कर रहा है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन की दर कम करने के लिए तमाम स्तर पर काम किए जा रहे हैं। तमाम केंद्रीय योजनाओं के अनुसार नमामि गंगे के तहत गंगा नदी के दोनों किनारों पर 80 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में पौधरोपण की रफ्तार बढ़ रही है। इसके साथ ही नेशनल ग्रीन हाईवे मिशन में 1.40 लाख किलोमीटर लंबाई पर हरित पट्टिका विकसित की जा रही है। भीतरी वन क्षेत्रों के अलावा बाहरी क्षेत्रों में भी वनावरण बढ़ाने के प्रयास तेज स्तर पर चल रहे हैं। दूसरी तरफ क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट के माध्यम से कोयले को विशेष विधि से साफ कर प्रयोग में लाया जाने लगा है। इससे कार्बन का उत्सर्जन कम हो रहा है। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करते हुए सोलर, पनबिजली, न्यूक्लियर एनर्जी के विकल्पों पर भी काफी काम किया जा रहा है। यह सभी प्रयास अकेले वनों पर कार्बन के स्तर को कम करने की निर्भरता को भी घटा रहे हैं। यदि सब कुछ उम्मीद के अनुरूप रहा तो शायद हम लक्ष्य को हासिल कर लेंगे।

ऐसा भी नहीं है कि हम पर ही लक्ष्यों को हासिल करने का अतिरिक्त दबाव है। यूरोपीय संघ के हालिया कथन में भी यह बात सामने आई है कि वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर भी कार्बन उत्सर्जन में कटौती का लक्ष्य हासिल करना मुश्किल दिख रहा है। बताया जा रहा है कि अगले एक दशक तक उत्सर्जन में 30 फीसद तक की ही कमी हासिल होती दिख रही है, जबकि इसमें 40 फीसद तक की कटौती का लक्ष्य रखा गया था।

जंगल क्षेत्र कितना है पर्याप्त

पिछले एक दशक में देश के वन क्षेत्र में सिर्फ तीन फीसद का इजाफा हुआ है। इसमें भी वे वन जो पर्यावरण के लिहाज से बहुत ही उपयोगी होते हैं, उनके रकबे में 2017 से 2019 के बीच महज 1.14 फीसद का ही इजाफा हुआ है। हाल ही में जारी स्टेट ऑफ इंडियाज फॉरेस्ट रिपोर्ट 2019 बताती है कि देश का कुल वन क्षेत्र 7,12,249 वर्ग किमी है। हर दो साल में एक बार जारी होने वाली इस रिपोर्ट के अनुसार यह देश के कुल भूभाग का 21.67 फीसद है। भारत का लक्ष्य इस औसत को 33 फीसद पर ले जाने का है।

कितनी अहम है वृद्धि: हालिया रिपोर्ट के मुताबिक 2017 के भारत के वन क्षेत्र में 2019 में 3976 वर्ग किमी के साथ महज 0.13 फीसद का इजाफा हुआ है। अगर इसमें देश के वृक्षों से ढके भूभाग (95,027 वर्ग किमी) को भी शामिल कर लिया जाए तो देश के कुल रकबे में वन की हिस्सेदारी 24.56 फीसद हो जाती है।

परिभाषाओं की परेशानी: भारत में वन को परिभाषित करने के लिए तय मानक वैज्ञानिक बिरादरी के बीच बहस का विषय बनते रहे हैं। अलग-अलग संस्थाओं ने वन के अलग अलग मानक तय कर रखे हैं।

नफा-नुकसान: कुल वन क्षेत्र में भले ही देश ने वृद्धि दर्ज की हो, लेकिन जनजातीय इलाकों में वनों का रकबा कम हुआ है। यहां 741 वर्ग किमी वन क्षेत्र सिकुड़ा है। पूर्वोत्तर के असम और त्रिपुरा को छोड़कर सभी राज्यों में समग्र रूप से 765 वर्ग किमी की कमी दर्ज हुई है।

लक्ष्य कितना आसान: 1988 की राष्ट्रीय वन नीति में देश के कुल भूभाग का 33 फीसद हिस्सा वनाच्छादित रखने का लक्ष्य तय किया गया। पिछले तीन दशक से जिस तरह से वन क्षेत्र में मामूली वृद्धि देखी जा रही है, उससे तो यह लक्ष्य हासिल करना बहुत आसान नहीं लगता है।

वृक्षाच्छादित भूभाग: घोषित वन क्षेत्र से अलग पेड़ों वाला धरती का वह हिस्सा जो न्यूनतम एक हेक्टेयर रकबे से कम होता है।

इसे कहते हैं वन

- फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार वन धरती के उस भूभाग को कहते हैं जिसमें पेड़ों की कैनोपी घनत्व 10 फीसद से अधिक होता है और यह एक हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में होता है। हालांकि इसमें जमीन के इस्तेमाल, स्वामित्व और पेड़ों की प्रजातियों पर बहुत प्रकाश नहीं डाला गया है। इसका सीधा सा मतलब यह हुआ कि एक सामान्य बगीचा भी वन है, अगर उसका रकबा कम से कम एक हेक्टेयर है। इसमें पेड़ों के आकार-प्रकार के बारे में भी बताया गया है कि न्यूनतम ऊंचाई 4.5 फीट और व्यास 10 सेमी होना चाहिए।
- कंवेंशन ऑन बॉयोलॉजिकल डायवर्सिटी के अनुसार वन क्षेत्र उसे कहते हैं जो मुख्य रूप से कृषि या अन्य गैर वन भूमि के रूप में इस्तेमाल नहीं हो रही है।
- ग्लोबल फॉरेस्ट वाच न्यूनतम पांच मीटर की ऊंचाई वाले पौधों को ही पेड़ की संज्ञा देता है।

दशक में वन क्षेत्र (वर्ग किमी में)

प्रकार	2019	2017	2015	2013	2011
अति सघन	99278	98158	85904	83502	83471
औसत सघन	308472	308318	315374	318745	320736
खुले वन	304499	301797	300395	295651	287820
कुल	712249	708273	701673	697898	692027

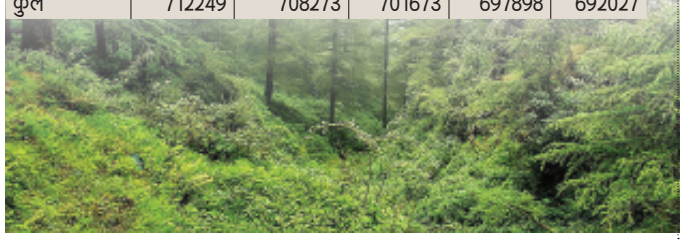

दुनिया में कहां खड़े हैं हम (क्षेत्रफल लाख वर्ग किमी में)

देश	रूस	कनाडा	ब्राजील	अमेरिका	चीन	कांगो गणराज्य	ऑस्ट्रेलिया	अर्जेंटीना	इंडोनेशिया	भारत
क्षेत्रफल	170	99.84	85.15	98.33	95.96	23.44	76.92	27.8	19.1	32.87
वनक्षेत्र	81.49	49.16	47.76	31	20.83	18.19	14.7	9.45	8.84	7.12
हिस्सा	49.4%	49.24%	56.1%	33.84%	21.83%	50%	19.9%	34%	46.46%	21.67%

आम के आम गुठलियों के दाम

इंसानी जीवन के लिए प्रत्यक्ष लाभ देने वाले हमारे जंगल अपने अप्रत्यक्ष फायदों के तहत आज की सबसे बड़ी समस्या ग्लोबल वार्मिंग के लिए बेहद कारगर साबित हो सकते हैं। हालांकि हम सिर्फ इसी के भरोसे नहीं रह सकते हैं।

कपिल सुब्रमणियन, क्लाइमेट पॉलिसी रिसर्चर, सीएसई

वन पर्यावरण के लिए अच्छे होते हैं। स्थानीय समुदायों को कई लाभ प्रदान करने के अलावा वे हवा से कार्बन सोखकर इसे अपने बॉयोमास में संग्रहित करते हैं। साथ ही इसे जमीन में मिट्टी कार्बन के रूप में भी दबाते हैं। ये 'कार्बन सिंक' जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष के लिए महत्वपूर्ण हैं। दुनिया भर की सरकारें पेरिस समझौते के तहत अपने कार्बन उत्सर्जन कटौती के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वानिकी परियोजनाओं में निवेश कर रही हैं।

कार्बन सोखने के लिए जंगलों की सटीक क्षमता का आकलन कठिन है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आइपीसीसी) की जलवायु परिवर्तन और भूमि संबंधी विशेष रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि विश्व स्तर पर, वनों की कटाई और भूमि क्षरण को कम करने से प्रति वर्ष 0.4 और 5.8 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम किया जा सकता है। इसके विपरीत, अकेले ऊर्जा क्षेत्र ने 2018 में 33 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन किया। वानिकी परियोजनाओं की क्षमता न केवल अनिश्चित है, बल्कि सबसे आशावादी अनुमान भी व्यक्त करते हैं कि यह जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के लिए पर्याप्त होने से दूर है। इसके अलावा, आइपीसीसी कहती है कि वानिकी परियोजनाओं के लाभ सामने आने में कई दशक लग सकते हैं। वानिकी परियोजनाएं कार्बन उत्सर्जन के लिए महत्वपूर्ण काउंटर बैलेंस बनी रहेंगी, लेकिन इन्हें ऊर्जा, उद्योग और परिवहन जैसे क्षेत्रों से कार्बन उत्सर्जन में गहरी और तेजी से कटौती के साथ ही आगे बढ़ना होगा। हालांकि, कई देशों ने वानिकी परियोजनाओं को अन्य क्षेत्रों में आवश्यक प्रयासों के पूरक के रूप के बजाय सस्ती वानिकी परियोजनाओं को पूर्ण प्रतिस्थानिक के तौर पर उपयोग किया है। सबसे चर्चित मामला भूमि संपन्न न्यूजीलैंड का है जो अपने तथाकथित 'क्योटो वन' का उपयोग करके कार्बन उत्सर्जन में भारी वृद्धि के बावजूद अपने कटौती लक्ष्यों को पूरा करने में कामयाब रहा है। क्योटो प्रोटोकॉल के स्वच्छ विकास तंत्र (सीडीएम) के तहत कई विकसित देशों ने विकासशील देशों में वनीकरण परियोजनाओं से सस्ते कार्बन क्रेडिट खरीद कर कुछ ना करते हुए भी अपने उत्सर्जन कटौती के लक्ष्यों को पूरा कर लिया है। वनों की कटाई से निपटने के लिए सबसे प्रमुख वैश्विक तंत्र निर्वनीकरण और वन क्षय उत्सर्जन कटौती (आरईडीडी +) है जिसकी स्थापना 2007 में बाली में की गई थी, लेकिन वैश्विक स्तर पर 30,000 से अधिक परियोजनाओं के बावजूद, वैश्विक वनोन्मूलन को रोकने में आरईडीडी + के योगदान का कोई ठोस सबूत नहीं है। भारत सरकार ने लंबे समय से वकालत की है कि देशों को वन आवरण की वृद्धि के लिए मुआवजा दिया जाना चाहिए। भारत ने यह भी सही तर्क दिया है कि स्थानीय समुदायों के लिए पारिस्थितिक और आर्थिक लाभ कार्बन जब्ती से अधिक महत्वपूर्ण हैं। भारत की नीति यह स्वीकार करती है कि आरईडीडी + लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए वनों पर निर्भर समुदायों के अधिकारों को वन अधिकार अधिनियम के तहत संरक्षित किया जाएगा। पर यह नीति स्पष्ट रूप से उन समुदायों द्वारा छोटे पैमाने पर आरईडीडी + परियोजनाओं के लिए समर्थन प्रदान नहीं करती है।

फिर भी, जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष में वन महत्वपूर्ण रहेंगे। पेरिस समझौते के तहत, भारत 2030 तक 2005 के स्तर पर अपने वानिकी कार्बन सिंक को 2.5-3 अरब टन तक बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। सांख्यिकीय रुझान स्थिति में कुछ सुधार वाले सुझावों के बावजूद विशेषज्ञों का मानना है कि भारत इस लक्ष्य की प्राप्ति की सही राह पर नहीं चल रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्थापित किया गया ग्रीन इंडिया मिशन का वित्त पोषण कमजोर है और हर साल यह मिशन अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में असक्षम रहा है। देश को अपने कार्बन सिंक को बढ़ाने के प्रयासों में वृद्धि करनी होगी। लेकिन स्थानीय समुदायों के लिए वनों के अन्य पर्यावरणीय और आर्थिक लाभों को उन प्रयासों के केंद्र में रहना होगा।

भविष्य संवारने में चुपचाप लगे हैं लोग

ऐसा नहीं हैं, कि सिमटती हरियाली और उसके दुष्प्रभावों को लेकर लोग चिंतित नहीं है। लोग चिंतित भी हैं और चुपचाप बहुत संजीदा तरीके से अपने फर्ज को अदा भी कर रहे हैं। ऐसे ही कुछ लोगों, संस्थाओं और गांवों की कहानी से हम सब कुछ प्रेरणा ले सकते हैं।

बच्चों की ग्रीन यात्रा

महाराष्ट्र की संस्था ग्रीन यात्रा स्कूल-स्कूल जाकर छात्रों को पौधरोपण के प्रति प्रेरित करती हैं। उनका मकसद सिर्फ पौधे लगाना नहीं बल्कि बच्चों में पौधरोपण के प्रति भाव जगाना, जिम्मेदारी की सीख देना है। इस कार्यक्रम का नाम गो ग्रीन किड्स है। वे स्कूल में बच्चों को पौधे मुहैया कराते हैं और उनका रोपण सुनिश्चित कराते हैं। पौधरोपण के बाद बच्चे उनकी देखरेख करते हैं। संस्था द्वारा रोपे गए पौधों की पेड़ में तब्दील होने की दर 95 फीसद है।

प्रोजेक्ट ग्रीन हैंड्स

इशा फाउंडेशन द्वारा स्थापित इस संस्था का लक्ष्य तमिलनाडु में ग्रीन कवर 33 फीसद तक ले जाना है। अपने इस मकसद को पाने के लिए इसने पूरे प्रदेश में 14.1 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। संस्था ने ग्रीन स्कूल मूवमेंट अभियान शुरू कर रखा है जिसमें स्कूली बच्चों को पौधों की नर्सरी बनाने की तकनीक सिखाई जाती है। संस्था स्कूल के हर बच्चे को विभिन्न प्रजातियों के पौधे के दो हजार बीज मुहैया कराती है। बच्चे स्कूल परिसर में ही छोटा-मोटा जंगल उगा देते हैं। संस्था की टीम नियमित समय इस कार्य की निगरानी करती है और जरूरी अतिरिक्त मदद भी मुहैया कराती है।

से ट्रीज

बेंगलुरु की इस संस्था का गठन पर्यावरण को समर्पित लोगों द्वारा किया गया है। बच्चों को पर्यावरण से जोड़ना मकसद है। संस्था के स्वयंसेवी छात्रों के साथ समय बिताते हैं और पौधरोपण के गुर सिखाते हैं। नियमित रूप से लगाए गए पौधों का मुआयना भी करते हैं। यह संस्था पौधरोपण की मियावाकी तकनीक का इस्तेमाल करती है जिसमें पौधे तेजी से विकास करते हैं।

पेड़ों की छांव में एक गांव

यह कहानी है राजस्थान के ऐसे गांव की जहां बच्चियों के जन्म होने पर 111 पौधे लगाने की परंपरा है। पिपलंतरी गांव की इस अनोखी रीति की शुरुआत के पीछे भी एक लड़की की यादें रही। दरअसल गांव के मुखिया की लड़की की युवावस्था में ही मौत हो गई। अपनी लड़की की याद में मुखिया ने पौधे लगाने की इस परंपरा की शुरुआत की। किसी के घर जब लड़की पैदा होती है तो गांव के लोग 31 हजार रुपये जमा करते हैं। इस रकम का एक तिहाई बच्ची के माता-पिता को जमा करना होता है। इस धन को लड़की के नाम बीस साल के लिए जमा कर दिया जाता है। लड़की के माता-पिता एक हलफनामा देते हैं जिसमें लड़की की शादी 18 साल के बाद ही करने की सहमति होती है। उसको अच्छी शिक्षा दिलाने का भी संकल्प लिया जाता है। इसी में लगाए गए 111 पौधे की देखभाल की बात भी होती है। पिछले कुछ साल से यहां दो लाख से अधिक पेड़ लगाए जा चुके हैं।

क्लिक करें, पौधा लगाएं

हमारे देश में पेड़ों की संख्या कम है उसके पीछे एक बड़ा कारण यह है कि लोगों के पास पौधरोपण करने का समय नहीं है। अगर वे पौध लगा भी दें तो उनके पास उसकी देखरेख करना का समय नहीं होता। इस समस्या का हल निकाला है एक गैर-सरकारी संगठन संकल्प तरु फाउंडेशन ने। यह फाउंडेशन लोगों को घर बैठे-बैठे पौधे लगाने का मौका दे रही है। इस संस्था का मोबाइल

एप जुलाई 2013 में लांच किया गया था। इसके जरिए लोग सिर्फ कुछ क्लिक करके अपने मनचाहे स्थान पर पौधे लगा सकते हैं। इसके बदले में संस्था के कार्यकर्ता उस स्थान पर जाकर लोगों का चुना हुआ पौधा लगाते हैं। जब उनके मनचाहे स्थान पर पौधा रोप दिया जाता है, तो उन्हें ईमेल भेजकर इस बात की जानकारी दी जाती है। उस पौधे की नियमित तस्वीरें लोगों को भेजी जाती हैं। इस पहल का दूसरा फायदा पहुंचता है किसानों को जिनके खेतों या मैदानों में ये पौधे या फलदार पेड़ लगाए जाते हैं। ये पेड़ किसानों के लिए जीविकोपार्जन का सहारा बनते हैं। इस संस्था का पहला पौधा पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने उत्तराखंड में लगाया था।

एकला चलो रे...

असम के फॉरेस्ट मैन कहे जाने वाले जादव पायेंग ने 1979 में बांस के पौधे लगाने से शुरुआत की। आज उनका लगाया जंगल 1300 एकड़ में फैला है। इस अनोखे काम के लिए उन्हें पद्मश्री सहित कई पुरस्कार मिले हैं।

Download UPSC IAS Material: www.iascgl.com

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 जनवरी 2020

दैनिक जागरण
संघर्ष की चाबी जीवन के सभी बंद दरवाजे खोल देती है

पाकिस्तान के अल्पसंख्यक

पाकिस्तान में गुरुद्वारा ननकाना साहिब पर हमले की घटना को लेकर पाकिस्तान ने वैसी ही लीपापोती की जैसी उसकी आदत है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय की मानें तो इस ऐतिहासिक गुरुद्वारे में कहीं कुछ नहीं हुआ। वह इस झूठ के पीछे इसलिए नहीं छिप सकता, क्योंकि इस गुरुद्वारे के सामने जमा हिंसक भीड़ के व्यवहार और उसकी भड़काऊ नारेबाजी को सारी दुनिया ने देखा-सुना है। यदि ननकाना साहिब में कहीं कुछ नहीं हुआ तो फिर वहां घोर आपत्तिजनक नारे क्यों लगे और पत्थरबाजी कौन कर गया? सवाल यह भी है कि इस घटना के अगले दिन वहां के सिखों को नगर कीर्तन निकालने की अनुमति क्यों नहीं दी गई? पाकिस्तान अपने यहां के उपेक्षित, अपमानित और आतंकित अल्पसंख्यकों की हिफाजत के खोखले दावे कर देश-दुनिया की आंखों में धूल झोंकने की चाहे जितनी कोशिश करे, हकीकत यही है कि वहां रह रहे हिंदू, सिख, ईसाई आदि एक तरह से अपने अंतिम दिन गिन रहे हैं। उनका कोई भविष्य नहीं। वे या तो जबरन धर्मांतरण का शिकार होंगे या फिर अपमानित जीवन जीने को विवश होंगे। उन्हें त्रासदी भरे जीवन से तभी छुटकारा मिल सकता है जब वे या तो अपना धर्म छोड़ दें या फिर देश। वास्तव में इसी कारण पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की संख्या तेजी से कम होती जा रही है।

पाकिस्तान के हालात सुधरने की कहीं कोई उम्मीद इसलिए नहीं, क्योंकि एक तो कट्टरपंथी तत्व सेना एवं सरकार से संरक्षित हैं और दूसरे, ईशनिंदा सरीखा दमनकारी कानून अस्तित्व में है। जब तक यह कानून अस्तित्व में रहेगा, पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों की जान सांसत में ही बनी रहेगी। ननकाना साहिब की घटना के बाद भारत में उन लोगों की आंखें खुल जाएं तो बेहतर जो अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए नागरिकता संशोधन कानून का अंध विरोध करने में लगे हुए हैं। आखिर पाकिस्तान में सताए जा रहे हिंदू, सिख आदि भारत की ओर नहीं निहारेंगे तो क्या अमेरिका, कनाडा से उम्मीद लगाएंगे? कम से कम अब तो नागरिकता कानून के विरोधियों को उसके खिलाफ दुष्प्रचार फैलाने से बाज आना चाहिए, क्योंकि इस कानून के जरिये पाकिस्तान और साथ ही बांग्लादेश और अफगानिस्तान में प्रताड़ित किए गए अल्पसंख्यकों को नागरिकता प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। यदि आपत्ति इस पर है कि इस कानून का लाभ इन तीनों देशों के उन अल्पसंख्यकों को ही मिलने जा रहा है जो दिसंबर 2014 तक भारत आ चुके है तो फिर विपक्ष को ऐसी कोई मांग करनी चाहिए कि इस समय सीमा को बढ़ाया जाए। क्या वह ऐसा कर रहा है? क्या यह किसी से छिपा है कि वह इस कानून को सिरे से खारिज किए दे रहा है?

सर्दी में सुरक्षा

सतर्कता बरती जाए तो किसी भी दुर्घटना से बचा जा सकता है। एक छोटी से भूल किसी बड़े हादसे का कारण भी बन जाती है। मौसम कोई भी हो, आग लगने की घटनाएं सामने आती ही रहती हैं। यह सही है कि आग लगने के कई कारण हो सकते हैं लेकिन कई बार मानवीय चूक के कारण भी अग्निकांड हो जाते हैं। ऐसा ही मामला हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला के हरिपुर में सामने आया है। यहां एक शिक्षक की झुलसने से मौत हो गई। इसी तरह पालमपुर में भी लोक निर्माण विभाग के चौकीदार की मौत हुई है। हालांकि अभी तक दोनों हादसों के कारणों का पता जांच के बाद ही चल पाएगा, लेकिन प्रारंभिक जांच में हीटर से बिस्तर को आग लगना ही कारण बताया जा रहा है। प्रदेश में इन दिनों कड़ाके की ठंड है। ठंड से बचने के लिए लोग अंगीठी व हीटर इत्यादि का प्रयोग करते हैं। अंगीठी की गैस लगने से भी मौत के मामले भी सामने आते रहे हैं। यह सही है कि आपदा को नहीं रोका जा सकता है, लेकिन सतर्कता से नुकसान को कम किया जा सकता है। रात को सोते समय यदि हीटर को बंद कर दिया जाए या अंगीठी को आग बुझने के बाद कमरे से बाहर खुली जगह में रख दिया जाए तो आग लगने या अंगीठी की गैस लगने की आशंका नहीं रहती है। सर्दियों में आग लगने की भी घटनाएं प्रदेश में सामने आती रहती हैं। कई बार आग लगने के कारण बिजली का शॉर्ट सर्किट भी होता है, लेकिन आग लगने के और भी कई कारण होते हैं। पहाड़ी राज्य हिमाचल में घरों के निर्माण में लकड़ी का अधिक प्रयोग होता है। कई जगह तो लकड़ी के ही घर बने होते हैं। इन घरों में आग से हमेशा सावधान रहना होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों ने बर्फबारी व बारिश के दौरान आग जलाने के लिए लकड़ियों व पशुओं के लिए चारे का भंडारण किया होता है। यहां पर एक छोटी सी भूल बड़े हादसे को जन्म दे सकती है। इसलिए जरूरी है कि लोग हमेशा सतर्क रहें। आग इत्यादि से निपटने के लिए घरों में पूर्व में प्रबंध किए जाने चाहिए। घरों की वायरिंग इत्यादि की समय-समय पर जांच की जानी चाहिए। बच्चों सहित सभी को यह जानकारी होनी चाहिए कि आग लगने पर सबसे पहले बिजली का मेन स्विच बंद किया जाए व आग पर कैसे काबू पाया जा सकता है।

एक छोटी सी भूल बड़े हादसे को जन्म दे सकती है। इसलिए जरूरी है कि लोग सतर्क रहें और आग इत्यादि से निपटने के लिए पूर्व में प्रबंध करें

दोहरी चुनौतियों से दो-चार सरकार

संजय गुप्त

मोदी सरकार के सामने चुनौती केवल आर्थिक माहौल को दुरुस्त कर कारोबार जगत को उत्साहित करने की ही नहीं, बल्कि राजनीतिक माहौल को सामान्य बनाने की भी है

नए साल में भाजपा को आगे की अपनी राह तय करने के साथ ही बीते साल के अपने सफर पर भी गौर करना चाहिए। ऐसा करते समय वह यही पाएगी कि यह कालखंड उसके लिए मिली-जुली सफलता का रहा। जहां शुरुआती छह माह तो उसकी तूती बोलती रही और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उसने तमाम आकलन को धता बताते हुए भारी-भरकम जीत के साथ दूसरी पारी शुरू की वहीं पारी शुरू करने के कुछ समय बाद ही उसके सामने एक के बाद एक चुनौतियां खड़ी होने लगीं। पहली चुनौती आर्थिक मोर्चे पर उभरी। अर्थव्यवस्था में गिरावट ने आर्थिक सुस्ती का रूप ले लिया। इसके बाद भाजपा को राज्य विधानसभा चुनावों में अपेक्षित नतीजे नहीं मिले। उसने हरियाणा को तो जैसे-तैसे बचा लिया, लेकिन शिवसेना की दगाबाजी से महाराष्ट्र को खो दिया। इसके बाद झारखंड में भी वह अपनी सरकार नहीं बचा सकी।

ऐसा तब हुआ जब मोदी सरकार दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में ही तीन तलाक संबंधी कानून को अंतिम रूप देने और जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35-ए को खत्म करने में सफल रही। इसमें दो राय नहीं कि इन दोनों बड़े फैसलों से मोदी सरकार एक सशक्त सरकार के रूप में उभरी। हालांकि इसी समय उसे सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन से एक बड़ा आघात लगा। वह इस आघात से उबर पाती कि अरुण जेटली का निधन हो गया। हालांकि खराब सेहत के चलते इन दोनों नेताओं ने खुद को चुनाव से दूर रखा और मंत्रिपरिषद में भी शामिल नहीं हुए, फिर भी वे भाजपा और सरकार के लिए एक बड़ी ताकत थे। अरुण जेटली तो खराब सेहत के बाद भी संकटमोचक की भूमिका निभा रहे थे। उनकी जगह वित्त मंत्रालय का कार्यभार निर्मला सीतारमण ने संभाला और वह देश की पहली महिला वित्त मंत्री बनीं। उनके पहले बजट से आम आदमी और कॉरपोरेट जगत को निराशा ही अधिक हाथ लगी। यह निराशा तब और बढ़ गई जब आर्थिक सुस्ती गहराने लगी। इस आर्थिक सुस्ती से निपटने के लिए वित्त मंत्री ने एक के बाद एक कई फैसले लिए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण रहा कॉरपोरेट टैक्स में कटौती का, लेकिन ये सभी फैसले उद्योगपतियों का भरोसा बढ़ाने में सहायक नहीं साबित हुए।

देखना है कि उनके दूसरे बजट से क्या सूरत बनती है? उन्होंने बजट की तैयारी शुरू कर दी है। उद्योगपतियों की समस्याओं को जानने के लिए वित्त मंत्री के साथ-साथ खुद प्रधानमंत्री भी उनसे मुलाकात कर रहे हैं। वह इन मुलाकातों में और अन्यत्र भी इस बात को लगातार रेखांकित कर रहे हैं कि अगले पांच वर्षों में देश पांच ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हासिल कर लेगा। इस लक्ष्य को लेकर प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता के बाद भी इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि भारतीय अर्थव्यवस्था को पांच ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए लगातार कम से कम आठ-नौ फीसद सालाना की दर से चलना होगा।

अवधेश राजपूत

यदि इस समय हम कारोबारियों के साथ आम आदमी की मनोदशा देखें तो कोई भी इस लक्ष्य को लेकर बहुत उत्साहित नहीं दिखता। जहां आम उपभोक्ता तमाम आशंकाओं से घिरे होने के कारण खुलकर खर्च करने को तैयार नहीं वहीं उद्योगपति भी निवेश करने से बच रहे हैं। इस सबके बीच सरकार कर चोरों पर लगातार सख्ती करती चली जा रही है। कुछ क्षेत्रों में तो यह सख्ती बढ़ती भी दिख रही है। समस्या यह है कि इस सख्ती को लेकर यह दुष्प्रचार हो रहा है कि सरकार उद्योगपतियों को बेवजह परेशान कर रही है। यह वह स्थिति है जो कारोबार जगत का मनोबल बढ़ाने वाली नहीं कही जा सकती, जबकि आज यह आवश्यक है कि उद्योग-व्यापार जगत उत्साहित दिखे। शायद सरकार भी असमंजस में है कि वह कारोबारियों का मनोबल किस तरह बढ़ाए? आज जब उद्योगपति सरकार से राहत और रियायत की तमाम उम्मीदें कर रहे हैं तब उन्हें यह ध्यान रखना होगा कि यह सरकार दो नंबर के तौर-तरीके सहन करने के लिए तैयार नहीं है। इसीलिए वह उच्च स्तर के भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सख्त है। प्रधानमंत्री अर्थव्यवस्था को औपचारिक रूप देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वह इस प्रतिबद्धता को बार-बार प्रकट भी करते हैं। इस स्थिति में किसी को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि प्रधानमंत्री भ्रष्ट तौर-तरीकों के लिए कोई गुंजाइश बनने देंगे। साफ है कि कारोबार जगत को यह समझना होगा कि पुराने तौर-तरीके चलने वाले नहीं हैं और उसे साफ-सुथरे तरीके अपनाने ही होंगे।

मोदी सरकार के सामने चुनौती केवल यही नहीं कि वह आर्थिक माहौल को दुरुस्त कर कारोबार जगत को उत्साहित करे, बल्कि यह भी है कि राजनीतिक माहौल को भी ठीक करे। इन दिनों नागरिकता संशोधन कानून, नागरिकता रजिस्टर यानी एनआरसी और जनसंख्या रजिस्टर अर्थात एनपीआर को लेकर विपक्षी दलों ने एक भ्रम का माहौल बना रखा है। सरकार के तमाम स्पष्टीकरण के बाद भी विपक्षी दल लोगों को बहकाकर सड़कों पर उतारने में लगे हुए हैं। वे दुष्प्रचार का सहारा लेकर राजनीतिक और साथ ही सामाजिक माहौल में भी कलह घोलने का काम रहे हैं। यह ठीक है कि सरकार ने यह साफ कर दिया है कि वह नागरिकता कानून पर एक इंच भी पीछे नहीं हटेगी, लेकिन शायद केवल इतना ही पर्याप्त नहीं। उसे उन कुतर्कों और भ्रम की काट भी करनी होगी जो विपक्षी दलों ने जनता के एक वर्ग के बीच फैला रखा है। इस वर्ग को उन तमाम गुटों का भी समर्थन मिल रहा है जो किसी न किसी कारण सरकार के विरोधी हैं और उससे अपना हिसाब चुकता करने के फेर में हैं। विपक्षी दल और साथ ही सरकार से असंतुष्ट तमाम गुट यह समझने से इन्कार कर रहे हैं कि वे समाज में भ्रांति फैलाकर टकराव की नींव रख रहे हैं। इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे। सरकार को इस पर ध्यान देना होगा कि विपक्षी दल और अन्य तत्व समाज में कलह न पैदा करने पाएं, क्योंकि अब यह अंदेशा भी बढ़ रहा है कि कई अतिवादी गुट भी जनता को बरगलाने में लगे हुए हैं।

सरकार को चाहिए कि वह नागरिकता कानून को लेकर आम लोगों तक पहुंच बढ़ाए ताकि वे और अधिक भटकाव का शिकार होने के साथ ही शरारती तत्वों के हाथों में खेलने से बच सकें। उसे आम लोगों और खासकर नागरिकता कानून और एनपीआर को लेकर भ्रम के शिकार लोगों को यह समझाना ही होगा कि इनके पीछे उद्देश्य क्या है? इसी के साथ उसे आर्थिक माहौल को सुधारने को अपनी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर रखना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि आर्थिक हालात में सुधार के उपाय जमीन पर असर करते हुए भी दिखें। ऐसा करके ही देश को पांच ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को हासिल किया जा सकेगा।

response@jagran.com

बड़े काम की साबित होती नेटबंदी

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

जब-जब इंटरनेट बंद रहा तब-तब अनचाहे और अनावश्यक संदेश पढ़ने से जो फुरसत मिली उसने बड़ी राहत दी

इंटरनेट का करिश्मा इंद्रजाल के जादू की भांति हम सबके सिरों पर चढ़कर अपने खेल दिखा रहा था। इसके चलते हम एक आभासी दुनिया में रहने लगे और अपने यथार्थ और परिवेश से कटते जा रहे हैं। इस इंटरनेट ने हमारे हाथों में एक डिब्बेनुमा खिलौना पकड़वा रखा है, जिसमें हम सगर्व अपना सिर झुकाए उसे थामे हुए देखे जा सकते हैं। यह अलग बात है कि हमारे शास्त्रों में सिर झुकाकर चलने को विनम्रता का प्रतीक बताया गया है। अगल-बगल की ताकझांक अशिष्टता की द्योतक होती है, लेकिन समय बदला और जब हमने नेटयुक्त मोबाइल युग में प्रवेश किया तो जिस गर्दन को तनना था, वह झुकने लग गई। अंगुलियां सदा चलायमान हो गईं और हमारी आंखें मोबाइल स्क्रीन की दीवानी हो गईं। इधर हाल के दिनों में इस यथास्थिति में किंचित व्यवधान आया है। इस अवस्था को नेटबंदी कहा जाने लगा है।

'संदेशे आते हैं, संदेशे जाते हैं' की लत का शिकार हो चुके लोगों को भले ही इंटरनेट के चालू होने और बंद होने से फर्क पड़ता हो, लेकिन मनुष्य की सोच सकारात्मक होती है तो वह दुख के दिनों में सुख का अनुभव कर सकता है और हर्ष-विषाद में भी समभाव से रह सकता है। अपन को तो इस नेटबंदी के कई फायदे दिखलाई दे रहे हैं। अगर हाल के दिनों की नेटबंदी से मायूस होकर आप इन फायदों को न देख-समझ पाए हों तो चिंता की बात नहीं। मैं उन्हें गिनाना शुरू करता हूं।

रोजाना मुझे प्रतिदिन पचीस-पचास लोग वॉट्सएप के जरिये 'सुप्रभात' और 'शुभ दिन' टाइप के संदेश भेजते हैं। वह दीगर बात है कि मैं कभी इन संदेशों को शाम तक देख पाता हूं और कभी एक-दो दिनों के अंतराल पर। इतना ही नहीं, इनके प्रत्युत्तर तो मैं कतई नहीं दिया करता। जब-जब नेटबंदी हुई तो अनचाहे संदेश पढ़ने से जो फुरसत मिली वह बड़ी राहत भरी रही। वैसे लगता नहीं कि ऐसे संदेश भेजने वालों की कर्मनिष्ठा में कोई कमी आएगी। ऐसे लोग सतत अपना कर्म करने में विश्वास करते हैं, उन्हें फल की आकांक्षा या कोई आशा भी नहीं होती। इन्हें मैं निष्काम कर्मयोगी कहा करता हूं। इनमें से कोई दिन में टकरा भी जाता है, लेकिन क्या मजाल कि अगला सिर उठाकर अभिवादन ही कर ले या मेरा अभिवादन स्वीकार कर ले, क्योंकि वह सड़क पर चलता भी है तो मोबाइल स्क्रीन में लीन रहता है।

कुछ लोग मैसेजिंग में मसाजिंग का सुख पाते हैं और तरोताजा होने का सुख उठाते हैं। कई लोग सवेरे-सवेरे उगते हुए सूर्य की तस्वीरें भेजते हैं। मुझे इन पर हंसी आती है। इस जाड़े में जहां एक ओर सूर्यग्रहण भी लगता है, तो भी दिखलाई नहीं पड़ता और अगले को धुंध-कोहरे में भी ऐसी तस्वीर भेजने से परहेज नहीं है। अब क्षणिक ही सही, नेटबंदी हुई, तो दो-चार लोगों से दुआ-सलाम की नौबत आई। इसका निष्कर्ष और लाभ यह है कि नेटबंदी से सामाजिकता बढ़ती है। कहने को तो इंटरनेट पर सोशल मीडिया का बोलबाला है, लेकिन वह उतना ही अन-सोशल भी होता जा रहा है। कुछ की नजर में तो सोशल मीडिया दरअसल एंटी सोशल है।

नेटबंदी का दूसरा और प्रत्यक्ष लाभ यह है कि प्रत्येक नेट उपभोक्ता में एक अलग तरह की तत्परता आ जाती है। वह सदैव आशंकाग्रस्त रहता है कि जाने कब नेट चला जाएगा और ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सएप आदि की सेवाओं का लाभ नहीं मिल पाएगा, इस नाते जो बात कल की जा सकती है, उसे वह आज ही कर डालता है। इस तरह वह 'काल करे सो आज कर, आज करे सके सो अब' की शाश्वत नीति का अनुपालन करने लग जाता है। नेटबंदी का यह फायदा भी कम काबिलेगौर नहीं है कि इससे हमें भांति-भांति की इमोजी के दर्शन और वीडियो गेम्स से कुछ वक्त के लिए निजात मिल जाती है। नेट यूजर्स को वायरल वीडियोज के बुखार में राहत का अनुभव भी होता है।

नेटबंदी संवेदनशील समय में अफवाहों के मुंह पर तालाबंदी का काम करती है। इतना ही नहीं, यह गूगल बाबा के जरिये हासिल अधकचरे ज्ञान से बचाव का भी कारगर उपाय है। और सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि इस दौरान ऑनलाइन ठगी करने वाले भी स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हैं। उम्मीद है कि अब आप भी यह मानेंगे कि नेटबंदी बड़े काम की है।

response@jagran.com

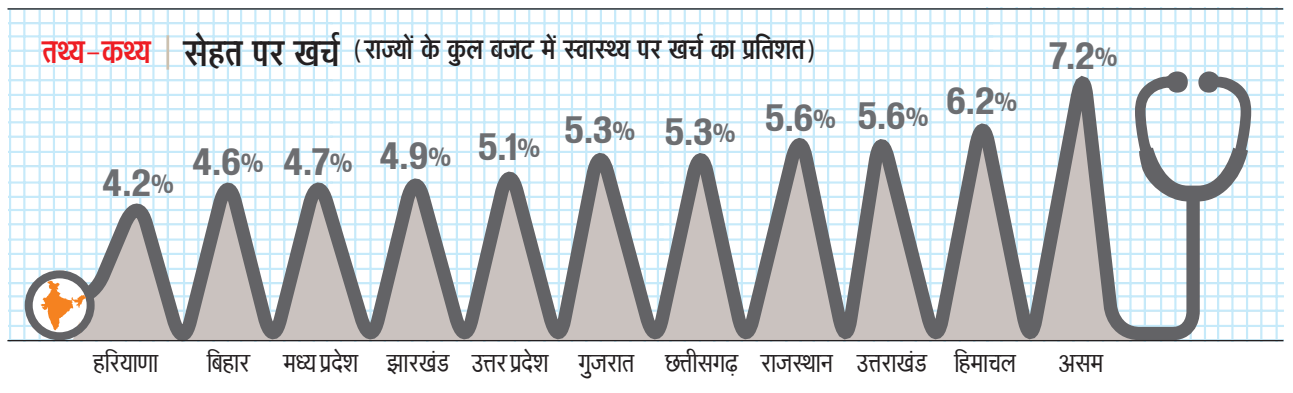

ऊर्जा

शब्दों की शक्ति

नववर्ष के भी कुछ दिन गुजर गए हैं। इस दौरान शुरुआत में लिए गए कई संकल्पों ने भी दम तोड़ दिया होगा। आखिर हर साल की यही कहानी क्यों होती है? इससे निपटने के लिए अगर हम इच्छाशक्ति के साथ ही शब्दों की ताकत का भी संज्ञान लें तब बात बन सकती है। बार-बार संकल्पों को लेकर निराशा के भाव से पीड़ित लोग अक्सर कठोर रणनीति अपना लेते हैं। इस कारण वह स्वयं के शत्रु बन जाते हैं। ये स्वजनित शत्रु संकल्पों की सिद्धि में और अवरोध ही उत्पन्न करते हैं। ऐसे में इस प्रकार की परिस्थितियों से बचने के लिए इस वर्ष कठोर बनने के बजाय शब्दों का प्रयोग कर लचीला बनना सीखें। स्मरण रखें कि सकारात्मक और रचनात्मक नीति हर विपरीत परिस्थिति को सहज बनाकर हमारी राह आसान बना देती है।

सकारात्मक सोच की रणनीति में यदि लचीले शब्द डाल दिए जाएं तो फिर भंगुर लोहा भी टूट जाता है। कोई विपदा भी ऐसे व्यक्ति को तोड़ नहीं सकती। इसलिए अपने शब्दों पर गौर करें और उन्हें बदलने का प्रयत्न करें। यदि लोग आपके शब्दों से नाराज हो जाते हैं, आपके काम बिगड़ जाते हैं तो तुरंत लचीले शब्दों को अपने जीवन में लाने का प्रयत्न करें। हर स्थिति में मतभेद से कार्य बिगड़ जाते हैं, इसलिए मतभेद के बजाय सहमति एवं मन मिलाने का प्रयत्न करें।

अक्सर हम देखते हैं कि अनेक विवाद केवल शब्दों के हेरफेर से पनपते हैं और हैरानी की बात यह है कि तमाम विवादों का अंत भी केवल समझदारी भरे शब्दों का चयन करके ही किया जा सकता है। समझदारी भरे कुछ शब्द अपने सामने रखिए। नए वर्ष में उनका प्रयोग करने की आदत डालिए। धीरे धीरे ये नए शब्द कुछ ही समय में आपकी किस्मत और व्यक्तित्व को बदल देंगे और आप एक चमत्कारी व्यक्तित्व बनकर उभरेंगे। तब फिर क्यों न आज से ही सकारात्मक और लचीले शब्दों का प्रयोग करना शुरू किया जाए ताकि नववर्ष पर ये शब्द आपकी दिशा को सही राह पर ले जाएं और आपको प्रारंभ में ही सफलता की ओर बढ़ाएं।

रेनू सैनी

निचले पहाड़ी इलाकों पर खतरा

मुकुल व्यास

कई हिमालयी झीलों के तटबंध टूटने से मानव बस्तियों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को बहुत नुकसान पहुंचेगा

वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय की हजारों बर्फीली झीलें अपने तटबंध तोड़कर निचली नदियों में बाढ़ की स्थिति पैदा कर सकती हैं। वैज्ञानिकों ने एक कंप्यूटरीकृत मॉडल से पता लगाया है कि बर्फ पिघलने से झील का पानी धीरे-धीरे ढीली चट्टानों और मिट्टी के अवरोधों को तोड़कर आगे बढ़ेगा। इन मॉडलों से पता चलता है कि हिमालय पर्वत शृंखला में करीब पांच हजार झीलें अपने तटबंधों की कमजोरी के कारण अस्थिर हैं। ये तटबंध बिखरी हुई चट्टानों और मिट्टी से बने हैं। यदि ये अवरोध टूट जाएंगे तो नीचे बड़े पैमाने पर बाढ़ आ जाएगी जो पहाड़ के तल पर रहने वाले लोगों के लिए विनाशकारी साबित हो सकती है।

यह अध्ययन जर्मनी की पोस्टडैम यूनिवर्सिटी के सहयोग से हुआ है। इसमें भौगोलिक आंकड़ों और उपग्रहों के आंकड़ों के आधार पर तैयार किए गए झीलों के मॉडलों का विस्तार से अध्ययन किया। यदि पांच हजार झीलें अपने अवरोध तोड़ घाटी के नीचे बहती हैं तो बाढ़ आएगी ही। शोधकर्ताओं ने यह भी चेतावनी दी है कि इन झीलों में पानी की मात्रा भी बहुत ज्यादा है। इन बर्फीली झीलों से उत्पन्न होने वाली बाढ़ का खतरा हिमालय के पूर्वी हिस्सों में तीन गुना अधिक है। इस चौंकाने वाली खोज के साथ ही विशेषज्ञों ने पिछले अध्ययनों के बारे में ध्यान दिलाया जिनमें कहा गया है कि हिमालय के दो-तिहाई ग्लेशियर अगले दशक में गायब हो सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि इन झीलों में अत्यधिक मात्रा में पानी के जमाव से घाटी के नीचे रहने वाली आबादियों, बुनियादी ढांचों और पनबिजली परियोजनाओं के समक्ष गंभीर खतरा पैदा हो जाएगा।

गत वर्ष जून में अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक पृथक अध्ययन से पता चला था कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान वृद्धि से पिछले दो दशकों में हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने की दर दोगुनी हो गई है। बढ़ते तापमान से इस क्षेत्र में हर वर्ष कम होने वाले पानी की मात्रा 32 लाख ओलंपिक तरणतालों के पानी के बराबर है। इस सदी की शुरुआत के बाद हिमालय के ग्लेशियरों में हर साल 51 सेंटीमीटर बर्फ कम हो रही है। भारत, चीन, नेपाल और भूटान में पिछले 40 वर्षों के दौरान किए गए उपग्रह पर्यवेक्षणों पर आधारित इस अध्ययन से पता चला कि बर्फ का पिघलना नियमित रूप से हो रहा है और इसके लिए तापमान-वृद्धि ही दोषी है। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन और पृथ्वी के गर्म होने से सिर्फ हिमालय के ही नहीं, अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड के ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं।

इन पिघलने वाले ग्लेशियरों से समुद्रों में जल स्तर बढ़ रहा है जिसकी वजह से समुद्री तटों के क्षरण का खतरा पैदा हो गया है। आने वाले समय में शंघाई से लेकर लंदन जैसे अनेक शहरों में बाढ़ का खतरा बढ़ जाएगा। दुनिया में सभी जगह ऐसे प्रभाव एक जैसे नहीं रहेंगे, लेकिन जोखिम वाले क्षेत्रों में अमेरिकी संपत्तियों के विश्लेषण से पता चला कि वर्ष 2045 तक तीन लाख घर जलमग्न हो सकते हैं जो बहुत चिंताजनक है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

एक तीर से दो निशाने

उन्हें देश का बेहतरीन सांख्यिकीविद बताया जाता है। गरीबी, रोजगार और आमदनी इत्यादि के आंकड़ें कैसे जुटाए जाएं, इसे उनसे बेहतर बहुत ही कम लोग शायद कर पाएं। वह मौजूदा सरकार से खफा भी रहते थे कि वह आंकडों को जुटाने को लेकर गंभीर नहीं है और इस बारे में जो कदम उठा रही है वह सही नहीं है। अब सरकार ने उन्हें आंकड़े जुटाने की नई समिति की जिम्मेदारी सौंपकर एक तीर से दो निशाने लगा दिए हैं। एक तो उन आलोचकों का मुंह बंद कर दिया गया जो यह कहते नहीं थकते कि सरकार को विरोधी विचारधारा के लोग फूटी आंख नहीं सुहाते और दूसरा यह कि देश में बेहतरीन व पारदर्शी तरीके से आंकड़े जुटाने का काम भी हो जाएगा।

अधूरी रह गई आस

बड़ी आस लगाए बैठे थे, लेकिन बुलावा ही नहीं आया। भला ऐसे में वहां कैसे पहुंचते जहां दुनिया भर के वैज्ञानिक शिरकत करने पहुंचे हैं। यहां बात बेंगलुरु की हो रही है, जहां नेशनल साइंस कांग्रेस का शानदार पंडाल सजा है। वहां अंतरराष्ट्रीय स्तर की विभूतियां नित नया ज्ञान परोस रही हैं, लेकिन राजधानी दिल्ली में बैठे वैज्ञानिक बड़े मायूस हैं। इस बार इंडियन साइंस कांग्रेस की थीम 'साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन रूरल इंडिया' है। इसमें दिलचस्प बात यही है कि जो वैज्ञानिक इस दिशा में काम कर रहे हैं, उन्हें बुलावा ही नहीं भेजा गया। ग्रामीण क्षेत्र में खेती-किसानी की उपयुक्त टेक्नोलॉजी की जरूरत है, लेकिन इस दिशा में काम करने वाले एग्रीकल्चर सेक्टर के वैज्ञानिक आयोजन में नहीं पहुंचे हैं। यह जलसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंस के परिसर में हो रहा है। वहीं इसमें लंबा-लंबा भाषण देने के सपने संजोने वालों को मायूसी ही हाथ लगी।

साहब सावधान, मातहत परेशान

केंद्र में पहली बार मंत्री बनकर आए एक साहब द्वारा अलसुबह की रिपोर्टिंग खासी चर्चा में है। उनके साथ काम करने वाले अफसर उनकी इस आदत से बहुत परेशान हैं। बताते हैं कि बड़े साहब को लंबे समय से सुबह पौने पांच बजे उठने की आदत है। स्थिति यह है कि रात में वह भले ही कितने बजे ही सोएं, लेकिन सुबह तय समय पर उठने से नहीं चूकते। इसके बाद तो उनके फोन मातहतों के मोबाइल पर घनघनाने लगते हैं। जबकि दिल्ली की आबोहवा में रचे बचे अधीनस्थ उस समय तक नींद में ही होते हैं। ऐसे में बड़े साहब का फोन उनके लिए परेशानी का सबब बन गया है। इस मुश्किल से बचने के लिए अफसरों को अपनी देर रात की पार्टी व सैर-सपाटे की आदत से तौबा करनी पड़ रही है। फिर भी बड़े साहब का टाइम नहीं पकड़ पा रहे हैं।

संकोची नड्डा

यूं तो बड़े राजनीतिक दलों के छुटभैये नेताओं में भी बहुत ठसक होती है और उनकी यही कोशिश होती है कि वे जहां जाएं वहां वीआइपी की तरह ही ट्रीट किए जाएं। सत्तारूढ़ दल के नेताओं में ऐसी हसरतें और ज्यादा होती हैं, लेकिन बहुत जल्द भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने वाले कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा इतने संकोची हैं कि किसी भी सार्वजनिक स्थान पर जाने से पहले यह सुनिश्चित करने में जुट जाते हैं कि उनके कार्यक्रम से किसी दूसरे को कोई असुविधा न हो। झारखंड चुनाव प्रचार के दौरान वह देवघर के वैद्यनाथ धाम में पूजा के लिए जाना चाहते थे, लेकिन यह संशय था कि जाएं या न जाएं, कहीं भक्तों की भीड़ को रोकने से ऐसी स्थिति न पैदा हो कि कोई आवाज उठे। लिहाजा नड्डा के सहयोगियों ने स्थानीय सांसद निशिकांत दुबे को यह सुनिश्चित करने को कहा कि ऐसा प्रबंध किया जाए कि भीड़ को ज्यादा असुविधा न हो और नड्डा के लिए असहज स्थिति न पैदा हो। इसके बाद जो इंतजाम किए उनमें नड्डा ने फटाफट पूजा-अर्चना की और बाहर आ गए।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

14 प्रतिशत भारतीय मानसिक रूप से बीमार हैं, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस द्वारा वर्ष 2016 में जारी की गई एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार। यह देश में मानसिक बीमारी की भयावहता के स्तर को दर्शाता है।

आजकल

फैज के बहाने सियासत का दांव

अनंत विजय

आज देश भर में पाकिस्तान के शायर फैज अहमद फैज की एक नज्म को लेकर चर्चा हो रही है। नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में आइआइटी कानपुर में किए गए प्रदर्शन के दौरान इस नज्म को पढ़ने का आरोप है। उसके बाद से पक्ष-विपक्ष में बोलने वाले अपनी-अपनी राय रख रहे हैं। इसे धर्म से भी जोड़ दिया गया है। फैज के बहाने देश में राजनीति भी शुरू हो गई है जिसमें गंगा-जमुनी तहजीब तक की बातें हो रही हैं, लेकिन कम से कम इस पर राजनीति तो नहीं ही होनी चाहिए

फैज अहमद फैज। फाइल फोटो।

पाकिस्तानी वामपंथी शायर फैज अहमद फैज एक बार फिर से चर्चा में हैं। ये चर्चा गैर साहित्यिक विवाद की वजह से शुरू हुई। इसमें साहित्य के कई विद्वान कूद गए और इसको एक अलग ही रंग देने की कोशिश शुरू कर दी। आइआइटी कानपुर में नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ प्रदर्शन में फैज की वो नज्म पढ़ी गई जिसमें तख्त और ताज उछालने की बात तो है ही, अल्लाह के राज कायम होने की बात भी है। विरोध प्रदर्शनों में कई बार फैज की ये नज्म पढ़ी जाती रही है। आइआइटी प्रशासन ने कैंपस में इस प्रदर्शन की जांच की बात कही है। जब जांच की घोषणा की जा रही थी तो एक प्रश्न आया कि क्या फैज के नज्म की भी जांच होगी। सभी पहलुओं की जांच की बात की गई। उसके बाद यह खबर आई कि आइआइटी इस बात की जांच करेगा कि फैज का नज्म हिंदू विरोधी या राष्ट्रविरोधी है या नहीं। सोशल मीडिया पर जब खबर वायरल हो गई तो आइआइटी ने साफ किया कि फैज के नज्म की जांच जैसी कोई बात नहीं है। इस सफाई को इस मामले के फुटनोट की तरह भी नहीं देखा गया और तरह तरह की प्रतिक्रिया आनी शुरू हो गई। बगैर आइआइटी की सफाई पर ध्यान दिए तरक्की पसंद शायर जावेद अख्तर इसमें कूद गए और उन्होंने यह कह दिया कि फैज की शायरी को हिंदू विरोधी कहा जाना बेतुका और मजाक है। जावेद साहब से यह पूछा जाना चाहिए कि किसने फैज की कविताओं को हिंदू विरोधी करार दिया।

दरअसल काल्पनिक चीजों पर प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति जावेद अख्तर जैसे तरक्कीपसंद या प्रगतिशील लेखकों के लिए आसान होता है। जो है नहीं उसके बारे में बोलो, उस पर इतनी गंभीरता से प्रतिक्रिया दो कि आम जनता में यह संदेश जाए कि कोई गंभीर मसला सामने आ गया है। इन तथाकथित प्रगतिशील लोगों की यह प्रविधि बहुत पुरानी हो गई है। इस पूरे मसले को हवा देने के पीछे देश में इस तरह का माहौल बनाना था कि भारतीय जनता पार्टी और उसके समर्थक मुसलमानों के खिलाफ हैं और अब कविताओं को भी हिंदू मुस्लिम के चश्मे से देखा जाएगा। जावेद अख्तर ही क्यों, बड़े बड़े प्रगतिशील माने जानेवाले लेखकों तक ने इस पर अपनी प्रतिक्रिया दे डाली और परोक्ष रूप से सरकार को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की। जब सरकार को कठघरे में खड़ा करने की कोशिशें तेज होने लगीं तो सरकार के समर्थक भी पलटवार करने लगे। फैज की शायरी रणक्षेत्र बन गई। एक एक शब्द को लेकर तर्क-वितर्क और कुतर्क सामने आने लगे।

फैज की कविताओं को लेकर छिड़े इस संग्राम में उनके भारत भक्त होने की बात भी लोग कहने लगे। फैज को विभाजन के खिलाफ खड़े एक शायर के तौर पर भी प्रस्तुत किया जाने लगा। वर्ष 1947 के अखबारों में छपे उनके लेखों को आधार बनाकर, कुछ पंक्तियों को संदर्भ से काटकर फैज की छवि चमकाने की कोशिश की जाने लगी। इन अबोध फैज समर्थकों को यह नहीं पता कि फैज की शायरी अपना बचाव करने में सक्षम है। अंध समर्थकों ने फैज को तानाशाही के खिलाफ खड़े एक कवि के तौर पर पेश करना शुरू किया। जिया उल हक के दौर की बातें की जाने लगीं। यह ठीक है कि फैज की कविता में विद्रोह और विरोध के स्वर मुखरता से प्रस्फुटित होते हैं, लेकिन जब फैज की व्यक्तिगत जिंदगी को लेकर उनकी साहित्यिक छवि को चमकाने की कोशिश की जाएगी तो फिर समग्रता में बात होनी चाहिए। फैज के 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौर के लेखन को भी देखा जाना चाहिए या फिर जब वो 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध पर लिख रहे थे उसे भी देखा जाना चाहिए। फैज अगर इतने ही क्रांतिकारी और तानाशाही विरोधी थे तो उनके कवि मन पर पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी फौज के अत्याचार को लेकर किसी तरह की हलचल नहीं हो रही थी? फैज को जानने-समझने के लिए 1970 के आसपास के उनके लेखन को जिया उल हक के कार्यकाल में हुए दमन के विरोध के लेखन में मिलाकर देखा जाना चाहिए।

कवि भी काल और परिस्थिति से प्रभावित होता है। फैज भी थे। फैज, जुल्फिकार अली भुट्टो के दोस्त थे। जब उनको फांसी दी गई तो उनका कवि मन अपने दोस्त के लिए द्रवित हो गया और जब कवि मन द्रवित होता है तो कई बार विद्रोही हो जाता है। फैज भी हो गए। जिया उल हक की मौत के बाद क्या पाकिस्तान के हालात बदल गए या उसके बाद वहां फौज की तानाशाही कम हो गई? लेकिन फैज का विद्रोह जरूर कुंद हो गया। फैज बड़े कवि हैं, लेकिन उनको महामानव बनाने की जो कोशिश देश का प्रगतिशील खेमा कर रहा है वो उनकी राजनीति का हिस्सा है। साहित्य और शायरी से उनका कोई लेना-देना है नहीं।

फैज के बहाने एक बार फिर से गंगा-जमुनी तहजीब को लेकर चिंता जाहिर की जाने लगी। जबकि अगर हम इस गंगा-जमुनी तहजीब को साहित्य की चौहद्दी में परखने की कोशिश करें तो यह आधुनिक भारत का बहुप्रचारित धोखा है। आज फैज की शायरी पर लहालोट होनेवाले भी इस तथ्य और सत्य को स्वीकार करेंगे कि अगर फैज की कविताएं देवनागरी में ना छपी होतीं तो क्या वे इतने व्यापक हो पाते। गालिब, मीर से लेकर जौन एलिया तक की शायरी अगर देवनागरी में नहीं प्रकाशित हुई होती तो क्या उनको इतनी लोकप्रियता मिल पाती? इसकी तुलना में इस बात पर भी विचार किया जाना चाहिए कि हिंदी के तमाम कवि लेखकों का उर्दू या फारसी में कितना अनुवाद हुआ। उर्दू के विद्वानों ने निराला से लेकर मुक्तिबोध तक या दिनकर से लेकर मैथिलीशरण गुप्त तक तक कितने लेखकों या कवियों का अनुवाद अपनी भाषा में किया। इस पर चर्चा करने की जरूरत है।

भाषा को राजनीति का औजार बनाने की कोशिश हिंदी और हिंदुस्तानी को लेकर भी की गई। हिंदी को सांप्रदायिकता की और हिंदुस्तानी को धर्मनिरपेक्ष बताने की कोशिश हुई। हिंदी के खिलाफ हिंदुस्तानी को खड़ा करने की कोशिश पहले भी हुई और अब भी प्रगतिशीलता के झंडाबरदार बीच बीच में हिंदुस्तानी की बातें करने लग जाते हैं। हिंदी में दो लेखक हुए, एक राजा शिवप्रसाद सितारे-हिंद और दूसरे भारतेंदु हरिश्चंद्र। राजा शिवप्रसाद सितारे-हिंद हिंदी और उर्दू को मिलाकर हिंदुस्तानी की पैरोकारी करते थे। दूसरे विद्वान भारतेंदु हिंदी को लेकर चले। शिवप्रसाद सितारे-हिंद इतिहास के बियाबान के एक कोने में हैं, वहीं भारतेंदु की हिंदी आज भी सीना तान कर खड़ी है। हिंदुस्तानी का आंदोलन तो गांधी ने भी चलाया, पर उनका भी विरोध हुआ। गांधी ने 18 मार्च 1920 को वीएस श्रीनिवास शास्त्री को लिखा- 'हिंदी और उर्दू के मिश्रण से निकली हुई हिंदुस्तानी को पारस्परिक संपर्क के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में निकट भविष्य में स्वीकार कर लिया जाए। भावी सदस्य इंपीरियल काउंसिल में इस तरह काम करने को वचनबद्ध होंगे जिससे वहां हिंदुस्तानी का प्रयोग प्रारंभ हो सके और प्रांतीय काउंसिलों में भी वे इस तरह काम करने को प्रतिज्ञाबद्ध होंगे (संपूर्ण गांधी वांग्मय खंड 17)।

गांधी जी जितनी मजबूती से हिंदुस्तानी का साथ दे रहे थे, हिंदी साहित्य सम्मेलन के सदस्य उतनी ही ताकत से उनका विरोध कर रहे थे। यह विरोध इतना बढ़ा था कि गांधी को 28 मई 1945 को सम्मेलन से अपना इस्तीफा देना पड़ा था। कांग्रेस पार्टी के अंदर भी हिंदी और हिंदुस्तानी को लेकर मत विभाजन हुआ था जिसमें हिंदी को बहुमत मिला था। बाद की कहानी तो सबके सामने है। फैज के विवाद के बहाने से जो लोग गंगा जमुनी तहजीब की बात कर रहे हैं उनको यह समझना होगा कि राजनीति के लिए साहित्य की जमीन का उपयोग गलत है और इतिहास गवाह है कि जब जब ऐसा करने की कोशिश हुई है तो जनता ने खुद उनको हाशिए पर डाल दिया।

फिर से

भूत बाधा से निपटने का प्रशिक्षण

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय एक बार फिर चर्चा में है। हाल के दिनों की बात करें तो फिरोज खान की नियुक्ति के मामले के बाद यह दूसरा अवसर है जब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का कोई विभाग सोशल मीडिया पर छाया हुआ है। हालांकि इस बार मामला थोड़ा सा अलग है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में एक नया सर्टिफिकेट कोर्स शुरू होने वाला है, जिसमें डॉक्टरों को यह सिखाया जाएगा कि वो उन लोगों का इलाज कैसे करें जो ये दावा करते हैं कि उन पर 'भूत का साया' है या फिर जो ये कहते हैं कि वे 'भूत को देख' सकते हैं या फिर जो ये कहते या दावा करते हैं कि उन्होंने 'भूत' को देखा है और उसे देखने के बाद से ही उनकी तबीयत बिगड़ी है।

छह महीने का यह कोर्स इसी माह से शुरू होने की उम्मीद जताई गई है। अधिकारियों का कहना है कि इस कोर्स में साइकोसोमैटिक डिजॉर्डर के बारे में खासतौर पर पढ़ाया जाएगा जिसे कई बार असामान्य घटनाओं से जोड़कर देखा जाता है। यह कोर्स आयुर्वेद विभाग द्वारा शुरू किया जाएगा। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के एक अधिकारी के अनुसार विश्वविद्यालय में भूत विद्या की एक अलग ईकाई स्थापित की गई थी।

आयुर्वेद संकाय की डीन यामिनी भूषण त्रिपाठी का कहना है कि भूत विद्या में मुख्य रूप से साइकोसोमैटिक डिजॉर्डर के बारे में पढ़ाया जाएगा, जो कि अज्ञात कारणों से होने वाली बीमारियों और मन या मानसिक स्थितियों के रोगों से संबंधित है। उनका कहना है कि यह विश्वविद्यालय देश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय था जिसने पहली बार इस तरह का कोई कोर्स शुरू किया है, जिसमें डॉक्टरों को आयुर्वेद के माध्यम से भूत जैसी जुड़ी चीजों के उपचार के बारे में पढ़ाया गया।

आयुर्वेदिक उपचार में आमतौर पर हर्बल मेडिसीन, डाइट में बदलाव, मसाज, सांस लेने और छोड़ने तथा व्यायाम के माध्यम से इलाज किया जाता है। वर्ष 2016 में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस द्वारा जारी किए गए एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक लगभग 14 प्रतिशत भारतीय मानसिक तौर पर बीमार हैं।

वहीं दूसरी ओर वर्ष 2017 में विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के मुताबिक लगभग 20 फीसद भारतीय कभी ना कभी अपने जीवन में अवसाद का सामना करते हैं। लेकिन देश में चार हजार से भी कम मेंटल हेल्थ प्रोफेशनल हैं और यह भी सच है कि देश में मानसिक बीमारियों को लेकर पर्याप्त जागरुकता की कमी भी है।

जागरुकता की कमी और सामाजिक दबाव के कारण बहुत कम लोग ही ऐसे होते हैं जो मानसिक बीमारियों के इलाज के लिए डॉक्टर के पास या प्रोफेशनल चिकित्सक के पास जाते हैं। देश में एक

बड़ी संख्या उन लोगों की है जो तांत्रिक आदि के पास जाते हैं। इसमें ज्यादातर लोग ग्रामीण इलाकों और बेहद गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाले होते हैं।

अब जबकि सरकारी विश्वविद्यालय बीएचयू भूत विद्या का कोर्स शुरू करने जा रहा है तो सोशल मीडिया पर इसे लेकर काफी बातें भी हो रही हैं। बहुतों का कहना है कि इस तरह के कोर्स शुरू करने से बेहतर है कि इन बीमारियों का इलाज एक प्रक्रिया के तहत किया जाए।

डॉ. भूषण शुक्ला सोशल मीडिया में लिखते हैं कि बेहद गंभीर मानसिक बीमारियों का इलाज आधुनिक दवाइयों और री-हेब सेंटर में किया जा सकता है। फेसबुक और ट्विटर पर इस तरह के ढेरों कमेंट हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह सिर्फ नाम की वजह से विवादित है, तो वहीं कुछ लोगों का मानना है कि इससे भी बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

(बीबीसी से संपादित अंश, साभार)

ट्वीट-ट्वीट

फैज हिंदू विरोधी हैं कि नहीं इस पर शोध करिए, लेकिन यह तो तय है कि पाकिस्तानी क्रांतिकारी अल्लाह का नाम लेकर प्रगतिशील बना रह सकता है। वहीं भारतीय क्रांतिकारी अगर राम का नाम गलती से लिख दे तो फिर समझिए कि उसकी क्रांतिकारिता का सर्टिफिकेट तुरंत खारिज हो सकता है।

अतुल कुमार राय@AuthorAtul

सरकार का क्या असर होता है ये आप लोग झारखंड से आ रही तस्वीरों के जरिये देख लीजिए जहां वापस जेल में दरबार लग गया। किसका? क्यों? और कैसे? यह जवाब कोई नहीं देगा? ऐसी ही सरकार अगर जनता चाहती है तो बधाई हो।

डॉ. अजय आलोक@alok_ajay

हर किसी को मालूम है कि पाकिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न होता है और इनमें शिया, अहमदिया और बलूच भी शामिल हैं। फिर हमारी 'हमदर्द' सरकार ने उनकी सुध क्यों नहीं ली?

तवलीन सिंह@tavleen_singh

जो शख्स गुरुद्वारे पर पत्थरबाजी कर रही भीड़ की अगुआई कर रहा था वह स्थानीय बरेलवी उपदेशक है। इससे पहले वह 19 वर्षीय सिख लड़की का धर्मांतरण कर जबरन विवाह करा चुका है। कितनी अजीब बात है कि यह सब करने के बाद भी वह छुट्टा घूम रहा है और पुलिस अधिकारियों का इस तरह शुक्रिया अदा कर रहा, मानो उसने कोई तमगा जीता हो।

आदित्य मेनन@AdityaMenon22

रचनाकर्म

महिला खिलाड़ियों के संघर्ष की कहानी

ब्रजविहारी

पुस्तक में देश का नाम रोशन करने वाली 16 महिला खिलाड़ियों की कामयाबी की दास्तान है। यह इसलिए प्रेरक है, क्योंकि पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में उनके सामने चुनौतियां अधिक होती हैं...

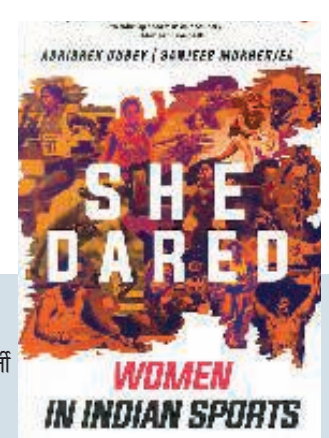

पुस्तक : शी डेयर्ड, वुमन इन इंडियन स्पोर्ट्स
लेखक : अभिषेक दूबे और संजीब मुखर्जी
प्रकाशक : रूपा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य : 295 रुपये

आज के दौर में दुती चंद, साइना नेहवाल, पीवी सिंधू साक्षी मलिक, दीपा मलिक, हिमा दास और दीपा कर्माकर सरीखी खिलाड़ियों को मिल रहे पुरस्कारों और सम्मानों के पीछे इनसे पहले खेल क्षितिज पर नाम रोशन कर चुकी देश की महिला खिलाड़ियों के दशकों के संघर्ष की कहानी छिपी हुई है। पीटी ऊषा, कर्णम मल्लेश्वरी, अश्विनी नचप्पा, एमडी वालसम्मा, शाइनी विल्सन और वंदना राव जैसी इन पूर्ववर्ती खिलाड़ियों ने वह जमीन तैयार की, जिसके आधार पर आज की महिला खिलाड़ी वैश्विक स्तर पर अपनी और देश की पहचान बनाने में कामयाब हो रही हैं। पूर्ववर्ती और मौजूदा समय की ऐसी ही 16 चुनिंदा महिला खिलाड़ियों के अनथक संघर्ष और शानदार सफलता को खेल पत्रकार अभिषेक दूबे और संजीब मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'शी डेयर्ड, वुमन इन इंडियन स्पोर्ट्स' का विषय बनाया है। इसमें कोई दोराय नहीं है कि यह पुस्तक क्रिकेट और उसके खिलाड़ियों के दीवाने प्रशंसकों की आंखें खोल देने काम करेगी। यही नहीं, खेल के क्षेत्र में शोध कर रहे विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक काफी उपयोगी साबित होगी।

वैसे तो खेल के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई मुकाम हासिल करने के लिए खिलाड़ियों को ताकत, सूझबूझ, प्रतिबद्धता और कभी न हार मानने वाली दृढ़ता का प्रदर्शन करना होता है, लेकिन कहना न होगा कि पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को इन चारित्रिक विशेषताओं पर महारत हासिल करने के साथ-साथ कदम-कदम पर सामाजिक कुरीतियों, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और खेल संस्थानों के पूर्वाग्रहों से भी दो-दो हाथ करना पड़ता है। पुस्तक में जिन 16 खिलाड़ियों के संघर्ष की कहानी बयान की गई है, उनका चयन सिर्फ उनकी उपलब्धियों के आधार पर नहीं किया गया है, बल्कि उनका चुनाव उनकी कामयाबी के असर की बुनियाद पर किया गया है। ये ऐसी खिलाड़ी हैं, जो मौजूदा और भावी खिलाड़ियों की कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनती रहेंगी। इनमें वह हिमा दास भी शामिल हैं, जिन्होंने भीषण गरीबी से जूझते हुए कामयाबी की मंजिल हासिल की। अंजू बॉबी जॉर्ज को भला कौन भूल सकता है, जिन्होंने खेल की उस विधा में महारत पाई, जिसमें कूदने का साहस बहुत कम महिलाओं में होता है। एमसी मैरीकॉम की अदम्य इच्छाशक्ति, देश के लिए पहला ओलंपिक पदक जीतने वाली महिला वेटलिफ्टर कर्णम मल्लेश्वरी का जुनून और शारीरिक कमी से लड़कर मौत को न्योता देने वाले जिम्नास्टिक करतब दिखाने वाली दीपा कर्माकर जैसी खिलाड़ियों के लंबे संघर्ष को इस पुस्तक में शामिल किया गया है।

इन चुनिंदा खिलाड़ियों के जीवन-वृत्त पर विस्तार के कलम चलाने के साथ-साथ लेखकों ने उन खिलाड़ियों को भी याद किया है, जिन्हें इस पुस्तक में शामिल नहीं किया जा सका। इनमें डायना इडुल्जी, इंदु पूरी, ज्योतिर्मय सिकदर, बछेंद्री पाल, रीथ अब्राहम, बुला चौधरी, अपर्णा पोपट, लैशराम सरीता देवी, अंजलि भार्गव, कोनेरू हंपी और झूलन गोस्वामी जैसी खिलाड़ी हैं, जिन्होंने अपने कारनामों से देश का नाम रोशन किया है। लेखकों ने स्वीकार किया है कि इन सभी खिलाड़ियों पर अलग से स्वतंत्र पुस्तक लिखी जा सकती है।

लेखकों ने अपनी इस पुस्तक के जरिये उस धारणा को भी तोड़ने का प्रयास किया है कि इस देश में सिर्फ क्रिकेट खिलाड़ियों को ही तवज्जो दी जाती है और दूसरे खेल के खिलाड़ियों का अगर जिक्र भी आता है तो उनके पदकों के कारण। इस पुस्तक में उन खिलाड़ियों का भी जिक्र है, जो पोडियम तक तो नहीं पहुंच पाए, लेकिन उनके संघर्ष से प्रेरणा लेकर कई खिलाड़ियों ने कामयाबी की मंजिल हासिल की। खिलाड़ियों के अलावा उन्हें सहेजने वाले परिजनों, कोच, सपोर्ट स्टाफ और खेल संस्थानों की भूमिका को भी इसमें बखूबी उकेरा गया है।

कर्म-भाग्य संबंधों का विश्लेषण

संजीव कुमार झा

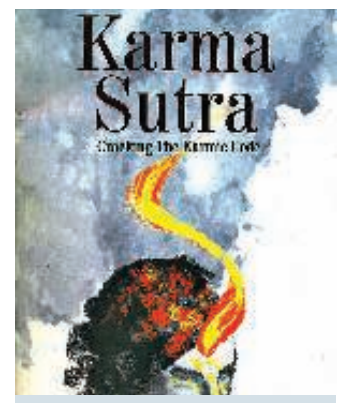

पुस्तक : कर्म सूत्रः क्रैकिंग कार्मिक कोड
लेखक : हिंगोरी
प्रकाशक : पाली हिल्स टूरिस्ट होटल प्रा. लि.
मूल्य : 295 रुपये

कर्म और भाग्य के संबंधों के बारे में सैकड़ों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। वेदों-पुराणों से लेकर श्रीमद्भगवद्गीता में इस विषय के प्रमाण सहित वर्णन को पारलौकिक मानकर अलग भी रखें, तो आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद व विभिन्न संत-महात्माओं और आध्यात्मिक गुरुओं ने इस पर प्रकाश डाला है। इन सबमें यह स्थापित करने की कोशिश की गई है कि मनुष्य परमात्मा का एक हिस्सा और अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। हिंगोरी लिखित 'कर्म सूत्र- क्रैकिंग कार्मिक कोड' कर्म और भाग्य के इस अंतर्संबंध को नितांत निजी अनुभवों के माध्यम से सरल, सहज और एक कदम आगे ले जाने की जीवंत कोशिशों पर आधारित पुस्तक है।

हिंगोरी के बारे में कहा जाता है कि वे अपनी जिंदगी के पूर्वार्द्ध में कर्म, भाग्य या ईश्वर के बारे में बहुत यकीन नहीं रखते थे। उस दौरान वे लगभग एक दशक तक आर्थराइटिस नामक बीमारी का शिकार रहे। इसी के इलाज के लिए वे एक ऐसे सिद्ध पुरुष के पास पहुंचे, जिन्होंने कथित रूप से महज एक मिनट में उनकी यह बीमारी ठीक कर दी। उसी एक मिनट ने उनकी जिंदगी बदल दी और उसके बाद वे पूरी तरह से परोपकार और अपने उस गुरु के उपदेशों को जन-जन तक पहुंचाने में जुट गए। वे कहते हैं कि उनके गुरु ने अपने सभी अनुयायियों को सिर्फ और सिर्फ सेवा की शिक्षा दी, ताकि मानवता कुछ मानवनिर्मित संकटों से खुद को उबार सकें। हिंगोरी ने 'कर्म सूत्र' के बाद 'ड्रीम सूत्र' और 'आत्म सूत्र' जैसी किताबें भी लिखी हैं। 'कर्म सूत्र' में उन्होंने कर्म की परिभाषा, प्रकार, गुरु, माता-पिता, पंचतत्व, वातावरण, जीव-जंतु, मदद और उसके प्रकार, तपस्या, क्लेश और इस तरह के अन्य विषयों के बारे में लिखा है। यह कौतूहल का विषय हो सकता है कि एक अपराधी किसी की हत्या कर देता है और एक जज उस अपराधी को मृत्युदंड देता है। ऐसे में हत्या के दोनों दोषियों का कर्म फल अलग-अलग क्यों और कैसे होता है? ऐसे सैकड़ों अनसुलझे सवालों का जवाब पाने वालों के लिए यह पुस्तक काम की है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या फैज अहमद 'फैज' की नज्म 'हम देखेंगे...' का विरोध उचित है?

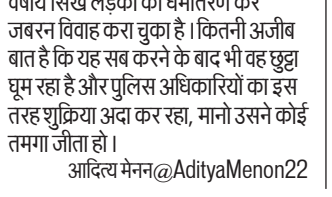

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या ईरान में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई वैश्विक शांति के लिए नया खतरा है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

सिद्धू भैया देखिए ननकाना का चित्र,
क्या-क्या गुल खिलवा रहे वहां आपके मित्र!
वहां आपके मित्र कराते हैं हंगामा,
पूरा सिख समुदाय देखता है यह ड्रामा।
मित्र-मित्र कह खूब बनाया इनको बुद्धू,
अब सब कुछ लुटवाय हाथ मलते हैं सिद्धू।

- ओमप्रकाश तिवारी

मध्य प्रदेश डायरी

बयानों के विवाद में फिर शामिल हुए कैलाश

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

'बेटा बल्लामार- बाप आगबाज! ...इंदौर में माफियाओं पर जारी कार्रवाई से तिलमिलाए भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव इंदौर शहर को आग लगाने की धमकी! पश्चिम बंगाल का अनुभव सर चढ़कर बोल रहा है..? कैलाश जी, किसी मुगालते में मत रहना, अब शिवराज का सर्कस नहीं, कमल नाथ की सरकार है।' मध्य प्रदेश कांग्रेस ने इस ट्वीट के जरिये भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय को चुनौती दे दी है। कांग्रेस के अन्य नेताओं के बयानों को भी यदि टटोलें तो लगभग एक-सा स्वर सुनाई दे रहा है।

एक मांग यह भी आई, 'यदि कैलाश विजयवर्गीय के पास कांग्रेस के 167 ऐसे कार्यकर्ताओं की सूची है, जिन्होंने अतिक्रमण कर रखा है, तो कांग्रेस उन्हें खुली चुनौती देती है कि वे इस सूची को सार्वजनिक करें। कांग्रेस ही नहीं, भाजपा सहित शहर व प्रदेश के सभी माफियाओं की निष्पक्ष सूची यदि कैलाश विजयवर्गीय के पास है, तो उन्हें खुद सामने आकर सार्वजनिक करना चाहिए।' कांग्रेस के कुछ दूसरे नेताओं का मानना है कि सरकारी अधिकारियों को खुलेआम धमकाते हुए, शहर में आग लगाने की बात करने वाले विजयवर्गीय पर आपराधिक प्रकरण दर्ज किया जाना चाहिए।

दरअसल, विवादित बयान के जरिये कैलाश विजयवर्गीय फिर सुर्खियों में हैं। इंदौर में बीते शुक्रवार विजयवर्गीय की अगुवाई में भाजपा के स्थानीय जन प्रतिनिधियों का धरना-प्रदर्शन था। विजयवर्गीय ने आरोप लगाया कि प्रशासन शहर में विकास व ऑपरेशन क्लीन के नाम पर पक्षपातपूर्ण और राजनीतिक दुर्भावना से कार्रवाई कर रहा है। इस मुद्दे पर बीजेपी ने पुलिस-प्रशासन के आला अधिकारियों को चर्चा के लिए बुलाया था, लेकिन वे नहीं आए। इस रवैये से बिफरे विजयवर्गीय बोल गए, 'क्या वे (अधिकारी) इतने बड़े हो गए? उनकी इतनी औकात हो गई? अधिकारियों को समझना चाहिए कि वे जनता के नौकर हैं। हम यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारे संघ के पदाधिकारी (यहां) हैं, नहीं तो आज आग लगा देता इंदौर में।' कैलाश विजयवर्गीय ने इंदौर सहित मध्य प्रदेश में अपना वर्चस्व बनाने के लिए काफी संघर्ष किया है। वैसे भी उपेक्षा से आहत भाजपा के इस नेता का यूं सार्वजनिक रूप से असंयमित हो

जाना कोई नई बात नहीं है। विजयवर्गीय के राजनीतिक बायोडाटा में ऐसे विवादित बयानों की लंबी सूची पहले से ही दर्ज है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा इस बात को लेकर भी है कि विजयवर्गीय इस बात से ज्यादा परेशान हैं कि उनके करीबी लोगों को जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। इसीलिए, जमीनी आंदोलन से लंबे समय से जुड़ा यह नेता ताजा विवाद में यह कहने से भी नहीं चूका कि- 'अभी शहर में बड़े लोग हैं, इसलिए ठाकुर के हाथ बंधे हैं, नहीं तो सरकार को बताता कि प्रदर्शन कैसे होते हैं? बंगाल में मैं कोई मूंगफली नहीं बेच रहा हूं।'

स्वाभाविक है कि अचानक हुए इस घटनाक्रम की राजनीतिक प्रतिक्रिया लंबे समय तक भाजपा-कांग्रेस को एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा लड़ाने में नए हथियार देती रहेगी। कांग्रेस के कई नेता विजयवर्गीय के विरोध के साथ, सरकार के पक्ष में भी तेजी से लामबंद हो गए। विजयवर्गीय को सीधी चुनौती देते हुए ऐसे बयान भी सामने आ गए कि- 'यह शिवराज नहीं, सिंघम कमलनाथ जी की सरकार है, इसमें शहर को आग लगाने वाला कोई पैदा नहीं हुआ। पूर्व में विधायक पुत्र आकाश विजयवर्गीय ने बल्लेबाजी की थी। विजयवर्गीय बंगाल के प्रभारी हैं। वे वहां जब-जब भी जाते हैं, हिंसा होती है, इसी से समझा जा सकता है कि उस हिंसा के पीछे क्या कारण हैं?'

राजनीतिक जानकारों की मानें तो विजयवर्गीय और विवादों का ऐसा तालमेल पूर्व में भी कई अवसरों पर हो चुका है। वैसे भी इन दिनों देश-दुनिया की मीडिया का ध्यान इंदौर की तरफ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय पदाधिकारियों की अनौपचारिक बैठकें जारी हैं। इसमें आरएसएस के सर संघचालक मोहन भागवत, सर कार्यवाह भय्याजी जोशी, पार्टी महासचिव राम माधव सहित कई केंद्रीय मंत्री भाग लेंगे। माना यह भी जा रहा है कि इन बैठकों में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) और राम मंदिर जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होगी। ऐसे समय कैलाश विजयवर्गीय के बयान का सुर्खियां बन जाना या सुर्खियों में बने रहने के लिए बयान दे देना, भाजपा के कई नेताओं को भी हजम नहीं हो रहा है। मध्य प्रदेश सरकार के माफिया मुक्ति अभियान के बाद ऐसे अनेक विवाद पूर्व में भी सामने आ चुके हैं। भाजपा पूरे प्रदेश में ही लगातार इस बात को उठाती रही है कि सरकार की नीयत दोषपूर्ण है। छोटे गांव-कस्बों से लेकर बड़े शहरों तक जानबूझकर भाजपा से जुड़े कार्यकर्ता- नेताओं को निशाना बनाया जा रहा है। अतिक्रमण हटाने के नाम पर नियम-कानून की अवहेलना भी की जा रही है। हालांकि जवाब के रूप में कांग्रेस के पास कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं, जिन्हें कथित रूप से कांग्रेस समर्थित माना जाता रहा है, प्रशासन ने उनके खिलाफ भी कार्रवाई की है। बहरहाल, एक और विवादित बयान से प्रदेश में भाजपा-कांग्रेस के बीच मैदानी लड़ाई और तेज हो गई है। लगता भी नहीं है कि स्थानीय निकायों के चुनाव में जुटे दोनों दल प्रदेश के राजनीतिक तापमान को अब जल्दी कम होने देंगे।

पहचान के लिए तरसता हनुमंतिया : खंडवा जिले का हनुमंतिया देश के सबसे बड़े बैक वाटर एरिया के लिए पहचाना जाता है। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग ने 2015 में यहां जल महोत्सव की शुरुआत की थी। तत्कालीन शिवराज सरकार की योजना थी कि गोवा की तरह हनुमंतिया को भी पर्यटन हब बनाया जाए। पर्यटन विभाग यहां वॉलीबॉल, कैंप फायर, स्टार गेजिंग, साइकलिंग, पैरासेलिंग, हॉट एयर बैलून, जैसी वाटर और एयर एक्टिविटी भी करवाता है। लेकिन पर्यटन को बढ़ाने के लिहाज से हनुमंतिया की इमेज बिल्डिंग और ब्रांडिंग अभी वैसी नहीं हो पाई है, जैसी अपेक्षा की जा रही है।

5.7%
पर्यावरण के नुकसान से होने वाली चपत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हिस्सेदारी

हम ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जब धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं से दुनिया हलकान है और भावी पीढ़ी को बेहतर भविष्य देने की चिंताओं को लेकर हम घुले जा रहे हैं। हालांकि इन सब के बावजूद नया साल, नई उम्मीदों की इबारत जरूर लिखेगा। कार्बन उत्सर्जन में कमी को लेकर दुनिया भारत की पीठ थपथपा चुकी है। कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्यों को पाने की होड़ से जहां दुनिया जूझ रही है, वहीं भारत अपने लक्ष्यों को समय से पूर्व ही प्राप्त कर लेगा। भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काफी काम हुआ है और अगले साल में भी यह काम और तेजी से आगे बढ़ेगा। बता रहे हैं **अभिषेक पारीक**:

पर्यावरण का करेंगे वरण

जलवायु परिवर्तन पर कार्ययोजना

जलवायु परिवर्तन को लेकर केंद्र और राज्य की योजनाओं को 2008 में स्वीकार किया गया था। इन योजनाओं के तहत राष्ट्रीय सौर मिशन और राष्ट्रीय उन्नत ऊर्जा दक्षता मिशन को अपने उद्देश्य हासिल करने में काफी सफलता मिली है। सौर ऊर्जा को लेकर भारत की स्थिति बेहतर है।

लक्ष्यों की ओर तेज कदम

कार्बन उत्सर्जन को रोकने में दुनिया के दूसरे देशों को जहां निराशा हाथ लग रही है, वहीं भारत ने इसे लेकर मजबूत इच्छाशक्ति जताई है। पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट के मुताबिक भारत न सिर्फ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ रहा है बल्कि वह इसे पाने की दिशा में करीब 15 फीसद तेज है। यह बताता है कि भारत पर्यावरण संरक्षण को लेकर कितना गंभीर है।

नमामी गंगे प्रोजेक्ट

2014 में देश की बागडोर संभालने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नमामी गंगे कार्यक्रम का आगाज किया था। केंद्र ने गंगा के संरक्षण और कायाकल्प के लिए 20 हजार करोड़ रुपयों का आवंटन किया। सुधार के लिए कई कार्यक्रम हुए। सरकार ने समस्या को गंभीरता से लिया। इसमें नदी के किनारे रहने वाले लोगों को शामिल किया गया, और उन्हें स्थायी आजीविका प्राप्त करने में मदद की और प्रभाव को पहले महसूस किया। इसने शहरी निकायों के साथ पंचायतराज संस्थानों तक काम किया। इसे समूहों के माध्यम से आगे बढ़ाया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम

दिल्ली सहित देश के कई बड़े शहरों की वायु गुणवत्ता प्रदूषण के कारण खराब होती जा रही है। ऐसे में इस कार्यक्रम के जरिए केंद्र का लक्ष्य 2024 तक पीएम 2.5 और पीएम 10 को 20 से 30 फीसद कम करने का है। इसे 102 शहरों में चलाया जाएगा जिनमें वायु की गुणवत्ता राष्ट्रीय परिवेश से भी बदतर है। सरकार पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पाने के लिए लगातार आगे बढ़ रही है, ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि यह लक्ष्य भी दूर नहीं है।

हरित कौशल विकास कार्यक्रम

यह कार्यक्रम जून 2017 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया। यह उन लोगों के बारे में बताता है कि जो पर्यावरण को संरक्षित करने और पुर्नस्थापित करने में योगदान देते हैं और एक स्थायी भविष्य का निर्माण करते हैं। यह पर्यावरण और वन क्षेत्र में युवाओं के बीच कौशल विकसित करने पर आधारित है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत मंत्रालय ने 10 स्थानों पर तीन महीने के लिए पाठ्यक्रम पेश किए।

125 करोड़ लगेंगे पेड़

राष्ट्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पिछले साल मंत्रालय संभालते ही 125 करोड़ पेड़ लगाने का संकल्प लिया था। माना जा रहा है कि उनका यह संकल्प इस साल तेजी से आगे बढ़ेगा। मोदी सरकार के पिछले कार्यकाल में गडकरी के काम को काफी सराहा गया था। इसलिए इस बार गडकरी के वादे से काफी उम्मीद हैं।

80 अरब डॉलर
पर्यावरण को नुकसान पहुंचने से भारतीय अर्थव्यवस्था को लगने वाली सालाना चपत

त्रिस्तरीय प्रयास बांधेंगे आस

पिछले कुछ दशकों में हुए आर्थिक विकास से देश लाभान्वित तो हुआ है पर हमने इसकी कीमत पर्यावरण को नुकसान पहुंचाकर चुकाई है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक पर्यावरण नुकसान के चलते हर साल भारतीय अर्थव्यवस्था को 80 अरब डॉलर की चपत लगती है। ऐसे में टिकाऊ विकास का लक्ष्य ऐसी तकनीकों की बदौलत ही हासिल हो सकेगा जो विकास के साथ पर्यावरण भी सहेजें। इसके लिए हमें तीन स्तर पर काम करना होगा।

नीतिगत दखल

टैक्स लगाकर लोगों को संसाधनों के अत्यधिक दोहन से रोका जा सकता है। इस तरह के टैक्स से मिली राशि पर्यावरण संरक्षण के काम आएगी।

संसाधनों का विकास

टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए देश को अपने प्राकृतिक संसाधनों की बढ़ोतरी पर ध्यान देना होगा। साथ ही सभी तरह की पारिस्थितिकी को बचाना होगा।

तैयार हो पैमाना : विकास को मापने के पारंपरिक तरीकों से काम नहीं चलेगा। पर्यावरणीय विकास के लिए ग्रीन ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट यानी ग्रीन जीडीपी इंडेक्स विकसित किया जाना चाहिए।

निजी स्तर पर उठें कदम

सरकार ने पर्यावरण बचाने के लिए तमाम नियम-कानून बना रखे हैं, लेकिन विकास की अंधी दौड़ उन्हें हमेशा ठेंगा दिखाती रही है। ऐसे में निजी स्तर पर लोग कुछ कदम उठाकर साथ-साथ पर्यावरण और विकास के सपने को हकीकत में बदल सकते हैं। इसके लिए ग्रीन इकोनॉमी यानी हरित अर्थव्यवस्था को अपनाना होगा। यही एक तरीका है जिसमें हम विकास के साथ अपने पर्यावरण को भी संरक्षित रख सकते हैं। जनकल्याण और सामाजिक सहभागिता में सुधार करते हुए पर्यावरणीय खतरों और पारिस्थितिकीय दुर्लभता को कम करना ही ग्रीन इकोनॉमी है। इसे बढ़ावा देने वाले तरीकों और उत्पादों में निवेश करें।

भवन निर्माण

- ऊर्जा ऑडिट द्वारा घर या ऑफिस की ऊर्जा लागतों में काफी बचत कर सकते हैं
- घर में साज-सज्जा या लैंडस्केपिंग के लिए ऐसी चीजों का चयन करें जिनका पर्यावरण पर बहुत असर न हो

जल

आपके छोटे से कदम से इस अनमोल संसाधन का संरक्षण संभव है।

परिवहन

कार पूलिंग या सार्वजनिक यातायात के इस्तेमाल से आप पर्यावरण पर पड़ने वाले असर और आर्थिक लागत दोनों को कम कर सकते हैं।

ऊर्जा आपूर्ति

आप ऐसे उत्पाद या कारोबार में निवेश करें जो स्वच्छ और नवीकृत ऊर्जा के विकास को बढ़ावा देते हों

पर्यटन

घर पर या घर से बाहर यात्रा के दौरान भी एक ही तरीके से आप ग्रीन इकोनॉमी का समर्थन कर सकते हैं। स्थानीय खरीदें, कई लोगों के साथ यात्रा करें, पानी और ऊर्जा का सीमित इस्तेमाल करें

मैन्युफैक्चरिंग और उद्योग

एक चतुर उपभोक्ता बनिए। उस कारोबार को बढ़ावा दें जिसके पास टिकाऊ योजनाएं हों, इकोलेबल्स को इस्तेमाल करें, नवीकृत ऊर्जा में निवेश करें

कृषि

अपनी उपभोक्ता ताकत का इस्तेमाल स्थानीय, कार्बनिक और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में करें

उत्तर पूर्व में हरित क्रांति ला रहे ग्रीन कमांडोज

जोरहाट: उत्तर पूर्व के प्रांतों में खाद्य सुरक्षा को लेकर लगातार चिंता की जाती रही है। सरकार भी प्रयत्नशील है कि उत्तर पूर्व में उन्नत और परंपरागत कृषि के बेहतर तालमेल से समस्या का समुचित समाधान पाया जाए। इसके साथ-साथ यहां की जैव विविधता को समृद्ध बनाए रखना भी चुनौती है। ऐसे में कम लागत वाली जैविक कृषि को समाधान के रूप में देखा जा रहा है। अरुणाचल प्रदेश के युवा किसान समीर बारदोलोई ने इस दिशा में अपने स्तर पर जो पहल की, उसे स्वीकारा और सराहा जा रहा है।

समीर ने स्प्रेड-एनई (सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ रूरल इकोनॉमी एंड एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट- नॉर्थ ईस्ट) नामक संगठन शुरू किया है। इस संगठन से करीब 3000 किसान जुड़े हैं। समीर ने ग्रीन कमांडोज नामक प्रोग्राम भी शुरू किया है। इसके तहत युवाओं को क्षेत्र के समक्ष उत्पन्न पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। समीर के पिता अरुणाचल प्रदेश में आइएएस अधिकारी रहे हैं। असम कृषि विवि से केमिकल एग्रीकल्चर की पढ़ाई करने के बाद समीर ने कृषि व्यवसाय में कदम रखा।

समीर कहते हैं, मैंने पाया कि एकल पद्धति, रासायनिक खाद और कीटनाशकों के बेतहाशा उपयोग और उन्नत कृषि के प्रति उदासीनता के चलते उत्तर पूर्व के किसान न केवल आर्थिक तौर पर पिछड़ रहे हैं, बल्कि मृदा, पर्यावरण और जैव विविधता की स्थिति भी उनके काबू से बाहर जा रही है। मैंने खुद इन समस्याओं से एक-एक कर जूझना शुरू किया। सफलता मिली तो दूसरों को भी जागरूक करने का मन बनाया।

समीर ने असम के जोरहाट में प्लांट हेल्थ क्लिनिक की भी शुरुआत की है, जहां वे जीरो-कास्ट जैविक कृषि के नुस्खे किसानों को देते हैं।

ताकि दुनिया न बने कबाड़खाना

पर्यावरण संरक्षण

अभिषेक दुबे, भोपाल

भोपाल का स्टार्टअप द कबाड़ीवाला डॉट कॉम सफलता के नए आयाम रच रहा है। करीब छह साल पहले अनुराग असाटी और कविंद्र रघुवंशी ने महज एक लाख रुपये से इसकी शुरुआत की थी। लोगों के घर का कबाड़ उठाने के लिए ऑनलाइन ऑर्डर लेना शुरू किया। अब तो इसका टर्नओवर 70 लाख रुपये के पार पहुंच गया है। भोपाल से शुरू हुआ यह स्टार्टअप अब देश के सात शहरों में अपनी जड़ें जमा चुका है। अन्य शहरों की ओर भी बढ़ रहा है।

कविंद्र बताते हैं कि खयाल आया कि कुछ अलग करना है, जिसमें रुपये भी मिले और पर्यावरण संरक्षण भी हो। इसी क्रम में आइडिया आया। दरअसल आजकल की लोगों के पास समय की बेहद कमी है। हर बात के लिए ऑनलाइन ऑर्डर दिए जा रहे हैं तो कबाड़ के लिए ऐसा क्यों नहीं। बस हो गई शुरुआत।

स्टार्टअप द कबाड़ीवाला डॉट कॉम के संस्थापक (बायें से) अनुराग असाटी और कवींद्र रघुवंशी। (फाइल फोटो) नवदुनिया

कबाड़ीवाला

- कबाड़ बेचने का ऑनलाइन लेते हैं ऑर्डर, ईको फ्रेंडली निस्तारण
- भोपाल से शुरू हुआ यह स्टार्टअप अब देश के सात शहरों में जमा चुका जड़ें

द कबाड़ीवाला डॉट कॉम वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन ऑर्डर लेने लगे। हालांकि शुरू के करीब चार-पांच महीने प्रचार-प्रसार के कारण काम थोड़ा ठीक नहीं चला। लेकिन इसके बाद ग्राहक ही सबसे बड़े प्रचारक बन गए। कवींद्र कहते हैं कि आज उनके पास करीब एक लाख ग्राहक हैं। इनमें से राजधानी में ही करीब 50 हजार हैं।

कैसे करता है काम : कवींद्र के मुताबिक कोई भी व्यक्ति हमारी वेबसाइट के जरिए आसानी से अपने घर का कबाड़ उठाने का ऑर्डर दे सकता है। कबाड़ कब उठाना है, इसका समय भी वो खुद ही तय करता है। वेबसाइट पर कबाड़ की कीमत भी अलग-अलग श्रेणी के अनुसार दे रखे हैं। ई कबाड़ को सुरक्षित निस्तारण के लिए भेजा जाता है। वहीं रीसाइकल हो सकने वाले कबाड़ को रीसाइकल यूनिट में भेजा जाता है। हम तय करते हैं कि प्रक्रिया ईकोफ्रेंडली हो।

यूट्यूब पर भी हिट..

इस स्टार्टअप पर बनी डॉक्यूमेंट्री यूट्यूब पर धूम मचा रही है। दो युवा संस्थापकों की सफलता की कहानी बताने वाली यह डॉक्यूमेंट्री केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से तैयार की गई है। इसे करीब साढ़े तीन लाख व्यूज मिल चुके हैं।

कृषि अवशेष से बना रहे ईकोफ्रेंडली बर्तन

मुंबई: स्टार्टअप पेपको ग्रीनवेयर पर्यावरण हितैषी बर्तनों के लिए पहचान बना चुका है। गन्ना, धान सहित अन्य फसलों के अवशेष से इन्होंने 150 तरह के ईकोफ्रेंडली बर्तन (प्लेट, ग्लास, कप, कटोरी, चम्मच, स्ट्रॉ...) तैयार किए हैं। इनकी मुंबई सहित देश के अनेक पांच सितारा होटलों में आपूर्ति हो रही है। सभी उत्पाद लोगों को पसंद भी आ रहे हैं। संस्थापकों का कहना है कि देश को प्लास्टिक कूड़े से मुक्त बनाने को लेकर देश के मूड को उन्होंने भांपा और इस दिशा में स्टार्टअप का निर्णय लिया।

इसकी शुरुआत तीन युवाओं- अनिल अग्रवाल, आदेश अग्रवाल और अभिषेक अग्रवाल ने बीते साल की।

पेपको ग्रीन वेयर स्टार्टअप टीम के सदस्य। फाइल फोटो

26 वर्षीय अनिल कहते हैं कि ये सभी उत्पाद सिंगल यूज के लिए हैं। उपयोग के बाद इनका निस्तारण बेहद आसान है क्योंकि ये पूरी तरह जैविक उत्पाद हैं और प्लास्टिक मुक्त हैं। दरअसल इस तरह के जो उत्पाद हैं, वे स्टायरोफोम से बन रहे हैं, जो जैविक नहीं है। दोनों हू-ब-हू दिखते हैं। लेकिन दोनों में यही अंतर है। हमारे अधिकांश उत्पादों का निर्माण गन्ने और बांस के अवशेष से किया जा रहा है, इससे किसानों को भी लाभ मिल रहा है।

पेपको के प्रोडक्ट इस समय देशभर की खाद्य और पेय (फूड एंड बेवरेज) इंडस्ट्री के 200 बड़े उद्यम खरीद रहे हैं। इनमें ताज ग्रुप ऑफ होटल्स, मैरिएट होटल्स, रिलायंस रिटेल, क्योरफिट और द बॉम्बे कैंटीन जैसे समूह शामिल हैं। अनिल ने बताया कि उन्होंने देश के विभिन्न शहरों में अब तक 80 आउटलेट्स शुरू कर दिए हैं, जहां यह सभी उत्पाद थोक और खुदरा में खरीदे जा सकते हैं। इसके अलावा पेपको ग्रीन वेयर के वेबसाइट पर भी ऑर्डर किये जा सकते हैं। उनकी योजना जल्द ही 500 आउटलेट्स खोलने की है।

सोलर ऊर्जा से बचा रहे जल और जीवन

शशि कुमार मिश्र, बेतिया : बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के कृषकों ने जल और पर्यावरण संरक्षण की मिसाल पेश की है। सिंचाई के लिए पानी के साथ ही बिजली और डीजल बचाने के उद्देश्य से नौतन प्रखंड के मनियारी झखरा गांव के 32 किसानों ने समूह बनाकर सुनियोजित सिंचाई शुरू की। इससे एक तो 30 फीसद पानी की बर्बादी रुक गई। सौर ऊर्जा के चलते बिजली का खर्च भी शून्य है।

35 एकड़ खेत की हो जाती है सिंचाई : किसानों ने एक साल पहले इस ओर कदम बढ़ाया। संजय कुमार कुशवाहा की पहल पर एक-एक कर छोटी जोत के 32 किसान इसमें शामिल हो गए। शीतल किसान सिंचाई समूह बनाया गया। सोलर पंप लगाने के साथ सभी किसानों के खेतों में तीन हजार फीट लंबी पाइप लाइन बिछाई गई। सिंचाई के लिए 12 आउटलेट बनाए गए। इसे लगाने में साढ़े सात लाख रुपये खर्च हुए। इसमें सोलर पंप पर चार लाख, आउटलेट एवं पाइप पर 2.75 लाख सहित अन्य खर्च शामिल हैं। इससे 35 एकड़ खेत की सिंचाई आसानी से हो जाती है।

समूह के अध्यक्ष संजय कुमार कुशवाहा बताते हैं कि इसकी प्रेरणा दलहन विकास परियोजना के प्रतिनिधि सिद्धार्थ कुमार से मिली। उन्होंने जल संरक्षण का महत्व बताने के साथ इसे अपनाने की सलाह दी। इसे लगाने में दलहन विकास परियोजना के तहत आगा खां फाउंडेशन से छह लाख अनुदान भी मिला।

- जल-पर्यावरण संरक्षण में पश्चिम चंपारण का शीतल किसान सिंचाई समूह पेश कर रहा मिसाल
- 32 किसान मिलकर 35 एकड़ में कर रहे सिंचाई, 30 फीसद जल की हो रही बचत

मिल रही सराहना...

जल और बिजली-डीजल की बर्बादी रोकने के लिए नौतन प्रखंड के मनियारी झखरा गांव के किसानों के सोलर सिंचाई मॉडल को खूब सराहना मिल रही है।

नौतन प्रखंड के मनियारी झखरा में किसान की ओर से लगाया गया सोलर पैनल। जागरण

समूह से जुड़ीं किसान सुगांती देवी बताती हैं कि सोलर पंप होने से बिजली का झंझट नहीं। बारिश का मुंह भी नहीं देखना पड़ता। खेती की लागत कम होने के साथ आमदनी बढ़ गई है। इन किसानों की सफलता से प्रेरित बैरिया प्रखंड के भी 24 किसानों ने समूह बनाया है। इसके अध्यक्ष जय नारायण प्रसाद कहते हैं कि वास्तव में यह व्यवस्था लाभदायक है।

दलहन विकास परियोजना के अध्यक्ष प्रो. प्रकाश की मानें तो कच्ची व खुली नालियों से सिंचाई में वाष्पीकरण और बहने से काफी पानी बर्बाद हो जाता है। लेकिन इस विधि में पानी का भरपूर उपयोग हो पाता है क्योंकि पाइप से पौधों की जड़ तक पानी पहुंचाया जाता है।

जिला कृषि पदाधिकारी विजय प्रकाश किसानों के इस प्रयास को प्रेरणादायक बताते हैं। अन्य किसानों को भी इस राह पर चलने की सलाह देते हैं।

नेचर ऑल : 'वेस्ट' को 'बेस्ट' बना रहीं पूर्णिमा

प्रकाश पांडेय, कोलकाता

फटी-पुरानी जींस अब थैली बनकर बाजार घूम रही है। रद्दी अखबार पेंसिल का रूप लेकर कागज पर चल रहे हैं और पुरानी साड़ियां अब पर्दा बनकर खिड़कियों की शोभा बढ़ा रही है। जो बेकार पड़े थे अब उनकी पूछ फिर से बढ़ गई है।

यह सब हुआ है 42 साल की पूर्णिमा लोहिया की बदौलत। पूर्णिमा ने वेस्ट को बेस्ट बनाने का बीड़ा उठाया है। वे कचरे की रिसाइकलिंग कर पर्यावरण संरक्षण में जुटी हैं। उनका प्रयास अब सोशल मीडिया पर मुहिम का रूप ले चुका है। नेचर ऑल' नाम वाली इस मुहिम से वर्तमान में 20 हजार से अधिक घरेलू महिलाएं जुड़ी हैं।

- बेकार चीजों की रिसाइकलिंग कर पर्यावरण संरक्षण में हैं जुटीं
- 'नेचर ऑल' से जुड़ी हैं 20 हजार से अधिक महिलाएं

पूर्णिमा ने 2013 में नेचर ऑल' नाम से सोशल मीडिया पर ग्रुप बनाया। उद्देश्य था वेस्ट को बेस्ट बनाना। आठ-दस महिलाओं के साथ इसका सफर शुरू हुआ। नेचर ऑल के जरिए प्लास्टिक का इस्तेमाल न करने के प्रति जागरुकता फैलाई जाती है। घर में बेकार पड़ी चीजों को काम की वस्तुओं में कैसे बदले, इस बारे में भी बताया जाता है। महिलाओं के लिए हर महीने जीरो वेस्ट मीट का आयोजन किया जाता है। इसके तहत सफाईकर्मियों को सम्मानित भी किया जाता है। ग्रुप की महिलाएं अखबार से पेंसिल तैयार कर स्कूली बच्चों में बांटती हैं। पुराने कपड़ों से निर्मित घरेलू साज-सामान को शादी-ब्याह में बतौर उपहार भेंट किया जाता है।

नेचर ऑल का मिशन 2020: नेचर ऑल ने नए साल के लिए कई नए लक्ष्य तय किए हैं। इसमें मोहल्ला कमेटी से लेकर कांप्लेक्स हाउस वूमेन सेल व आंचलिक कमेटी का गठन शामिल है। इसमें शामिल सभी महिलाओं की स्वच्छता के प्रति जवाबदेही तय की जाएगी। पूर्णिमा ने कहा-हमारा केवल एक ही मंत्र है। कुछ भी बेकार नहीं होता। दमदम इलाके में रहने वाली पूर्णिमा के परिवार में पति व एक बेटा है।

100 अरब से भी ज्यादा वाट्सएप संदेश भेजे गए दुनियाभर में नववर्ष के उपलक्ष्य में। ये संदेश 30 दिसंबर से 31 दिसंबर की रात 12 बजे तक 24 घंटों के दौरान भेजे गए। भारत में ही केवल 20 अरब मैसेज भेजे गए।

हंपी : 64 खानों के खेल की रानी

सुर्खियों में

वरुण आनंद, नई दिल्ली

2019 के खत्म होते-होते खेल की दुनिया से एक शानदार खबर आई। देश की सबसे युवा ग्रैंडमास्टर रह चुकीं कोनेरू हंपी ने मॉस्को में महिला विश्व रैपिड चैंपियनशिप अपने नाम की और विश्वनाथन आनंद के बाद यह खिताब जीतने वाली दूसरी भारतीय खिलाड़ी बनीं। केवल पांच साल की उम्र से ही काले-सफेद मोहरों की चाल समझने वाली हंपी ने कई खिताब अपने नाम किए हैं और अर्जुन अवॉर्ड व पद्मश्री से भी सम्मानित हो चुकी हैं। जानते हैं उनके अब तक के सफर के बारे में...

दुनिया को शतरंज देने वाले देश भारत में जब भी इस खेल का जिक्र होता है तो सबसे पहले हर किसी के जहन में एक ही नाम उभरता है, विश्वनाथन आनंद। ...लेकिन एक नाम और भी है, जिसने इस खेल में देश का परचम अंतरराष्ट्रीय फलक पर बुलंद किया। इन्हें क्वीन ऑफ 64 स्क्वेर यानी 64 खानों के खेल की रानी कहा जाता है। हम बात कर रहे हैं भारत की सबसे युवा ग्रैंडमास्टर रह चुकीं 32 वर्षीय कोनेरू हंपी की, जिन्होंने बीते दिनों मॉस्को में महिला विश्व रैपिड चैंपियनशिप में चीन की लेई टिंगजी को टाईब्रेक की सीरीज में हराकर खिताब जीता। विश्वनाथन आनंद ने 2017 में यह खिताब ओपन वर्ग में जीता था और हंपी मौजूदा प्रारूप में रैपिड स्वर्ण पदक जीतने वाली केवल दूसरी भारतीय हैं। भले ही यह उनका पहला विश्व खिताब हो, लेकिन छोटी सी उम्र में ही हंपी ने इस खेल में जो कीर्तिमान स्थापित किए थे उससे हर किसी को उनसे बड़ी उम्मीदें थीं और उन्होंने यह खिताब जीतकर 2019 को शानदार तरीके से अलविदा कहा।

31 मार्च, 1987 को आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में जन्मी हंपी का नाम रखते वक्त शायद ही उनके पिता कोनेरू अशोक ने सोचा होगा कि बेटी एक दिन शतरंज की चैंपियन बन जाएगी। दरअसल, हंपी का मतलब ही होता है चैंपियन। हालांकि, उनके पिता की हमेशा से इच्छा थी कि बेटी एक दिन इस खेल की चैंपियन बने। हंपी को यह खेल पिता से ही विरासत में मिला, जो स्वयं दो बार स्टेट चैंपियन रहे। हंपी जब पांच साल की थीं, तभी से उनके पिता ने काले-सफेद मोहरों से उनका परिचय कराना शुरू कर दिया था। उन्होंने हंपी को पोलगर बहनों सुसान और सोफी की कहानी सुनाई। नन्ही हंपी उनसे बेहद प्रेरित हुईं।

कोनेरू हंपी फाइल

जब पहली बार दिखी प्रतिभा

हंपी जब छह साल की थीं, तब ऐसा हुआ जिसके बाद उनके पिता ने ठान लिया कि बेटी को शतरंज खिलाड़ी ही बनाना है। दरअसल, पिता को खेलते देखते वक्त हंपी ने उन्हें एक चाल बताई। वह चाल एकदम सटीक थी। छोटी सी उम्र में बेटी हंपी की प्रतिभा देख अशोक ने उन्हें कोचिंग देना शुरू कर दिया। वह ही इस खेल में हंपी के द्रोणाचार्य बने। रसायन विज्ञान के अध्यापक रहे अशोक ने उस वक्त अपनी नौकरी छोड़ने का फैसला लिया, जब हंपी को इस खेल में चौथा स्थान मिला था। तब हंपी की उम्र मात्र आठ साल थी। उन्होंने पूरी तरह से हंपी को कोचिंग देने का फैसला किया और फिर बेटी ने वो करना शुरू किया जिसका सपना पिता ने देखा था। नन्ही अंगुलियों से शतरंज की बिसात पर ऐसी चालें चलीं कि सामने वाले देखते ही रह गए। मात्र नौ साल की उम्र में हंपी नेशनल चैंपियन बनीं। वर्ल्ड गर्ल्स अंडर 10, 12, 14 और 20 सभी चैंपियनशिप जीतीं।

दो साल तक रहीं शतरंज से दूर

हंपी 2014 में दसारी अनवेश से विवाह बंधन में बंधी। इसके बाद वह मां बनीं और शतरंज से दो साल तक दूर रहीं। 2018 में उन्होंने वापसी की और जल्द ही अपनी वापसी को शानदार बनाया। उन्होंने स्कोलोवो महिला जीपी जीती और अब विश्व रैपिड चैंपियन बनीं।

ये खिताब किए अपने नाम

1997	वर्ल्ड अंडर-10 चैंपियन
1998	वर्ल्ड गर्ल्स अंडर-10 और अंडर-12 चैंपियन
1999	एशिया की सबसे युवा महिला इंटरनेशनल मास्टर
2000	एशियन गर्ल्स अंडर-20 चैंपियन
2001	वर्ल्ड गर्ल्स अंडर-14 चैंपियन
2001	वर्ल्ड गर्ल्स अंडर-20 चैंपियन
2000	ब्रिटिश लेडीज चैंपियनशिप जीतने वाली सबसे युवा खिलाड़ी
2002	एक बार फिर ब्रिटिश लेडीज टाइटल हासिल किया
2001	एशिया की सबसे युवा महिला ग्रैंडमास्टर
2002	15 साल 1 महीने, 27 दिन की उम्र में सबसे युवा ग्रैंडमास्टर चैंपियन बनने का गौरव
2003	अर्जुन अवॉर्ड
2007	पद्मश्री सम्मान
2019	वर्ल्ड रैपिड चैंपियन

सबसे बड़ी जिम्मेदारी

चर्चित चेहरा

सर्वेश कुमार, नई दिल्ली

पूर्व थल सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत को केंद्र सरकार ने सीडीएस का पद सौंप सबसे बड़ी जिम्मेदारी दे दी है। इसके लिए केंद्र को सेना के नियमों में भी संशोधन करना पड़ा। अब वह तीनों सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल बनाने का काम करेंगे...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान लालकिले की प्राचीर से जब थलसेना, नौसेना और वायुसेना के बीच तालमेल सुनिश्चित करने और उन्हें प्रभावी नेतृत्व देने के लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के पद का एलान किया था तभी से सबकी निगाहें इस बात पर थीं कि इस पद पर पहला मौका किसे मिलेगा। साल के अंतिम हफ्ते में यह लगभग साफ हो गया था कि यह पद तत्कालीन थलसेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत को मिलेगा और 30 दिसंबर को आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि भी कर दी गई। नए साल के पहले दिन उन्होंने सीडीएस के तौर पर कार्य भी संभाल लिया। सबसे बड़ी बात यह है कि जनरल रावत पर सरकार को इतना भरोसा है कि उसने 30 दिसंबर को ही सीडीएस पद के लिए सेना के नियमों में संशोधन कर उम्र की सीमा को बढ़ाकर 65 साल करने का फैसला किया।

पिता से रहे हैं प्रभावित : जनरल बिपिन रावत बचपन से ही पिता लक्ष्मण सिंह रावत से काफी प्रभावित थे। सेना में उच्च पद पर कार्यरत उनके पिता का रौब, अनुशासन और देशभक्ति का जज्बा हर वक्त उन्हें सेना में जाने के लिए आकर्षित करता था। यही वजह रही कि उन्होंने 12वीं की पढ़ाई के बाद एनडीए (नेशनल डिफेंस एकेडमी) की परीक्षा दी और सफलता हासिल की। रावत गोरखा ब्रिगेड में कमीशन पाकर सेना प्रमुख के पद तक पहुंचने वाले पांचवें अफसर हैं।

शुरुआत से ही रहे अव्वल : 16 मार्च, 1958 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में जन्मे बिपिन रावत के पिता लक्ष्मण सिंह रावत लेफ्टिनेंट जनरल पद से सेवानिवृत हुए। कैंब्रियन हॉल स्कूल, देहरादून और सेंट एडवर्ड स्कूल, शिमला से स्कूली शिक्षा के बाद बिपिन रावत एनडीए की परीक्षा में सफलता हासिल करने के बाद इंडियन मिलिट्री एकेडमी, देहरादून पहुंचे। वहां उन्होंने स्वॉर्ड ऑफ ऑनर पाने में कामयाबी पाई। इसके बाद उन्होंने डिफेंस सर्विस स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन से स्नातक किया। उन्हें 16 दिसंबर, 1978 को 11 गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में कमीशन मिला। उनके पिता भी इसी बटालियन से संबद्ध रहे थे।

चुनौतियों की है जानकारी : मेजर के तौर पर उन्होंने उड़ी (जम्मू-कश्मीर) में एक कंपनी का नेतृत्व किया। कर्नल के तौर पर उन्होंने अपनी बटालियन का पूर्वी क्षेत्र में लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के समीप नेतृत्व किया। इसके बाद बतौर ब्रिगेडियर उन्होंने राष्ट्रीय राइफल्स की पांच सेक्टरों का सोपोर में अगुआई की। वह दो बार डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड के मुखिया भी रह चुके हैं। जनरल रावत को अशांत इलाकों में काम करने का लंबा अनुभव है। सेना के पुनर्गठन, पश्चिमी इलाकों में आतंकवाद और पूर्वोत्तर में जारी संघर्ष को जनरल रावत से बेहद करीब से देखा है।

हासिल कर चुके हैं कई मेडल

40 वर्षों से अधिक के कार्यकाल के दौरान जनरल बिपिन रावत परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, सेना मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल और दो बार थलसेना प्रमुख व एक बार थलसेना कमांडर से प्रशंसा हासिल कर चुके हैं।

सरकार की भी पसंद

जनरल बिपिन रावत शुरू से ही केंद्र सरकार को पसंद रहे हैं। दिसंबर, 2016 में जब उन्हें सेना प्रमुख का कार्यभार सौंपा गया था तब सरकार ने उनसे वरिष्ठ दो अफसरों के दावों को खारिज कर दिया था। अब जब सीडीएस पद के लिए उम्र की बाधा सामने आई तो रक्षा मंत्रालय ने अधिसूचना जारी कर उम्र सीमा को बढ़ाकर 65 साल कर दिया।

लीक से हटकर सोचने वाले सैन्य अफसर

जनरल बिपिन रावत को देश की सुरक्षा व्यवस्था और सेना के समक्ष मौजूद चुनौतियों की जानकारी है। कई मोर्चों को संभालने के कारण वह यह भी जानते हैं कि संसाधनों की कमी के बीच सैनिकों को अपनी जिम्मेदारी निभाने में कितनी परेशानी आती हैं। उनकी सफलता का सबसे बड़ा राज यह है कि वे चीजों को एकपक्षीय नजरिये से नहीं देखते। वह हमेशा लीक से हटकर सोचते हैं और नया करने की कोशिश करते हैं। सेना प्रमुख रहते हुए वह सैन्य अधिकारियों को मिलने वाली सुविधाओं पर भी आपत्ति जता चुके हैं। उनका मानना है कि सेना और आम लोगों के बीच मेलजोल बढ़ना चाहिए, तभी ये एक-दूसरे के बारे में बेहतर समझ विकसित कर सकेंगे।

राष्ट्रीय सुरक्षा और नेतृत्व पर लिख चुके हैं कई लेख

जनरल बिपिन रावत 'राष्ट्रीय सुरक्षा' और 'नेतृत्व' पर कई लेख लिख चुके हैं जो विभिन्न पत्रिकाओं और प्रकाशनों में प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से रक्षा अध्ययन में एमफिल की डिग्री हासिल की है। सैन्य मीडिया रणनीतिक अध्ययन पर शोध पूरा करने पर 2011 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से उन्हें डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) से की उपाधि भी मिल चुकी है।

सातवें 'आसमान' से एक कदम दूर

इनसे मिलिए

पासा राम धत्तरवाल, उकलाना (हिसार)

पिता ने बॉक्सर बनाने का सपना देखा था, लेकिन उनके जाने के बाद बेटी की जिंदगी निराशा से भर गई। फिर होश संभाला और सेवेन समिट अभियान पर निकल पड़ीं। गत बुधवार को इस अभियान के तहत उन्होंने दक्षिणी अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी अकोंकागुआ को फतह किया और साबित कर दिया कि डर के आगे अनीता कुंडू हैं...

दक्षिणी अमेरिका के अकोंकागुआ की चोटी पर तिरंगा फहरातीं अनीता कुंडू। सौजन्य : परिजन

गत वर्ष 20 दिसंबर को एक ऐसा मिशन शुरू हुआ था जो इतिहास में दर्ज होने वाला था। वह था दक्षिणी अमेरिका की सबसे ऊंची चोटी अकोंकागुआ को फतह करने का। 10 सदस्यों के दल में हरियाणा की अनीता कुंडू भी शामिल थीं। माइनस 50 डिग्री सेल्सियस की खून जमा देने वाली ठंड और सामने दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा शिखर। पांच दिनों तक उनका हिसार में अपने परिजनों से संपर्क तक नहीं हो सका। घर वाले भी सांसें थामे अच्छे समाचार का इंतजार कर रहे थे। ...और फिर गत बुधवार यानी नए साल की रात जो खबर मिली उसने न केवल घरवालों बल्कि पूरे देश को नववर्ष का तोहफा दे दिया। अकोंकागुआ पर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा था। उसे थामे थीं सेवेन समिट अभियान पर निकलीं देश की बेटी अनीता कुंडू। उन्होंने सेटेलाइट के माध्यम से सूचना दी कि वह बुधवार को भारतीय समयनुसार 12 बजकर पांच मिनट पर अकोंकागुआ को फतह कर चुकी हैं। उन्होंने अपने सेवेन समिट अभियान के तहत छठे महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी को फतह करने का गौरव हासिल किया।

आज दुनिया के शीर्ष शिखरों को छू रहीं अनिता का जन्म आठ जुलाई, 1986 को हरियाणा के हिसार जिले के फरीदपुर गांव में एक किसान परिवार में हुआ था। चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी अनीता को उनके पिता ईश्वर सिंह बॉक्सर बनाना चाहते थे, लेकिन फिर एक ऐसी घटना हुई जिसने उनकी जिंदगी को कुछ समय के लिए पटरी से उतार दिया। 2001 में उनके सिर से पिता का साया उठ गया। किसी तरह पढ़ाई जारी रखी। ग्रेजुएट तक शिक्षा हासिल करने वालीं अनीता कॉलेज के दिनों में पहाड़ों पर घूमने गई थीं। वहां किसी ने उन पर तंज कसा कि पहाड़ों पर चढ़ना लड़कियों का काम नहीं। यहीं उनको उनकी जिंदगी का मकसद और पिता के उन्हें खिलाड़ी बनाने के सपने को पूरा करने का रास्ता मिल गया। उन्होंने ठान लिया कि सातों शीर्ष चोटियों पर चढ़ाई करेंगी। शुरू में रिश्तेदारों ने सहमति नहीं दी, लेकिन वह डटी रहीं। इसी क्रम में गत बुधवार को उन्होंने छठे शिखर को फतह किया। इससे पहले वह एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप व अंटार्कटिका की चोटियों पर तिरंगा फहरा चुकी हैं। उत्तरी अमेरिका की देनाली चोटी को वह खराब मौसम के कारण फतह नहीं कर पाई थीं। बस सही उनके सेवेन समिट में बाकी है, जिसके लिए वह फिर प्रयास करेंगी।

तीन बार एवरेस्ट फतह : 2008 में हरियाणा पुलिस में कांस्टेबल पद पर भर्ती हुईं अनीता तीन पर माउंट एवरेस्ट को फतह कर चुकी हैं। वह इकलौती भारतीय महिला हैं, जिन्होंने नेपाल और चीन दोनों तरफ से एवरेस्ट को फतह किया है। 2011 में उन्होंने लेह-लद्दाख की 22 हजार फीट ऊंची चोटी पर चढ़ाई की। 2011 में ही उत्तराखंड की सतोपंथ की 23 हजार फीट ऊंची चोटी पर चढ़ाई की।

सेवेन समिट में ये फतह

एशिया-माउंट एवरेस्ट	☑
दक्षिणी अमेरिका अकोंकागुआ	☑
उत्तरी अमेरिका-देनाली	बाकी
अफ्रीका-किलिमंजारो	☑
यूरोप-एल्ब्रुस पर्वत	☑
अंटार्कटिका-विंसन मैसिफ	☑
ऑस्ट्रेलिया-पुंचाक जाया	☑

13 साल की उम्र में 120 भाषाओं की 'कोकिला'

अद्भुत प्रतिभा

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

अगर किसी चीज की लगन लग जाए तो छोटी सी उम्र में भी मुश्किल से मुश्किल और बड़े से बड़े काम आसानी से किए जा सकते हैं। इस बात को चरितार्थ कर दिखाया है सुचेता सतीश ने, जिनकी उम्र तो मात्र 13 साल है, लेकिन वह 120 भाषाओं में गीत गा सकती हैं। उनकी इसी प्रतिभा के चलते उन्हें ग्लोबल चाइल्ड प्रॉडिगी अवाड्र्स 2020 के लिए चुना गया है...

अगर किसी से 120 भाषाओं के बारे में पूछ लिया जाए तो शायद ही कोई हो जो इनके नाम गिना सके, लेकिन भारत की एक बेटी ऐसी भी है जो इतनी भाषाओं में गाने गाती है। हम बात कर रहे हैं 13 साल की सुचेता सतीश की, जिन्हें गत शुक्रवार को ग्लोबल चाइल्ड प्रॉडिगी अवाड्र्स 2020 के लिए चुना गया है। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दुबई शहर में रहने वाली सुचेता की जड़ें केरल से जुड़ी हैं। उनकी इस अद्भुत प्रतिभा के लिए उन्हें इस पुरस्कार के लिए चुना गया है।

सुचेता के मुताबिक, उन्हें उनके दो कीर्तिमानों की वजह से इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। पहला वह जिसमें उन्होंने एक कंसर्ट में सर्वाधिक भाषाओं में गाने का कीर्तिमान बनाया था और दूसरा, जिसमें सबसे लंबे समय तक सीधे प्रसारण में गीत गाए थे।

विश्व पटल पर सुचेता सुर्खियों में तब आई थीं, जब उन्होंने दुबई स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास में 102 भाषाओं में लगातार छह घंटा 15 मिनट तक गाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया था। यही कीर्तिमान उनके इस सम्मान का आधार बना। दुबई के इंडियन हाई स्कूल में पढ़ रही सुचेता को उनके स्कूल में स्वर कोकिला कहकर बुलाया जाता है।

ऐसे हुई शुरुआत : कहते हैं, बालमन पर अगर किसी चीज की छाप पड़ जाए तो कई बार वह इतनी गहरी होती है कि जिंदगी ही बदल देती है। कुछ ऐसा ही सुचेता के साथ हुआ। एक दिन सुचेता के पिता टीसी सतीश एक मित्र उनके घर आए और उन्होंने जापानी में एक गीत गया। वह सुचेता को इतना पसंद आया कि उन्होंने भी उसका रियाज शुरू कर दिया। शुरुआत में उन्होंने जापानी और अरबी में गीत गाने शुरू किए। चूंकि वह स्कूल में अरबी भी पढ़ रही थीं, इसलिए उनके लिए इस भाषा में गाना आसान था, लेकिन इसके बाद जो सिलसिला शुरू हुआ वह अभी तक जारी है। फिर अंग्रेजी, डच, जर्मन, हिब्रू, गुजराती, हरियाणवी, भोजपुरी, असमिया, मंदारिन, मंगोलियन, फारसी, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, ग्रीक... सहित 120 भाषाओं में गीत आसानी से गाने लगीं।

इतने समय में एक गाना याद : सुचेता की स्मरणशक्ति ऐसी है कि गाना किसी भी भाषा का हो, उन्हें आधे घंटे से दो घंटे के बीच याद हो ही जाता है। यह समय इस पर निर्भर करता है कि गाना कितना लंबा है। सुचेता ने हाल ही में मलयालम सुपरस्टार मम्मूटी और अभिनेता उन्नी मुकुंदन की उपस्थिति में अपना दूसरा अलबम 'या हबीबी' जारी किया।

पश्मीना पर भी जलवायु परिवर्तन की मार

14 हजार फीट से अधिक की ऊंचाई, सर्दियों में बर्फ से पूरी तरह ढका पठार, माइनस 40 डिग्री फारेनहाइट तक गिरकर हड्डियों तक को गला देने वाला तापमान। ऐसी दुश्कर परिस्थितियों में यह यकीन करना तक मुश्किल है कि बर्फ के विशाल रेगिस्तान में कोई जीवित भी रह सकता है। भारत और चीन के पठार पर स्थित चांगथांग का विशाल रेगिस्तान हिमालय और काराकोरम पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित है। यह अत्यंत दुर्लभ चांगरा बकरी का घर है, जिसे हम पश्मीना बकरी के नाम से भी जानते हैं। पश्मीना ऊन की बनी वस्तुओं के मुरीदों की दुनिया में कोई कमी नहीं है। जलवायु परिवर्तन ने बकरी की इस प्रजाति को भी अपने कोप का शिकार बना लिया है। वैज्ञानिकों के अनुसार तमाम प्रतिकूल हालातों के साथ अब इस खास ऊन की गुणवत्ता और उत्पादकता में काफी गिरावट दिखी है।

मानव बालों से आठ गुना पतला

चांगरा बकरी के बाल की चौड़ाई महज 12 माइक्रान होती है जो इंसानी बालों से करीब आठ गुना पतले होते हैं। एक सामान्य भेड़ की ऊन से आठ गुना ज्यादा गर्म होते हैं। इस शानदार रेशे को पश्मीना के रूप में जाना जाता है, जो दुनिया में सबसे नर्म और सबसे महंगी कश्मीरी ऊन है। यहां के चांगपा खानाबदोश लोग इन बकरियों को चराते घूमते रहते हैं।

जलवायु परिवर्तन से बढ़ी मुश्किलें

अब चांगपा का जीवन जीने का प्राचीन तरीका जलवायु परिवर्तन और चीन से नकली पश्मीना आयात के डर के साए में है। पिछले कुछ वर्षों से यहां तेजी से ज्यादा बर्फबारी हो रही है। अप्रत्याशित बर्फबारी चरवाहों के लिए बड़ी असुविधा है।

पश्मीना बकरी का क्लोन

इस बीच, कश्मीर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने दुनिया की पहली पश्मीना बकरी का क्लोन तैयार किया। 2012 में नूरी का जन्म हुआ। लेकिन व्यापक रूप से क्लोन का उपयोग करने का विचार चांगपा चरवाहों के बीच विवादास्पद साबित हो चुका है। वे अपने बौद्ध विश्वासों के कारण इसे ठीक नहीं मानते हैं।

गुणवत्ता पर पड़ रहा असर

वैज्ञानिकों के अनुसार जलवायु परिवर्तन इस क्षेत्र में पश्मीना उत्पादन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। बर्फबारी के बावजूद, सर्दियां गर्म हो रही हैं। यह मूल्यवान पश्मीना ऊन की गुणवत्ता और मात्रा को कम करती हैं। गर्म तापमान का मतलब है कि बकरियां इस तरह के मोटे अंडरकोट नहीं उगाती हैं। यह नर्म फर की उपज को कम करते हैं, जिसे मोटे बाहरी फर से अलग करना कठिन होता है।

पलायन बड़ी समस्या

चांगथांग पठार के दर्जनों घुमंतू परिवार 180 किलोमीटर दूर लेह के बाहरी इलाके में अपने गांव खरनाक से दूर चले जाते हैं। वहां चरवाहों ने अपना खानाबदोश जीवन छोड़ दिया है। यदि मौसम का यही पैटर्न जारी रहा तो यह चांगथांग पर पश्मीना बकरी पालन पर अपरिवर्तनीय प्रभाव हो सकता है।

चीन कर रहा है मांग पूरी

लद्दाख के चरवाहों से पश्मीना ऊन की कमी के चलते कश्मीर के बुनकरों ने अपने उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए चीन और मंगोलिया से कच्ची पश्मीना आयात करना शुरू कर दिया है।

एक शॉल में 180 घंटे

पश्मीना के लिए बसंत के मौसम में बकरियों के बालों की कटाई की जाती है। इसके बाद अच्छे फाइबर को हाथ से अलग किया जाता है। एक बार साफ करने के बाद एक कश्मीरी बकरी से उपयोगी ऊन मात्र चार औंस तक होती है। रेशों को फिर हाथ से काटा जाता है। इसके बाद ही बुनाई की प्रक्रिया शुरू होती है। एक पश्मीना शॉल बनाने में करीब 180 घंटे लग सकते हैं। वहीं बड़ी वस्तुओं को लकड़ी के करघे पर बुनाई के लिए उच्च कुशल कारीगरों को कई महीने या एक साल भी लग सकता है। फिर उन्हें दुनिया भर में निर्यात किया जाता है

यूको बैंक ने की 800-900 करोड़ रुपये एनपीए की वसूली

कोलकाता : सरकारी क्षेत्र के कर्जदाता यूको बैंक ने पिछले वर्ष दिसंबर तिमाही के दौरान चार बड़े एनपीए खातों से 800-900 करोड़ रुपये रिकवर कर लिए हैं। बैंक के सीईओ और एमडी एके गोयल ने बताया कि रत्तनइंडिया पावर, एस्सार स्टील, रुचि सोया और प्रयागराज पावर में फंसा हुआ कर्ज वापस हासिल कर लिया गया है। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि बैंक को किससे और कितना कर्ज वापस मिला है। इस दौरान गोयल ने बताया कि बैंक छह जनवरी से 45 दिन का लोन मेला शुरू करने जा रहा है। (प्रेट्र)

एयर इंडिया चलती और विस्तार करती रहेगी। यह अभी भी देश की सबसे बड़ी एयरलाइन कंपनी है। इसके बंद होने की चर्चा निराधार है।
— अश्वनी लोहानी
सीएमडी, एयर इंडिया

बजट पर उद्योग जगत से सीधे बात कर रहे पीएम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- बड़े उद्योगपतियों के साथ पीएम मोदी की बैठकों का दौर जारी
- बैठक में कोई दूसरा मंत्री और अधिकारी नहीं रहता मौजूद

देश की अर्थव्यवस्था के समक्ष उपजी चुनौतियों से निपटने के लिए अब सभी की नजर आगामी बजट पर है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बजट को लेकर अनोखे तरीके से उद्योग जगत से चर्चा शुरू की है। पिछले दिनों मोदी की तरफ से देश के कुछ जाने-माने उद्यमियों को चर्चा के लिए बुलाया गया था। बजट पर चर्चा का यह कोई पहला वाकया नहीं था। लेकिन इसमें अनोखी बात यह थी कि बैठक में किसी दूसरे मंत्री या अधिकारियों को नहीं बुलाया गया था। कई दौर में चलने वाली यह बैठक पिछले हफ्ते हुई है और कुछ बैठकें प्रस्तावित हैं। यह बैठक यह भरोसा पैदा करने वाला है कि उद्योग जगत के सुझावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा।

सूत्रों के मुताबिक बैठक का माहौल गंभीर रखा गया था, लेकिन यह भी सुनिश्चित किया गया कि हर उद्योग का प्रतिनिधि अपनी बात बेहिचक रखे। पीएम की तरफ से खुद यह आग्रह किया गया कि तारीफ करने की जगह सरकार की नीतियों में संभावित सुधार से संबंधित सुझाव दिए जाएं। आगामी बजट में सरकार क्या कदम उठा सकती है, इस पर भी उद्योग की राय मांगी गई। एसबीआइ के चेयरमैन रजनीश कुमार, कोटक महिंद्रा बैंक के चेयरमैन उदय कोटक, एचडीएफसी के एमडी आदित्य पुरी, आइटी उद्योग के टीवी मोहनदास पई, पीरामल समूह के अजय पीरामल समेत उद्योग संगठन सीआइआइ व फिक्की से जुड़े उद्यमी भी बैठक में शामिल थे। बताया जा रहा है कि सबसे ज्यादा सुझाव न्यायिक व्यवस्था में सुधार को लेकर दिए गए हैं। उद्योग जगत ने कहा है कि न्यायिक व्यवस्था की कमजोरी मौजूदा मंदी के लिए एक बड़ी वजह है। इसमें किए जाने वाले सुधार इस देश को वर्ष 2024-25 तक पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने में सबसे योगदान देंगे।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी बजट पर सभी पक्षों से सुझाव ले रही हैं। प्रतीकात्मक

इस बैठक में शामिल सूत्रों ने बताया कि हाल के दिनों में सरकार के उच्च स्तर पर उनकी इतनी बेबाक बैठक कभी नहीं हुई। इससे पूरे उद्योग जगत में यह संदेश गया है कि सरकार उनकी बात न सिर्फ सुन रही है बल्कि उनके साथ अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव कदम उठाने को तैयार है। यह भी उल्लेखनीय है कि चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में आर्थिक विकास दर के घट कर 4.5 फीसद के स्तर पर आने के बाद पीएम मोदी की इंडिया इंक के साथ यह पहली बैठक है। इस बीच उन्होंने एसोचैम के सालाना समारोह को संबोधित किया था, लेकिन इस तरह का दोतरफा संवाद पहली बार हुआ है। पीएम ने एसोचैम में उद्योग जगत को आश्वस्त किया था कि उन्हें चिंता-मुक्त होकर निवेश का फैसला करना चाहिए।

पीएम मोदी की उद्योग जगत के साथ होने वाली इस तरह की बैठकों के अलावा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी वित्त मंत्रालय के आला अधिकारियों के साथ देश के तमाम उद्योग जगत, श्रमिक संगठनों, अर्थविदों और कृषि क्षेत्र के जानकारों समेत अन्य साझीदारों के साथ अलग से बैठकें कर चुकी हैं।

ज्ञान आधारित कृषि पर रहेगा जोर

आम बजट से उम्मीदें

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

- केवीके के ज्ञान और 'पीएम-किसान' के पैसे से खेती में गुणात्मक सुधार
- अंतरराष्ट्रीय संस्था आइएफपीआरआइ की अध्ययन रिपोर्ट में सामने आया सच

कृषि क्षेत्र को ज्ञान आधारित बनाने में कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका अहम रही है। आगामी वित्त वर्ष के आम बजट में इन केंद्रों को आधुनिक बनाने और संसाधनों से लैस करने के और वित्तीय प्रावधान किए जा सकते हैं। एक अध्ययन रिपोर्ट में पाया गया कि जिन क्षेत्रों में कृषि विज्ञान केंद्र स्थापित हैं, वहां के कृषकों को 'पीएम-किसान' की किस्तों की रकम से उनकी खेती का लाभ कई गुना बढ़ा है।

'द इंपैक्ट आफ इंडियाज फार्म साइंस सेंटर (कृषि विज्ञान केंद्र) ऑन फार्म हाउसहोल्ड्स' विषय पर इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट (आइएफपीआरआइ) के पूर्व निदेशक डॉक्टर पीके जोशी के साथ अंजनी कुमार और दीपक वार्ष्णेय की संयुक्त टीम ने विस्तृत अध्ययन किया है। रिपोर्ट के मुताबिक केवीके से किसानों तक टेक्नोलॉजी को पहुंचाने में बहुत मदद मिली है, जिससे कृषि उत्पादकता को कई गुना तक बढ़ाने में सफलता मिली है। डॉक्टर जोशी ने 'जागरण' से बातचीत में कहा 'केवीके को लेकर बनी धारणा के विपरीत इससे किसानों को सीधा लाभ मिल रहा है। इन केंद्रों में एक रुपये के निवेश से किसानों तक इसका दस गुना तक लाभ देखा गया है।' कृषि क्षेत्र को केवीके से बहुत अधिक उम्मीदें हैं। खेती अब पूरी तरह नॉलेज बेस्ड (ज्ञान आधारित) हो गई है, जिसमें इन केंद्रों की भूमिका बहुत बढ़ गई है।

इसी अध्ययन से जुड़ी हालिया एक अन्य रिपोर्ट में और भी उत्साहजनक नतीजे प्राप्त हुए हैं। इसके मुताबिक जिन क्षेत्रों के किसान केवीके के ज्ञान से लैस हैं और वहां 'पीएम-किसान' की दो किस्तें मिल चुकी हैं उन क्षेत्रों में गुणात्मक लाभ हुआ है। यह रिपोर्ट उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में किए गए अध्ययन पर आधारित है। दीपक वार्ष्णेय का यह अध्ययन प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) योजना के प्रभावों पर है।

रिपोर्ट के मुताबिक ज्ञान आधारित खेती को आगे बढ़ाने में इन केंद्रों के वैज्ञानिकों से कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिली है। देश के विभिन्न जिंस बाजार में चल रहे उपज के दाम और उपज के मूल्यवर्धन में इन केंद्रों की महत्ता बढ़ी है। लेकिन इन केंद्रों की भी सीमाएं हैं। फिलहाल इनकी संख्या बमुश्किल सात सौ के आसपास है, जिसे और बढ़ाने की जरूरत है। साथ ही इन केंद्रों पर नियुक्त होने वाले वैज्ञानिकों को अनुसंधान, प्रसार और किसानों तक प्रदर्शन के मार्फत पहुंचाने के लिए अतिरिक्त वित्तीय मदद की जरूरत है। यहां होने वाले प्रदर्शन का लाभ जितने किसान को मिलता है, उसका असर कई गुना तक गांवों में पहुंचता है।

अंतरराष्ट्रीय संस्थान की रिपोर्ट को लेकर इंडियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आइसीएआर) काफी उत्साहित है। आइसीएआर के डिप्टी महानिदेशक डॉ. एके सिंह का कहना है कि केवीके के प्रभावों पर यह पहला अध्ययन है। इसकी रिपोर्ट से लोगों की धारणा बदलने में मदद मिलेगी। यह कृषि क्षेत्र और किसानों के लिए बेहद लाभप्रद होगा। इससे नीतिगत फैसला लेने में भी मदद मिलेगी।

पैंतरा ▸ नए चावल की खपत वाला चीन अपना पुराना चावल कर रहा अफ्रीकी बाजारों में डंप, भारत की चिंता बढ़ी

भारतीय चावल निर्यात बाजारों में चीन की सेंध

छह महीने में चीन ने 30 लाख टन चावल का निर्यात किया है, अधिकांश अफ्रीका को

नई दिल्ली, आइएएनएस : भारत दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक देश है। लेकिन चीन अब ग्लोबल मार्केट में इसकी बादशाहत को चुनौती देने की फिराक में है। इन दिनों अफ्रीका के बाजारों में चीन लाखों टन चावल पहुंचा रहा है। इससे भारतीय नीति निर्धारक संस्थाएं और चावल कारोबारियों के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आई हैं। पिछले कुछ वर्षों से अफ्रीका के चावल बाजार पर भारत का दबदबा है, जिस पर चीन ने सेंध लगानी शुरू कर दी है।

चीन चावल का आयातक रहा है। लेकिन अब यह प्रतिस्पर्धी कीमत पर इसका निर्यात करने लगा है। जानकारी के मुताबिक चीन ने पिछले छह महीने के दौरान सरकारी भंडार से 30 लाख टन चावल रिलीज किया है। इसमें ज्यादातर अफ्रीका के बाजारों में बिक्री के लिए भेजा गया है और इसे बहुत प्रतिस्पर्धी कीमत पर बेचा जा रहा है।

प्रतीकात्मक

चीन की रणनीति

सूत्रों के मुताबिक चीन में आमतौर पर नया चावल पसंद किया जाता है। नया चावल बाजार में उपलब्ध होने की वजह से चीन पुराने चावल के स्टॉक को औने-पौने दाम में निकालने की फिराक में है। यही कारण है कि वह अफ्रीकी बाजारों में इसे कम दाम में बेच रहा है।

फाइनेंशियल सेक्टर में निवेश से प्रतिबंध हटाने लगा चीन

बीजिंग, एएफपी : बरसों की जद्दोजहद के बाद चीन ने अपने फाइनेंशियल सेक्टर में विदेशी निवेश पर अब तक लगा प्रतिबंध हटाने की शुरुआत कर दी है। चीन के बैंकिंग नियामक सीबीआइआरसी ने कहा कि इस वर्ष की शुरुआत से विदेशी बैंक किसी स्थानीय सहयोगी के बगैर चीन में पूर्ण स्वामित्व वाली शाखा स्थापित कर सकते हैं। इससे पहले विदेशी बैंक चीन में इस शर्त पर शाखा खोल सकते थे कि स्थानीय सहयोगी की 75 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी। अमेरिका लंबे समय से इसकी मांग करता रहा है। चीन और अमेरिका में पहले दौर के कारोबारी सौदे पर इसी महीने हस्ताक्षर प्रस्तावित हैं। इसे देखते हुए चीन का यह कदम महत्वपूर्ण माना जा रहा है। चीन बहुत पहले से कहता रहा है कि वह विदेशी बाजारों के लिए अपना फाइनेंशियल सेक्टर खोलेगा और प्रतिबंधों में ढील देगा। लेकिन उसकी यह प्रक्रिया अब तक बेहद धीमी रही है। हालांकि पिछले वर्ष अक्टूबर में चीन ने अपने फाइनेंशियल सेक्टर को उदार बनाने की समय-सीमा जाहिर की थी। इसी के तहत दिसंबर में स्विट्जरलैंड के बैंक यूबीएस को चीन में कई गतिविधियों में अधिकांश हिस्सेदारी खरीदने की इजाजत दी गई थी।

उत्तराखंड के जाने-माने चावल निर्यातक लक्ष्य अग्रवाल कहते हैं कि हम गैर-बासमती चावल करीब 28,000 रुपये प्रति टन के हिसाब से बेचते हैं, जबकि चीन इसे 21,000 रुपये प्रति टन की निचली कीमत तक बेचने को तैयार है। इस तरह से चीन कम कीमत पर चावल निर्यात कर भारत के कारोबारी हितों को सीधे तौर पर नुकसान पहुंचा रहा है।

चीन के इस कदम से सबसे ज्यादा भारतीय निर्यातक प्रभावित हो रहे हैं। इसको देखते हुए चावल कारोबारियों ने सरकार से आग्रह किया है कि वह चावल का अतिरिक्त स्टॉक को जारी कर दे। इससे कीमतों को प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद मिलेगी और चीन के हाथों बाजार गंवाने का खतरा भी कम हो जाएगा।

अग्रवाल ने बताया कि चीन की इस कारोबारी नीति के चलते लंबे समय में देश के कारोबारी हितों को नुकसान पहुंचने की आशंका है। निर्यात के मामले में भारत के बाद थाइलैंड, वियतनाम और पाकिस्तान का नंबर आता है। लेकिन पिछले कुछ समय से भारत का निर्यात लगातार घट रहा है। आंकड़ों के मुताबिक पिछले वर्ष अप्रैल से नवंबर की अवधि में देश का गैर-बासमती चावल निर्यात 9,028.34 करोड़ रुपये मूल्य के बराबर रहा। वहीं 2018 की इसी अवधि के दौरान यह निर्यात 14,059.51 करोड़ रुपये मूल्य के बराबर रहा था।

हालांकि एफसीआइ के गोदामों में चावल भारी मात्रा में मौजूद है। लेकिन सरकार खाद्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए चावल भंडार खुले बाजार में बेचने के लिए तैयार नहीं हैं। चावल निर्यातक संगठन सरकार से निर्यात प्रोत्साहन की आस भी लगाए हुए हैं।

छत्तीसगढ़ में कृषि और उद्योग को मदद देंगे क्यूबा व वियतनाम

नईदुनिया, रायपुर

- छत्तीसगढ़ आए राजदूतों ने की संभावनाओं पर बात

छत्तीसगढ़ को कृषि और उद्योग सेक्टर में क्यूबा और वियतनाम मदद करने को इच्छुक हैं। राज्य के दौरे पर आए दोनों देशों के राजदूतों ने राज्य के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक में इसकी संभावनाओं पर चर्चा की। इस दौरान कृषि और उद्योग के क्षेत्र में तकनीकी हस्तांतरण सहित अन्य विभिन्न संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया।

छत्तीसगढ़ के प्रतिनिधिमंडल के साथ चर्चा में क्यूबा के राजदूत आस्कर जे. मार्टिनर कार्डोस ने क्यूबा में कृषि, पशुपालन, जैविक खेती और औद्योगिक क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में बताया। चर्चा के दौरान अनेक ऐसे क्षेत्र जिनमें क्यूबा से जैविक खेती, कृषि कार्यों में पशुओं का उपयोग एवं औद्योगिक क्षेत्र में हुई प्रगति के आधार पर तकनीकी हस्तांतरण की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया।

वियतनाम के पूर्व राजदूत ग्यूयेनवान ढ्ढह्यून से वहां के कृषि उद्यानिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, मछलीपालन निर्यात, उद्योग, रोजगार के अवसर आदि पर चर्चा की गई। इस दौरान वियतनाम और छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सहयोग की संभावनाओं वाले क्षेत्रों पर भी विचार-विमर्श किया गया। ढ्ढह्यून ने छत्तीसगढ़ के प्रतिनिधिमंडल को चर्चा के लिए वियतनाम आमंत्रित किया।

प्रतीकात्मक

उन्होंने बौद्ध धर्म से संबंधित पर्यटन स्थलों की जानकारी देते हुए और पर्यटन उद्योग से होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में विस्तार से बताया। प्रतिनिधिमंडल ने उन्हें छत्तीसगढ़ के बौद्ध धर्म के पर्यटन स्थल की जानकारी देते हुए इस क्षेत्र में सहयोग के लिए नई संभावनाओं पर चर्चा की।

न्यूज गैलरी

हमें उत्पादन क्षमता में करना होगा सुधार : प्रभु

मुंबई : पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने कहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने के लिए उत्पादन क्षमता में सुधार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाने चाहिए। प्रभु ने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में इकोनॉमी को गति देने में निर्यात अहम भूमिका निभाएगा। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि एक्सपोर्ट मार्केट की पहचान करनी होगी। (प्रेट्र)

एयरटेल की फंड जुटाने की योजना मंजूर

नई दिल्ली : अग्रणी टेलीकॉम कंपनी एयरटेल के शेयरधारकों ने 300 करोड़ डॉलर (करीब 21,000 रुपये) जुटाने की योजना को मंजूरी दे दी है। इसमें 200 करोड़ डॉलर इक्विटी और 100 करोड़ डॉलर डेट के माध्यम से जुटाए जाएंगे। इस योजना पर अनुमति के लिए हुए मतदान में 99.99 परसेंट शेयरधारकों ने योजना के समर्थन में वोट किया। (प्रेट्र)

त्योहारों में खूब बिके कंज्यूमर गुड्स

जेएनएन, नई दिल्ली

- पिछले चार वर्षों के उच्च स्तर पर रही बिक्री, छूट और कड़ाके की ठंड ने जारी रखी मांग

पिछले त्योहारी सीजन में उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री चार वर्षों के उच्च स्तर पर रही। खुदरा विक्रेताओं और उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वाली कंपनियों के मुताबिक अक्टूबर-दिसंबर के दौरान ग्राहकों ने सुस्ती को धता बताते हुए उपभोक्ता वस्तुओं की जमकर खरीदारी की। देश में इस अवधि के दौरान सबसे ज्यादा त्योहार होते हैं। इसके अलावा दिसंबर के आखिरी दिनों में उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड ने भी बिक्री बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। खुदरा बिक्रेताओं ने बताया कि इस दौरान गर्म कपड़े और गर्मी प्रदान करने वाले उपकरण खूब बिके। त्योहारी सीजन के दौरान मिलने वाली छूट से भी बिक्री बढ़ाने में मदद मिली।

जानकारों के मुताबिक समीक्षाधीन अवधि में अच्छे संकेत जरूर दिखे हैं। लेकिन अभी यह कहना गलत होगा कि बाजार में मांग एकदम से लौट आई है। अगले कुछ महीनों में यह प्रवृत्ति जारी रहने के बाद ही मांग पटरी पर लौटने की घोषणा करना उचित रहेगा। पैनासोनिक के सीईओ मनीष शर्मा ने बताया कि अच्छे संकेत मिलने के बाद भी अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि अगली एक-दो तिमाहियों में यह प्रवृत्ति बनी रहती है या नहीं।

प्रतीकात्मक

उद्योग जगत के आंकड़ों के मुताबिक समीक्षाधीन अवधि के दौरान व्हाइट गुड्स की बिक्री में आठ प्रतिशत तक का इजाफा हुआ। जबकि वर्ष 2017 और 2018 की इसी अवधि के दौरान इनकी बिक्री में चार प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की गई थी। हालांकि 2016 में यह चार प्रतिशत तक का ग्रोथ दर्ज करने में सफल रहे थे। रिलायंस रिटेल, लाइफस्टाइल, प्यूमा, एलजी, वनप्लस, पैनासोनिक, विजय सेल्स जैसी कंपनियों और आउटलेट्स ने बताया कि समीक्षाधीन अवधि के दौरान उम्मीद से कहीं अधिक बिक्री हुई। हालांकि नवंबर के दौरान बिक्री में कुछ नरमी जरूर देखी गई थी। लेकिन दिसंबर में इसने फिर जोरदार रफ्तार पकड़ ली थी।

प्यूमा इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर अभिषेक गांगुली के मुताबिक त्योहारी सीजन में छूट बढ़ने के चलते उपभोक्ता शॉपिंग मॉल और ई-कॉमर्स कंपनियों पर खूब मेहरबान रहे, जिससे उपभोक्ता खर्च में तेजी देखी गई। एलजी इंडिया के वीपी विजय बाबू ने बताया कि 2018 के त्योहारी सीजन में हमने 18 परसेंट की ग्रोथ दर्ज की थी। लेकिन इस बार हमारी बिक्री में 30 परसेंट ग्रोथ होने की उम्मीद है।

आइओबी को मिली 4,360 करोड़ रुपये की सरकारी मदद

चेन्नई, प्रेट्र : सार्वजनिक क्षेत्र के कर्जदाता इंडियन ओवरसीज बैंक (आइओबी) ने कहा है कि उसे सरकार की ओर से 4,360 करोड़ रुपये की पूंजी मिल गई है। बैंक ने शेयर बाजारों को बताया कि यह राशि प्रिफरेंशियल शेयर आवंटन के माध्यम से सरकार द्वारा प्राप्त हुई है। इससे पहले बैंक ने पिछले वर्ष दिसंबर में कहा था कि उसे जल्द ही सरकार से पूंजी मिलेगी।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पिछले वर्ष अगस्त में आइओबी में 3,800 रुपये निवेश करने की बात कही थी। लेकिन बाद में इसमें 560 करोड़ रुपये का इजाफा करने की घोषणा की गई थी। गौरतलब है कि इंडियन ओवरसीज बैंक इस समय आरबीआइ के प्रांप्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) फ्रेमवर्क के अधीन चल रहा है। बैंकों की वित्तीय स्थिति खराब होने या परिचालन के जरूरी मानक पूरे नहीं होने पर आरबीआइ उन्हें अपने पीसीए फ्रेमवर्क के तहत लेकर उनके रोजमर्रा के कार्यों का संचालन अपनी देखरेख में कराता है।

प्रतीकात्मक

- बैंकों में पर्याप्त पूंजी बनाए रखने के लिए सरकार कर रही है निवेश
- पिछले वर्ष हुई थी इस रकम के निवेश की घोषणा

आइओबी को चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान 2,253.64 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। इससे पहले वित्त मंत्रालय ने सरकारी बैंकों में 70,000 करोड़ रुपये की पूंजी डालने की घोषणा की थी।

टिम कुक के वेतन में आई गिरावट

सैन फ्रांसिस्को, एएफपी : पिछले वर्ष एपल के उम्मीद से कमतर प्रदर्शन की वजह से इसके सीईओ टिम कुक के वेतन में आठ परसेंट की कटौती हुई। इस दौरान यह 1.16 करोड़ डॉलर (करीब 81 करोड़ रुपये) रहा। पिछले वर्ष कुक ने कंपनी की शेयरधारिता से 1.13 करोड़ डॉलर कमाए। इससे पहले 2018 में उन्हें वेतन के रूप में 1.57 करोड़ डॉलर मिले थे।

कुक का मूल वेतन करीब 30 लाख डॉलर है, जबकि उन्हें बोनस और कई तरह भत्ते भी मिलते हैं। पिछले वर्ष उनके इंसेंटिव बोनस में 77 लाख डॉलर की गिरावट आई। एपल के सीईओ का बोनस कंपनी के प्रदर्शन से जुड़ा होता है। इसलिए उसके मुनाफे का सीधा असर इसके सीईओ के वेतन में झलकता है।

पिछले वर्ष कंपनी की बिक्री निर्धारित लक्ष्य से सिर्फ 28 परसेंट आगे ही जा सकी, जबकि 2018 के दौरान यह लक्ष्य से 100 परसेंट अधिक रही थी। इसलिए 2018 में कुक को 1.2 करोड़ डॉलर बोनस के रूप में मिले थे।

निवेशकों का मुनाफा बढ़ाएंगे म्यूचुअल फंड की दुनिया में पिछले वर्ष आए बदलाव

यह साल का ऐसा समय होता है जब किसी खास क्षेत्र में हुए बदलाव का लेखा जोखा-लिखा जाता है। हालांकि मुझे यह चलन कभी पसंद नहीं आया, क्योंकि मुझे नहीं लगता कि निवेश की दुनिया में आए बदलाव को देखने के लिए एक साल का समय पर्याप्त है। इसके अलावा यह भी जरूरी नहीं है कि कैलेंडर में साल बदलने से चीजें बदलें। किस निवेश ने 2019 में अच्छा किया और कौन सा निवेश 2020 में अच्छा करेगा इसके बारे में चिंता करने से निवेशकों को कुछ खास मिलना नहीं है।

हालांकि 2019 में म्यूचुअल फंड में कई नियामकीय बदलाव हुए हैं जो कि निवेशकों के लिए बेहद अहम हैं। इससे फंड चुनने के तरीके और फंड के रिटर्न पर गहरा असरा असर होगा। सबसे बड़ा बदलाव यह है कि म्यूचुअल फंड में निवेश का खर्च काफी कम हो गया है। यानी पहले म्यूचुअल कंपनियां निवेशकों से जो चार्ज लेती थीं, उसमें काफी कमी आई है। इसके अलावा म्यूचुअल फंड द्वारा इंटीमीडियरीज को दिए गए जाने वाले कमीशन की प्रकृति में भी बदलाव आया है। इन सभी बदलावों की घोषणा सितंबर, 2018 में की गई थी लेकिन ये बदलाव अमल में पहली अप्रैल, 2019 से आए हैं।

बहुत से निवेशक इसे नियामकीय पहल या सेबी की सख्ती के तौर पर देख रहे हैं लेकिन यह इससे कहीं ज्यादा प्रभावी कदम है। इसके तहत न सिर्फ फंड बेचने वालों यानी फंड इंटरमीडियरीज के बिजनेस मॉडल में बड़े पैमाने पर सुधार किया गया है बल्कि म्यूचुअल फंड के बिक्री मॉडल को भी बेहतर बनाया गया है। पहले इस बिजनेस का आधार कमीशन मॉडल हुआ करता था। इस मॉडल में म्यूचुअल फंड आपके निवेश पर इंटरमीडियरी को अपफ्रंट कमीशन का भुगतान करता था। इसके बदले अब उनको सिर्फ ट्रेल कमीशन मिलेगा। ट्रेल का मतलब है कि जब तक आपकी रकम उस फंड में लगी रहेगी, तब तक एक छोटी रकम डिस्ट्रीब्यूटर को मिलती रहेगी।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ
वैल्यू रिसर्च

बोनस

निवेश की दुनिया में आए बदलाव को समझने-परखने के लिए यूं तो एक वर्ष काफी नहीं है। लेकिन पिछले वर्ष कई ऐसे नियामकीय बदलाव हुए हैं, जो आने वाले वर्षों में निवेशकों को गहरे में प्रभावित करेंगे। आइएलएंडएफएस और एस्सेल ग्रुप जैसे मामलों ने एक तरफ निवेशकों को सतर्क किया है, तो दूसरी तरफ नियामकीय एजेंसियों को भी ऐसी घटनाओं से निपटने के पुख्ता तौर-तरीकों पर विचार को विवश किया है। पिछले वर्ष के कुछ नियामकीय कदमों से म्यूचुअल फंड में निवेश का खर्च घटा है। अब इस उद्योग से जुड़े लोग चाहेंगे कि निवेशक लंबी अवधि के लिए निवेश बनाए रखे।

अपफ्रंट कमीशन की वजह से डिस्ट्रीब्यूटर का फायदा इसी बात में था कि बस एक बार ट्रांजैक्शन हो जाए। और ज्यादा कमीशन कमाने के लिए डिस्ट्रीब्यूटर चाहते थे कि ज्यादा से ज्यादा ट्रांजैक्शन हो। यानी निवेशक जल्दी-जल्दी फंड बेच कर नए-नए फंड्स में निवेश करता रहे। लेकिन यह बात निवेशक को रिटर्न के मोर्चे पर बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाती थी। लेकिन अब उनकी कोशिश होगी कि वे निवेशक की रकम को कुछ अच्छे फंडों में लगाए जिसमें निवेशक लंबे समय तक निवेश बनाए रखे। अब डिस्ट्रीब्यूटर और निवेशक दोनों का फायदा लंबे समय तक निवेश बनाए रखने मे है। पहले ऐसा नहीं था। इसी के साथ म्यूचुअल फंड अपने निवेशकों से जो रकम चार्ज करते थे उसे भी घटा दिया गया है। ये दो बदलाव निवेशकों के लिए बड़े फायदे लेकर आए हैं। अब डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक को बेहतर सलाह देंगे और वे आकर्षक रिटर्न हासिल कर सकेंगे।

इस साल म्यूचुअल फंड में एक बड़ी चीज डेट यानी कर्ज फंड में सुधार को लेकर हुई है। पिछले एक साल से भी अधिक समय से डेट फंड गुणवत्ता की समस्या से जूझ रहे थे। आइएलएंडएफएस और इसके बाद जी एस्सेल ग्रुप के प्रमोटर्स के सामने आई वित्तीय दिक्कतों की वजह से अब म्यूचुअल फंड निवेशक रिटर्न और जोखिम के बीच संबंध पर अब अधिक ध्यान दे रहे हैं। दुर्भाग्य से बहुत से निवेशक इस चेतावनी को नजरअंदाज करते थे कि म्यूचुअल फंड बाजार के जोखिमों के आधीन है। यह उसी तरह से था जैसे सिगरेट पीने वाले स्वास्थ्य से जुड़े जोखिम को नजरअंदाज करते थे। यह अच्छी बात नहीं थी।

लंबे समय से डेट फंड न के बराबर क्रेडिट रिस्क वाले साबित हुए हैं। भारतीय बैंकों में एनपीए की समस्या के विपरीत डेट फंड में एनपीए की कोई समस्या नहीं थी। यह निवेशकों के लिए अच्छा साबित हुआ लेकिन इसकी वजह से निवेशक कुछ हद तक लापरवाह हो गए थे। फंड बेचने वालों ने फंड बेचा और निवेशकों ने खरीदा। निवेशकों ने ऐसे फंड भी खरीदे जिनको खरीदने में सतर्कता बरतना जरूरी था। कुछ फंड मैनेजर्स ने भी तेजी दिखाई और सतर्कता और डायवर्सिफिकेशन के बुनियादी सिद्धांतों को नजरअंदाज किया।

एक छोटे संकट के जवाब में सेबी ने जोखिम को कम करने और उसे छुपाने से रोकने के लिए कई कदम उठाए। अगर कोई फंड ऐसा जिसमें बांड्स एक्सपोजर से जुड़ी दिक्कतें हों तो उसकी कम कीमत की पहचान की जानी चाहिए। इसी तरह से अगर कोई बांड ऐसा है जिसकी मांग नहीं है तो उसे अलग पोर्टफोलियो पॉकेट में रखा जा सकता है। इससे बांड की मांग कम होगी लेकिन वह बाद में अपनी वैल्यू रिकवर कर सकेगा।

इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि साल के अंत में अब निवेश के लिए म्यूचुअल फंड ज्यादा साफ-सुथरे और सुरक्षित हैं।

21 साल से रिवॉल्यूशनरी फोर्स के चीफ थे कमांडर मेजर कासिम सुलेमानी। ईरान में वह नेशनल हीरो के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने इराक और सीरिया में आइएस के मुकाबले कुद्स लड़ाकों और शिया मिलीशिया को एकजुट करने का काम किया था।

अमेरिका ने उठाया सुलेमानी की बेफिक्री का फायदा

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- विदेश दौरों पर भी कभी छिपने की कोशिश नहीं करते थे ईरान के टॉप कमांडर मेजर कासिम
- उनकी गतिविधियों पर लंबे समय से थी अमेरिका-इजरायल की खुफिया एजेंसियों की निगाह

वाशिंगटन : ईरान के शीर्ष कमांडर मेजर कासिम सुलेमानी की बेफिक्री ही उनकी मौत का कारण बन गई। अमेरिका और इजरायल की खुफिया एजेंसियां लंबे समय से सुलेमानी की गतिविधियों पर निगाह बनाए हुए थीं। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि पहले भी कई बार उन्हें निशाना बनाने के बारे में सोचा गया था, लेकिन हर बार आखिरी क्षणों में इसे टाल दिया जाता था। इस बार राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की अगुआई में अमेरिका ने उनको निशाना बनाने का फैसला ले लिया। अमेरिका ने शुक्रवार को ड्रोन हमला कर सुलेमानी को मौत के घाट उतार दिया था।

एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा, '2007 की जनवरी में भी अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने सुलेमानी को निशाने पर लिया था। हालांकि सुलेमानी की मौत के राजनीतिक असर को ध्यान में रखते हुए हमले का फैसला बदल दिया गया था।' अमेरिकी खुफिया एजेंसियां उन पर बस नजर टिकाए रहीं। कहा यह भी जा सकता है कि सुलेमानी और अमेरिकी निशाने के बीच बस एक ऐसे राष्ट्रपति की दूरी थी, जो फैसला ले। जो फैसला जॉर्ज डब्ल्यू बुश और बराक ओबामा लेने में हिचकिचाते रहे, अंततः उस पर ट्रंप ने मुहर लगा दी। अमेरिका और इजरायल की हिटलिस्ट में होने के बाद भी बेफिक्री से रहना सुलेमानी पर भारी पड़ गया।

सुलेमानी कहां आते जाते हैं, इस पर अमेरिका लगातार नजर रखता था। खासकर इराक में उनकी हर गतिविधि पर उसकी खास नजर रहती थी। वहीं, सुलेमानी का आत्मविश्वास ऐसा था, मानो उन्हें कोई छू ही नहीं सकता है। यही वजह थी कि वह हर दौरे पर निश्चिंत रहते थे।

कासिम सुलेमानी की फाइल फोटो। एपी

साइबर हमला कर सकता है ईरान

पूरी दुनिया इस वक्त यह कयास लगा रही है कि अमेरिका के हाथों अपने टॉप कमांडर की मौत से बौखलाया ईरान बदला किस तरह लेगा। अमेरिकी विशेषज्ञों का कहना है कि ईरान बड़े पैमाने पर साइबर हमले को अंजाम दे सकता है। इसलिए अधिकारियों से इस दिशा में सतर्क रहने को कहा गया है। सुलेमानी की मौत के बाद अमेरिका के गृह मंत्रालय ने अधिकारियों से अपने संवेदनशील विभागों की सुरक्षा पर ध्यान देने का निर्देश दिया है। अमेरिका के कार्यवाहक गृह मंत्री चैड वुल्फ ने अधिकारियों को ईरान की प्रतिक्रिया से सतर्क रहने को कहा है।

कुछ ही पलों में हुआ फैसला

मामले से जुड़े लोगों का कहना है कि ट्रंप अपने राजनीतिक सलाहकारों के साथ चुनावी अभियान पर चर्चा कर रहे थे। उसी बीच अचानक उठकर किसी और बैठक के लिए चले गए। थोड़ी देर बाद वापस चुनावी चर्चा में आकर ऐसे शामिल हो गए, मानो कुछ हुआ ही नहीं। जानकार बताते हैं कि राजनीतिक चर्चा के बीच ट्रंप जितनी देर के लिए बाहर गए थे, उसी दौरान उन्होंने सुलेमानी को निशाना बनाने के फैसले पर मुहर लगा दी। आलोचक यह भी कह रहे हैं कि ट्रंप ने महाभियोग की प्रक्रिया से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए ऐसा फैसला लिया।

अमेरिकी जहां मिलेंगे वहीं मारेंगे : ईरान

पहले पेज का शेष

ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के पश्चिमी करमान प्रांत के कमांडर जनरल गोलामली अबुहमजा ने कहा कि अमेरिकी जहां कहीं भी मिलेंगे उन्हें मारा जाएगा। कमांडर ने कहा कि अमेरिका ने जनरल कासिम सुलेमानी को मार कर ईरान को जवाब देने की चुनौती दी है। उन्होंने कहा, 'होरमुज जलडमरूमध्य से अमेरिकी युद्धपोतों की आवाजाही होती है, इस क्षेत्र में अमेरिका के और भी कई अड्डे हैं, जिन पर ईरान की वर्षों से नजर है, इसके साथ ही तेल अवीव भी हमारी पहुंच में है।'

नाटो ने इराक में प्रशिक्षण मिशन स्थगित किया : अमेरिकी ड्रोन हमले में ईरानी कमांडर कासिम सुलेमानी के मारे जाने के बाद नाटो ने इराक में अपने प्रशिक्षण मिशनों को फिलहाल स्थगित कर दिया है। गठबंधन सेना के प्रवक्ता ने शनिवार को यह जानकारी दी। इराक स्थित नाटो के मिशन में हजारों कर्मी हैं। यह मिशन बगदाद के अनुरोध पर इराकी सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण दे रहा है ताकि वहां जिहादी संगठन इस्लामिक स्टेट की वापसी को रोका जा सके। नाटो प्रवक्ता डायलन व्हाइट ने कहा, 'नाटो का मिशन जारी है, लेकिन प्रशिक्षण गतिविधियां फिलहाल स्थगित कर दी गई हैं।'

खाड़ी संकट घिरा तो पाक के करीब आया अमेरिका

अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपिओ (बाएं) और पाकिस्तान की सेना के प्रमुख बाजवा। फाइल

- अमेरिकी विदेश मंत्री पोंपिओ ने पाक सेना प्रमुख बाजवा से की बात
- अमेरिका ने पाक सेना के प्रशिक्षण पर लगी रोक भी हटाई

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

ईरान के जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या के बाद खाड़ी के क्षेत्र में जो नए समीकरण बन रहे हैं, उसको लेकर भारत को अब ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। खास तौर पर जिस तरह से अमेरिका ने पाकिस्तान से संपर्क किया है, वह भारत के लिए कठिनाई पैदा कर सकता है। सुलेमानी की हत्या के कुछ ही घंटे बाद अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोंपिओ ने पाकिस्तानी सेना के प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा से बात की और हालात पर चर्चा की। इसके कुछ ही घंटे बाद अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने एलान किया कि पाकिस्तान सेना के साथ सैन्य शिक्षण व प्रशिक्षण को फिर से बहाल किया जा रहा है। जानकार मान रहे हैं कि खाड़ी में हालात बिगड़ने की स्थिति में अमेरिकी सेना को एक बार फिर पाकिस्तान की मदद चाहिए। ऐसे में पाकिस्तान भी मोल-भाव करेगा। यह भारत के हितों को प्रभावित कर सकता है।

अमेरिका ने पाकिस्तान को दूसरी सैन्य सहायता पर रोक बरकरार रखी है। इसके बावजूद जानकार मान रहे हैं कि सैन्य प्रशिक्षण संबंधी रिश्तों को दोबारा शुरू करने के भी बड़े मायने हैं। देश के प्रमुख रणनीतिक विश्लेषक ब्रह्म चेलानी का कहना है कि धीरे-धीरे अमेरिका पाकिस्तान के साथ सामान्य रिश्तों की तरफ बढ़ रहा है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए अमेरिका भले ही भारत की अहमियत समझता हो लेकिन भारत के पड़ोस (अफगानिस्तान व पाकिस्तान) में दोनों देशों की सुरक्षा चिंताओं में काफी अंतर है।

एक अन्य रणनीतिक विश्लेषक उदय भास्कर तो यह मानते हैं कि विदेश मंत्री पोंपिओ ने जिस तरह से पाक सेना प्रमुख से बात की है, उसने आतंकवाद को लेकर भारत और अमेरिका के बीच के बुनियादी मतभेद को भी बाहर ला दिया है। भारत को बेहद सतर्क रहना होगा, क्योंकि पाकिस्तान का अगर अमेरिका इस्तेमाल करता है, तो पाकिस्तान उसकी कीमत भी वसूलेगा। ईरान को लेकर अमेरिका जितना सक्रिय होगा, पाकिस्तान की अहमियत उतनी ही बढ़ती जाएगी। विदेश मंत्रालय ने इस बारे में बार-बार पूछने पर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है, लेकिन जानकार मान रहे हैं कि अमेरिका व पाकिस्तान के बीच अगर सैन्य सहयोग बढ़ता है, तो वह दो तरह से भारत के हितों को प्रभावित करेगा। सबसे पहले तो आतंकवाद को लेकर भारत ने पाकिस्तान पर दबाव बनाने की जो रणनीति बना ली थी, उस पर आंच आ सकती है। भारत की इस लड़ाई में अमेरिका ने कई बार मदद की है। जैसे पाक में रहने वाले आतंकियों पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगाने या एफएटीएफ की तरफ से कार्रवाई करने में। लेकिन अगर पाकिस्तान अमेरिकी सेना की मदद करता है, तो वह बदले में आगे आतंकवाद रोधी कार्रवाइयों से बचने की उम्मीद कर सकता है। भारत को दूसरा झटका अफगानिस्तान में लग सकता है। पाकिस्तान सेना ने शुक्रवार को कहा भी है कि अमेरिका को अफगानिस्तान में शांति प्रक्रिया नए सिरे से जारी रखनी चाहिए। पाकिस्तान अफगानिस्तान में तालिबान की अगुआई में नई सरकार के गठन की मांग काफी पहले से कर रहा है। यह मांग भारत के हितों के बेहद खिलाफ है। तालिबान की वापसी अफगानिस्तान में अभी तक किए भारत के विकास कार्यों को भारी क्षति पहुंचा सकती है। तालिबान पहले भी पाकिस्तान के साथ मिल कर भारत के हितों को नुकसान पहुंचाता रहा है।

जानकारों का यह भी कहना है कि अमेरिका को खाड़ी क्षेत्र में युद्ध होने की स्थिति में कई तरह से पाकिस्तान की मदद चाहिए। मसलन, वह पाकिस्तान के हवाई अड्डों का इस्तेमाल करने से लेकर अपने सैन्य ठिकानों को सुरक्षित करने के लिए भी पाक सेना की मदद चाहेगा। सितंबर, 2001 में अफगानिस्तान स्थित अल कायदा के ठिकानों पर हमला करने और तालिबान को भगाने के लिए भी अमेरिका ने पाकिस्तान की मदद ली थी। इसके बदले पाकिस्तान को काफी सैन्य मदद व आर्थिक मदद भी दी गई थी।

न्यूज गैलरी

ब्रिटिश लेबर पार्टी की नेता बनने की दौड़ में भारतवंशी नंदी

लंदन : भारतीय मूल की सांसद लीसा नंदी ब्रिटेन की विपक्षी लेबर पार्टी के नेता जेरेमी कॉर्बिन की जगह लेने की दौड़ में शामिल हुई हैं। उन्होंने इस पद के लिए औपचारिक तौर पर अपनी दावेदारी पेश की है। गत 12 दिसंबर को हुए आम चुनाव में लेबर की करारी हार के बाद कॉर्बिन ने यह एलान किया था कि वह आगामी चुनाव में पार्टी का नेतृत्व नहीं करेंगे। इसी के चलते पार्टी नेतृत्व के लिए चुनाव कराया जा रहा है। लेबर पार्टी का नेता बनने के लिए अब तक चार दावेदार सामने आ चुके हैं। नंदी के अलावा क्लाइव लुईस, एमिली थॉर्नबेरी और जेस फिलिप भी अपनी दावेदारी पेश कर चुके हैं। 40 वर्षीय नंदी ने गार्जियन अखबार में छपे एक लेख में कहा, 'मैं मतदाताओं को फिर से जोड़ना चाहती हूं, जिन्होंने पारंपरिक मजबूत गढ़ों में पार्टी का साथ छोड़ दिया है।' (प्रेट्र)

महीने में एक बार चेक होता था कार्लोस के घर पर लगा कैमरा

टोक्यो : दिग्गज कार कंपनी रही निसान के पूर्व प्रमुख कार्लोस गोन के जापान से भागने के पीछे निगरानी व्यवस्था की गंभीर खामी सामने आई है। पता चला है कि आर्थिक घोटाले के आरोपी कार्लोस की निगरानी के लिए उनके आवास के बाहर सीसीटीवी कैमरे लगे थे। इन कैमरों से उनकी 24 घंटे निगरानी होती थी। लेकिन इन कैमरों के फुटेज तभी चेक किए जाते थे, जब हर महीने की 15 तारीख को उन्हें कोर्ट में जमा किया जाता था। कोर्ट ने कार्लोस को मामले में सशर्त जमानत दी थी जिसके चलते वह टोक्यो स्थित अपने ही घर में नजरबंद थे। वह किसी से बात नहीं कर सकते थे। गुपचुप भागकर लेबनान पहुंचे कार्लोस ने खुद के न्यायिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। कहा है कि उन्हें फंसाया गया और उसके बाद उनका उत्पीड़न किया जा रहा था। (एपी)

तालिबान के हमलों में गई 2200 अफगान नागरिकों की जान

काबुल : अफगानिस्तान में गत वर्ष तालिबान आतंकियों के हमलों में 2200 से ज्यादा नागरिकों की जान गई थी। यह उम्मीद थी कि अमेरिका और तालिबान के बीच शांति वार्ता से युद्ध प्रभावित इस मुल्क में हिंसा में कमी आएगी। अफगानिस्तान में गत 19 साल से जारी खूनी संघर्ष को खत्म करने के प्रयास में अमेरिका और तालिबान के बीच पिछले एक वर्ष से शांति वार्ता चल रही है। हालांकि इस वार्ता में कई बार उतार-चढ़ाव भी आए। अफगान गृह मंत्रालय के अनुसार, वर्ष 2019 के दौरान तालिबान आतंकियों ने देशभर में आत्मघाती और आइईडी धमाके किए। इनमें 7391 नागरिकों की मौत हुई या घायल हुए। मंत्रालय ने बताया कि हमलों में 2219 अफगान नागरिकों की मौत हुई और 5172 घायल हुए थे। (आइएएनएस)

सुलेमानी के जनाजे में उमड़े हजारों लोग

खाड़ी में तनाव ▸ इराक के प्रधानमंत्री भी हुए शामिल, अमेरिका से बदला लेने की उठी मांग

ईरान में भी हजारों लोग शोक जताने सड़कों पर उतरे

बगदाद, एजेंसियां : हजारों इराकियों ने अमेरिका मुर्दाबाद के नारे लगाते हुए अमेरिकी हमले में मारे गए ईरानी कमांडर कासिम सुलेमानी और अन्य लोगों का जनाजा निकाला। इसमें इराक के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अदेल अब्देल महदी, शिया धर्मगुरु अम्मार अल हकीम, पूर्व प्रधानमंत्री नूरी अल-मलिकी और ईरान समर्थक अन्य लोग भी शामिल हुए।

सुलेमानी के शव को सबसे पहले उत्तरी बगदाद स्थित शिया धर्मस्थल ले जाया गया। वहां मौजूद हजारों लोगों ने अमेरिका के खिलाफ नारेबाजी की। काले कपड़े पहने इन लोगों के हाथों में ईरानी और इराकी नेताओं तस्वीरें थीं और ये लोग अमेरिका से बदला लेने की मांग कर रहे थे। लोगों का जुलूस इसके बाद ग्रीन जोन की तरफ निकला, जहां सरकारी कार्यालय और अमेरिका समेत अन्य देशों के दूतावास हैं। सुलेमानी के शव को शियाओं के पवित्र शहर नजफ भी ले जाया जाएगा। इसके बाद इसे ईरान भेज दिया जाएगा, जिसने तीन दिन के शोक की घोषणा की है। ईरान के विशिष्ट बल रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स की कुद्स फोर्स के प्रमुख सुलेमानी की क्षेत्र में वर्चस्व की लड़ाई में अहम भूमिका थी।

इस बीच, सुलेमानी की हत्या पर ईरान में भी शोक और गुस्से का माहौल है। हजारों ईरानी युवा और बुजुर्ग सड़कों पर उतर आए हैं। हालांकि, ईरानियों में इस बात की चिंता भी है कि उनके देश की सुपर पावर के साथ लड़ाई छिड़ सकती है। तेहरान निवासी 61 वर्षीय शहनाज मिलानिया ने कहा कि मैं अब सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हूं। सुलेमानी एक हीरो थे। मैं धार्मिक या सरकार समर्थक महिला नहीं हूं। लेकिन, मैं सुलेमानी का सम्मान करती हूं। हमें सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। दूसरी तरफ, बासिज मिलिशिया के सदस्य मुजतबा हाशिमी ने कहा कि अमेरिका को हमारे प्रतिशोध से डरना चाहिए। वे हमारे पिता थे। हम उनके रास्ते पर चलते रहेंगे।

अमेरिकी हमले में मारे गए ईरान के सैन्य कमांडर कासिम सुलेमानी और मिलीशिया नेता अबू महदी अल मुहांदिस के साथ नौ अन्य अधिकारियों की इराक की राजधानी बगदाद के उच्च सुरक्षा वाले ग्रीन जोन में शव यात्रा निकाली गई। इसमें हजारों इराकी नागरिकों ने भी हिस्सा लिया। एएफपी

इंडोनेशिया में बाढ़ का कहर, 47 लोगों की मौत

- घरों में पानी भरने से लाखों लोगों ने ली शिविरों में शरण
- नए साल में हुई भारी बारिश से रिहायशी इलाकों में घुसा पानी

जकार्ता, एपी : इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता और आसपास के इलाकों में नए वर्ष पर हुई भारी बारिश से हालात बिगड़ गए हैं। नदियों में बाढ़ के चलते कई इलाकों में पानी भर गया है। इससे लाखों लोगों को अपने घरों को छोड़कर शिविरों में शरण लेनी पड़ी है। जबकि बाढ़ और भूस्खलन से अब तक 47 लोगों की मौत हो चुकी है।

मानसून की बारिश के कारण ग्रेटर जकार्ता के दर्जनों जिलों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। जबकि जकार्ता के बाहरी जिलों बोगोर और डेपोक में हुए भूस्खलन में एक दर्जन लोग दफन हो गए। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी के प्रवक्ता एगस विबोवो के अनुसार, नए साल पर हुई भारी बारिश के कारण कई नदियों का पानी रिहायशी इलाकों में घुस गया। कई लोगों की डूबने और करंट लगने से मौत हुई। राजधानी में 2007 के बाद बाढ़ से यह सबसे बड़ी तबाही है। उस साल बाढ़ से 80 लोगों की जान गई थी। कुछ इलाकों में पानी घटने पर अपने घरों को लौटे लोगों ने बताया कि सड़कें कीचड़ और मलबे से अटी पड़ी हैं। जबकि कारें बहकर दूसरी जगहों पर पहुंच गई थीं।

छह मीटर तक भरा पानी : विबोवो ने बताया कि कुछ जगहों पर छह मीटर तक पानी भर गया है। इसके चलते करीब तीन लाख 97 हजार लोगों को ग्रेटर मेट्रोपोलिटन इलाके में बनाए गए राहत शिविरों में शरण लेनी पड़ी है। कई इलाकों में बिजली आपूर्ति बहाल कर दी गई है।

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में बाढ़ग्रस्त इलाके से सुरक्षित स्थानों की ओर जाते लोग। एपी

चीन ने हांगकांग के मुख्य संपर्क अधिकारी को बदला

बीजिंग, प्रेट्र : छह महीने से हांगकांग में चल रहे लोकतंत्र की मांग वाले आंदोलन के बीच चीन ने वहां के लिए नियुक्त अपने चीफ लाइजन ऑफीसर (मुख्य संपर्क अधिकारी) को बदल दिया है। वांग झीमिन की जगह ल्यू ह्यूनिइंग को नियुक्त किया गया है। ल्यू बीजिंग स्थित लाइजन ऑफिस के डायरेक्टर होंगे। उन पर हांगकांग सरकार और बीजिंग सरकार के बीच समन्वय की जिम्मेदारी होगी। मुख्य लाइजन ऑफीसर को चीन की ओर से हांगकांग के लिए नियुक्त सर्वोच्च अधिकारी माना जाता है।

नवनियुक्त ल्यू ह्यूनिइंग शांक्शी प्रांत में सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव रहे हैं। उन्हें राजनीतिक रूप से काफी परिपक्व माना जाता है। माना जा रहा है कि वह अपने अनुभव से हांगकांग के आंदोलन को खत्म करने का कोई रास्ता तलाश लेंगे और स्थानीय सरकार के सहयोग से उस पर कार्य करेंगे। ल्यू को भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वाला भी माना जाता है। उन्होंने राज्य को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका अदा की है। हांगकांग में चल रहे आंदोलन के बीच चीन ने पहली बार किसी शीर्ष अधिकारी को हटाया है। हांगकांग के हालात पर राष्ट्रपति शी चिनफिंग के चिंता जताए जाने के कुछ दिनों बाद ही यह बड़ा कदम उठाया गया है। हांगकांग में चीन समर्थित सरकार चला रहीं मुख्य कार्यकारी अधिकारी कैरी लैम को हटाए जाने की कई महीनों से चर्चा चल रही है। आंदोलन को शांत करने में विफल रहीं लैम पर भी अब गाज गिर सकती है।

अमेरिकी फोटोग्राफर को वापस भेजा : हांगकांग के सरकार विरोधी प्रदर्शनों को कवर करने वाले अमेरिकी फोटोग्राफर मैथ्यू कनर्स को स्थानीय सरकार ने प्रवेश देने से इन्कार कर दिया है। आंदोलन के बाद वह अमेरिका चले गए थे और वापस आए थे। शुक्रवार सुबह उन्हें न्यूयॉर्क जाने वाले विमान में बैठाकर हवाई अड्डे से वापस भेज दिया गया। मैथ्यू पुरस्कार प्राप्त फोटोग्राफर हैं। आंदोलन के चलते लक्जरी ब्रांड लुईस वीटन के हांगकांग का अपना स्टोर बंद करने की भी खबर है। शहर के मध्य स्थित इस स्टोर को आंदोलनकारियों ने कई बार निशाना बनाया था।

ट्वीट में गलत शब्द लिखने पर ट्रोल हुए पाक सैन्य प्रवक्ता

आसिफ गफूर। फाइल

नई दिल्ली, आइएएनएस : पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता और इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आइएसपीआर) के महानिदेशक मेजर जनरल आसिफ गफूर ट्वीट में गलत शब्द लिखने पर शनिवार को जमकर ट्रोल हुए।

भारत में एक खबर छपी थी कि भारत के खिलाफ प्रचार युद्ध के लिए आइएसपीआर ने युवाओं को भर्ती किया है। इस खबर को टैग करते हुए आसिफ गफूर ने ट्वीट किया, 'ठेठ भारतीय उन्माद। पाकिस्तानी युवा अपनी मातृभूमि के प्रति अपने दायित्वों से भलीभांति परिचित हैं। देशभक्ति को खरीदा नहीं जा सकता, यह जींस में होती है। आप अपनी राय खुद बनाइए, लेकिन आइएसपीआर के कंधे का सहारा मत लीजिए।' इस ट्वीट में उन्होंने जींस की जो स्पेलिंग लिखी वह वंशाणु वाले जींस की नहीं बल्कि पहने वाली जींस की लिखी। लिहाजा ट्विटर यूजर्स ने उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया। एक यूजर ने वीडियो क्लिप पोस्ट की जिसमें एक कुत्ता शॉर्ट्स पहने है और जैसे ही वह चलना शुरू करता है उसका शॉर्ट्स उतर जाता है। इसके साथ उस यूजर ने लिखा, 'देशभक्ति खरीदी नहीं जा सकती है। यह तो जींस (पहनने वाली) में है। वह जींस (पहनने वाली) और जींस (वंशाणु) में अंतर भी नहीं जानता और कश्मीर लेना चाहता है।'

एक अन्य यूजर ने क्लिप डाली जिसमें युवा अपनी टाइटफिट जींस उतारने की कोशिश कर रहे हैं। इसके साथ यूजर ने लिखा, 'देखिए आपके युवा कैसे इस देशभक्त जींस को उतारने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।' ट्रोल होने पर आसिफ गफूर ने अपना ट्वीट हटा लिया, लेकिन इस पर भी यूजर्स ने उन्हें नहीं बख्शा। एक यूजर ने पूछा, 'आपने ट्वीट डिलीट क्यों कर दिया? क्योंकि ट्रोलिंग हो रही थी?'

चिंताजनक

23 लोगों की मौत, कई इलाकों में आपातस्थिति, शनिवार को चली हवाओं ने और भड़का दी है जंगल में लगी आग

ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग बेकाबू, घर छोड़ भाग रहे हैं लोग

सिडनी, रायटर : ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के किनारे जंगलों में फैली आग नियंत्रण से बाहर हो चुकी है। दसियों हजार पेड़-झाड़ियां और हजारों जानवर इस आग में भस्म हो चुके हैं। जंगल की करीब रहने वाली आबादी को भी भारी नुकसान हुआ है। गर्म हवा और जहरीले धुंए से पास के कस्बों-शहरों में रहना दूभर हो गया है। लोग घर छोड़कर भाग रहे हैं। मृतकों की संख्या 23 तक पहुंच गई है। इनमें से 12 इसी सप्ताह मारे गए हैं। ऑस्ट्रेलिया सरकार ने कई इलाकों में आपातस्थिति घोषित कर दी है।

शनिवार को तेज हुई हवा ने ऑस्ट्रेलिया के जंगल में लगी आग को और भड़का दिया। बढ़े तापमान और गर्म हवा के चलते अग्निशमन दल को आग बुझाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वे तेजी से बढ़ रही आग को काबू कर पाने में विफल साबित हो रहे हैं। विक्टोरिया का हाल सबसे ज्यादा खराब है। वहां पर प्रशासन ने आपातस्थिति का स्तर बढ़ा दिया है जबकि न्यू साउथवेल्स में आपातस्थिति का स्तर कुछ नीचे है। शनिवार शाम को न्यू साउथवेल्स की ग्रामीण अग्निशमन सेवा के कमिश्नर शेन फिजसीमंस ने कहा कि तेज आंधी-तूफान और वज्रपात से जंगल में आग लगी। यह आग मौसमी कारणों से भड़कती जा रही है। आग से कई मकान राख में तब्दील हो चुके हैं और बहुत से लोगों को घर छोड़ने पड़े हैं। आग से विक्टोरिया के एक बड़े बिजलीघर को भी भारी नुकसान हुआ है। इससे सिडनी की बिजली गुल होने का खतरा पैदा हो गया है।

मौसम विभाग के अनुसार मौसम के हालात में निरंतर गिरावट आ रही है। हवा का रुख आग को फैलने में सहायता कर रहा है। इससे उठने वाला धुंआ बचाव कार्य में बाधा डाल रहा है। आग ने नए साल के आयोजनों को गंभीरता से प्रभावित किया है। हजारों लोग घर-शहर छोड़कर शरणार्थी के रूप में जहां-तहां रहने को मजबूर हैं। विक्टोरिया के मुख्यमंत्री डेनियल एंड्रूज ने कहा है कि हालात मुश्किल हैं। अग्निशमन दल के काम को आसान करने के लिए दसियों हजार लोगों को विस्थापित किया गया है।

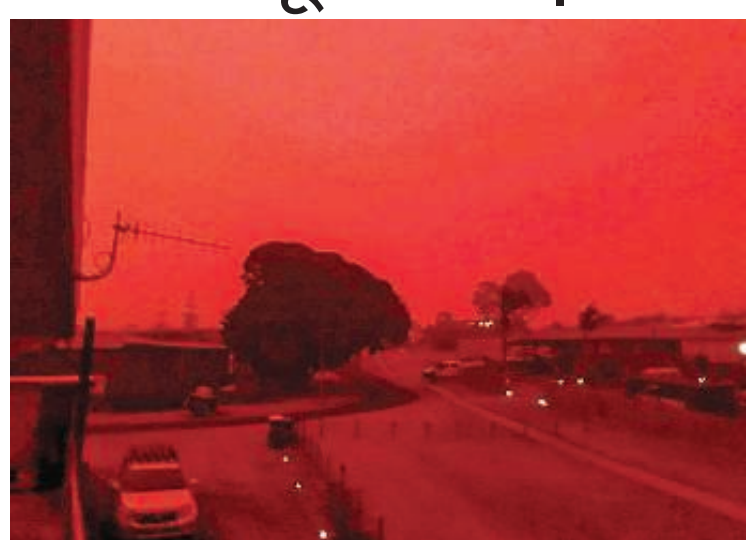
आग से आसमान हुआ लाल : यह तस्वीर ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया के मल्लाकूट्टा कस्बे की है, जहां जंगलों में लगी आग से पूरा आसमान सुर्ख लाल हो गया है। उल्लेखनीय है कि न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया के जंगलों में आग से अब तक दर्जनों लोगों की मौत हो चुकी है। 1200 से ज्यादा घर आग की भेंट चढ़ चुके हैं। रायटर

भारतीय रेस्टोरेंट खिला रहा मुफ्त खाना

कैनबरा, आइएएनएस : ऑस्ट्रेलिया का एक भारतीय रेस्टोरेंट जंगल की आग से प्रभावित लोगों को मुफ्त भोजन करा रहा है। भारतीय मूल के कंवलजीत सिंह और उनकी पत्नी कमलजीत कौर का पूर्वी विक्टोरिया के ब्रैंसडेल में देसी ग्रिल रेस्टोरेंट है। जंगल में लगी आग से विक्टोरिया में बड़ी संख्या में मकान नष्ट हो गए हैं। जंगल के नजदीक होने के बावजूद जो घर बच गए हैं उनमें गर्म हवा और धुंए के चलते रहना संभव नहीं है। इसके चलते हजारों लोगों को घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है। ऐसे लोगों को कंवलजीत मुफ्त खाना खिला रहे हैं और उन्हें सांत्वना दे रहे हैं। मेलबर्न में ऐसे लोगों के लिए सिख वॉलंटियर अस्थायी रिहायश का भी इंतजाम कर रहे हैं।

ये भी जानिए

2019 में शिखर धवन दो बार चोटिल हुए और टी-20 में फॉर्म से जूझते रहे लेकिन 2018 में वह टी-20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज थे। उन्होंने 17 पारी में 689 रन बनाए थे।

बुमराह पर रहेंगी निगाहें

- भारत-श्रीलंका के बीच पहला टी-20 आज
- चार महीने बाद वापसी कर रहे हैं जसप्रीत

गुवाहाटी, प्रेट्र: श्रीलंका के खिलाफ यहां बरसापारा स्टेडियम में रविवार को होने वाले पहले टी-20 मुकाबले में चोट के बाद वापसी कर रहे तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पर सभी की निगाहें होंगी। जहां दोनों देशों की टीम ऑस्ट्रेलिया में होने वाले विश्व कप की तैयारियों को अमलीजामा पहनाना चाहेंगी।

चार महीने पहले तक चोट लगने से पहले 26 वर्षीय बुमराह टीम इंडिया के हीरा थे, जो किसी भी समय किसी भी मैच में भारतीय टीम की मैच में वापसी कराने का दम रखते थे। उनकी कीमत क्या है यह यही देखकर पता चलता है कि जब उन्होंने गुजरात के लिए रणजी ट्रॉफी मुकाबला खेलने का फैसला किया तो बीसीसीआइ अध्यक्ष सौरव गांगुली ने उनकी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी को देखते हुए उन्हें लंबे प्रारूप से दूर रखने का आदेश दिया। बुमराह ने इससे पहले कोई अंतरराष्ट्रीय मैच अगस्त में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट के रूप में खेला था। वहीं, टी-20 मैच वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछले साल फरवरी में खेल पाए थे।

धवन की कोशिश: जहां बुमराह पर सभी की निगाहें होंगी, तो दूसरी ओर शिखर धवन भी चोट के बाद टीम में वापसी कर रहे हैं। ऐसे में वह रोहित शर्मा की अनुपस्थिति में और केएल राहुल की धमाकेदार फॉर्म के बीच अपनी छाप छोड़ने की कोशिश करेंगे, क्योंकि पिछले कुछ टी-20 में धवन ने बेहद धीमे स्ट्राइक रेट से रन बनाए थे। खास बात यह है कि शिखर ने हाल ही में हैदराबाद के खिलाफ रणजी मुकाबले में 140 रन की पारी खेली थी और 2019 में उनके नाम 12 पारियों में 272 टी-20 अंतरराष्ट्रीय रन हैं।

कई स्थान भरना बाकी: अगर 2019 भारतीय टीम के लिए 50 ओवर क्रिकेट में ध्यान लगाने का वर्ष था, तो यह वर्ष टीम इंडिया के लिए फिटनेस को परखने का होगा, क्योंकि अक्टूबर में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी-20 विश्व कप अभियान की शुरुआत करने से पहले टीम के पास खेलने के लिए सिर्फ 15 मैच बचे हैं। टीम में अभी भी कई स्थान भरे जाने हैं और आइपीएल खत्म होने तक एक साफ तस्वीर सामने नहीं आ सकती है। लेकिन इन सभी के बीच कप्तान विराट कोहली और कोच रवि शास्त्री इस सीरीज में तैयारियों को लेकर सतर्क होंगे। भारतीय टीम देखना चाहेगी कि मुहम्मद शमी, दीपक चाहर और भुवनेश्वर कुमार की अनुपस्थिति में बुमराह के साथ नवदीप सैनी और शार्दुल ठाकुर दबाव भरे डेथ ओवरों में कैसा प्रदर्शन करते हैं। वाशिंगटन सुंदर अभी भी अच्छा काम कर रहे हैं और वह अपने प्रदर्शन से यह दबाव बनाएंगे कि कुलदीप यादव और युजवेंद्रा सिंह चहल में से किसी एक को अंतिम-11 में शामिल किया जाए। शिवम दुबे एक बड़े हिटर जरूर हैं, लेकिन उनकी गेंदबाजी में वह बात नहीं है। अब जब हार्दिक पांड्या पूरी तरह से फिट हो गए हैं तो उनकी वापसी तक देखना होगा कि दुबे कैसे गेंदबाजी में खुद को सुधार सकते हैं। सबसे बड़ा सवाल रिषभ पंत के निरंतर प्रदर्शन का है, जिन्हें लगातार टी-20 मुकाबले खेलने के मौके मिले और संजू सैमसन को लगातार छह टी-20 मुकाबलों में बेंच पर बैठना पड़ा।

मैथ्यूज से अच्छे प्रदर्शन की आस: वहीं दूसरी ओर श्रीलंका को अपनी पिछली सीरीज में ऑस्ट्रेलिया से 0-3 से हार का सामना करना पड़ा था। श्रीलंका की टीम ज्यादातर कुशल परेरा पर निर्भर हैं। जिन्होंने उस सीरीज के तीन मुकाबलों में 100 रन बनाए थे। टीम को एंजेलो मैथ्यूज से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी जो टी-20 टीम में वापसी कर रहे हैं। उन्होंने पिछला टी-20 मुकाबला अगस्त 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेला था। भानुका राजपक्षे, ओशादा फर्नांडो और दनुष्का गुणाथिलका ने अक्टूबर में पाकिस्तान को 3-0 से हराने में अहम भूमिका निभाई थी और टीम को उनसे ऐसे ही प्रदर्शन की उम्मीदें होंगी। लेग स्पिनर वनिंदु हसरंगा ने पाक के खिलाफ सीरीज में आठ विकेट लेकर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनका प्रदर्शन साधारण रहा था। सपाट पिचों पर भारतीय बल्लेबाजों को रोकना उनके लिए बड़ी चुनौती होगी।

अभ्यास सत्र के दौरान गेंदबाजी करते भारत के जसप्रीत बुमराह ● एपी

चार दिवसीय टेस्ट के पक्ष में नहीं कप्तान कोहली

अभ्यास सत्र के दौरान गेंद लगने के बाद अपनी अंगुली को देखते भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली ● प्रेट्र

गुवाहाटी, प्रेट्र: भारतीय कप्तान विराट कोहली ने शनिवार को आइसीसी द्वारा प्रस्तावित 'चार दिवसीय टेस्ट' का कड़ा विरोध किया और कहा कि वह खेल के पारंपरिक पांच दिवसीय प्रारूप में छेड़छाड़ के पक्ष में नहीं हैं।

आइसीसी व्यवसायिक रूप से लुभावने संक्षिप्त प्रारूपों के लिए ज्यादा दिन निकालने के लिए 2023 से 2031 की अगले एफटीपी कार्यक्रम में चार दिवसीय टेस्ट मैच आजमाना चाहता है। हालांकि इसका अभी प्रस्ताव ही दिया गया है और क्रिकेट आस्ट्रेलिया ने भी इस प्रारूप को आजमाने की इच्छा व्यक्त की। हालांकि, सीनियर गेंदबाज नाथन लियोन ने इसे 'हास्यास्पद' करार दिया था। कोहली ने कहा, 'मेरे हिसाब से, इसमें कोई छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। जैसा कि मैंने कहा कि डे-नाइट टेस्ट क्रिकेट का व्यवसायीकरण की ओर एक और कदम है। इसके लिए रोमांच पैदा करना एक अलग बात है, लेकिन इसमें ज्यादा छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। मेरे हिसाब से टेस्ट क्रिकेट में बस डे-नाइट टेस्ट का ही बदलाव बहुत है। आप सिर्फ दर्शकों की संख्या, मनोरंजन और ऐसी ही कुछ दूसरी बातें कर रहे हो। मुझे लगता है कि फिर आपकी इच्छा सही नहीं होगी क्योंकि फिर आप तीन दिवसीय टेस्ट की बात करोगे। मेरा मतलब है कि यह सब कहीं खत्म नहीं होगा। फिर आप कहोगे कि टेस्ट क्रिकेट गायब हो रहा है। इसलिए मैं इसके हक में नहीं हूं। मुझे लगता है कि खेल के पारंपरिक प्रारूप के साथ यह उचित होगा। शुरू में क्रिकेट कैसे शुरू हुआ और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पांच दिवसीय टेस्ट सर्वश्रेष्ठ हुआ करता था।'

उन्होंने कहा, 'टी-20 नए प्रारूप के हिसाब से अच्छा था। मुझसे 100 गेंद के प्रारूप (ईसीबी द्वारा शुरू किए गए) के बारे में पूछा गया और मैंने कहा कि मैं नहीं जाऊंगा और खुद को एक और प्रारूप को नहीं आजमाऊंगा, क्योंकि पहले ही बहुत कुछ चल रहा है।' कोहली ने छठे या सातवें नंबर मैच जिताने वाले खिलाड़ियों की जरूरत बताई।

अभ्यास के दौरान कोहली की अंगुली में लगी गेंद

गुवाहाटी: श्रीलंका के खिलाफ पहले टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच की पूर्व संध्या पर यहां अभ्यास के दौरान कैच लेते हुए भारतीय कप्तान विराट कोहली की बायें हाथ की छोटी अंगुली में गेंद लग गई। यह घटना भारत के अभ्यास सत्र के पहले हिस्से में हुई। भारतीय टीम के फिजियो नितिन पटेल तुरंत कोहली का उपचार करने लगे और उन्हें 'मैजिक स्प्रे' लगाते हुए देखा गया। स्पिन ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा अभ्यास सत्र में मौजूद नहीं थे जो यहां पहुंचने वाले अंतिम खिलाड़ी थे।

क्रिकेट से अलग रहना मुश्किल नहीं था: बुमराह

गुवाहाटी, प्रेट्र: जसप्रीत बुमराह स्ट्रेस फ्रैक्चर के कारण चार महीने तक क्रिकेट से दूर रहे लेकिन यह समय उनके लिए मुश्किल भरा नहीं रहा क्योंकि उन्हें किसी तरह का दर्द नहीं था और इस तेज गेंदबाज ने इस समय का सदुपयोग अपनी शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए किया। बुमराह श्रीलंका के खिलाफ रविवार को यहां पहले टी-20 मैच से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'यह मेरे लिए मुश्किल नहीं था क्योंकि मुझे कभी दर्द नहीं हुआ। एक भी दिन नहीं। मैंने इस समय का सदुपयोग अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए किया। मैं हमेशा इस पर नजर रखता था कि क्या कुछ हो रहा है ताकि वापसी करने पर मुझे परेशानी नहीं हो। जब आप लगातार खेलते हो तो आपकी शारीरिक क्षमता कमजोर पड़ जाती है। आपकी फिटनेस का स्तर भी कम हो जाता है। इसलिए मैं इस पर ध्यान दे रहा था कि किस तरह से फिर से मजबूत बना जाएगा, जिन चीजों में मैं सुधार करना चाहता हूं, उनमें कैसे सुधार किया जाए। इसलिए कुछ समय के लिए विश्राम लो और तरोताजा होकर वापसी करो। फिर से (विकेटों के) भूखे बनो। इसलिए ये सब बातें मेरे दिमाग में थी। मैं बहुत आगे की नहीं सोच रहा हूं।'

22 महीनों के बाद दोनों टीमें एक-दूसरे खिलाफ अपना पहला टी-20 मैच खेल रही हैं

2017 में भारतीय टीम को बरसापारा स्टेडियम में पिछली हार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 मुकाबले में मिली थी जिसके बाद भारतीय टीम की बस पर प्रशंसकों ने पत्थर फेंके थे

16 मैच दोनों टीमों के बीच अभी तक खेले गए हैं जिसमें टीम इंडिया ने 11 मैचों में जीत हासिल की है जबकि पांच में श्रीलंकाई टीम को शिकस्त का सामना करना पड़ा है

08 मैच भारत ने श्रीलंका के खिलाफ अपने घर में खेले हैं। यहां उसे छह मे जीत मिली जबकि दो मैच गंवा दिए

भारत: विराट कोहली (कप्तान), बुमराह, चहल, धवन, शिवम दुबे, श्रेयस अय्यर, जडेजा, कुलदीप, मनीष पांडे, पंत, राहुल, नवदीप, सैमसन, शार्दुल, वाशिंगटन सुंदर।

श्रीलंका: लसित मलिंगा (कप्तान), डिसिल्वा, हसरंगा, निरोशन डिकवेला, ओशादा फर्नांडो, अविष्का, गुणाथिलका, लाहिरु, मैथ्यूज, कुशल मेंडिस, परेरा, भानुका राजपक्षे, रजिता, लक्षण संदाकन, शनाका, इसुरु उदाना।

चैंपियन क्रिकेटरों से जूझ रहा क्रिकेट

गौतम गंभीर
फिलक

मैंने जसलमेर में परिवार और दोस्तों के साथ 2020 का स्वागत किया। जश्न मनाने से अलग हमारे बीच जो चर्चा हुई, वह यह थी कि हमारे खेल में किसी चीज की तो कमी नहीं है। कुछ ने कहा कि डे-नाइट टेस्ट क्रिकेट का भविष्य है, कुछ को लगता है कि खिलाड़ियों का ठीक प्रबंधन और फिटनेस सबसे बड़ी जरूरत है। मैंने भी सुना है कि क्रिकेट को ग्लोबल गेम बनाने के लिए इसे अमेरिकन मार्केटिंग के हाथों में छोड़ना होगा।

जब मेरा मौका आया तो मैंने दो चीजों पर बात कही। चैंपियंस क्रिकेटरों की कमी और जिंदा पिच। अब जब भारत इस वर्ष की शुरुआत श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज से कर रहा है, तो मैं चौंक जाऊंगा अगर आप में से कोई भी मेहमान टीम के ओपनरों के नाम बता दे। एम और एम के अलावा। यानि मैथ्यूज और मलिंगा के अलावा किसी के नाम लोगों को याद नहीं होंगे, हां कुशल परेरा ने अपने प्रशंसक जरूर बनाए हैं। श्रीलंका ही अकेली ऐसी टीम नहीं है। दक्षिण अफ्रीका में भी यही हाल है। इसके अलावा पाकिस्तान भी। वेस्टइंडीज और न्यूजीलैंड की टीमों में जरूर स्टार पावर है लेकिन मैं पक्का नहीं हूं कि ये क्रिकेटर किसी भी नए प्रशंसक को आकर्षित करते होंगे। मैं किसी भी प्रारूप में छक्के और चौके लगते देखना चाहता हूं लेकिन बल्ले और गेंद में समानता होनी चाहिए, जिससे खेल प्रभावित नहीं हो। यह याद रखना चाहिए कि गेंदबाज भी खेल का एक हिस्सा हैं। चार दिवसीय टेस्ट एक बेहूदा विचार है और इसे ठंडे बस्ते में डाल देना चाहिए। इससे मैच ड्रॉ होंगे, इससे स्पिनरों के लिए कोई जगह नहीं रह जाएगी जो पांचवें दिन अपनी चमक बिखेरते हैं। मुझे वह पसंद आया जो मार्क वॉ ने लेग बाय को लेकर सुझाव दिया। मैं इस मामले में वॉ के साथ हूं। मेरे दोस्तों ने मुझसे भारत-श्रीलंका सीरीज पर भी सुझाव मांगे। मुझे लगता है कि यह युवाओं को आजमाने का बढ़िया मौका है। गुवाहाटी का स्टेडियम शानदार है। इसकी पिच भी अच्छी है। भारत ने रोहित शर्मा को आराम दिया है। धवन का आना अच्छा है क्योंकि केएल राहुल के रहते दोनों गेंदबाजों को बायें और दायें हाथ के बल्लेबाज के तौर पर ज्यादा चुनौती देंगे।

#WhatDrivesYou
EXIDE

साक्षी और पूजा का टोक्यो ओलंपिक खेलना हुआ मुश्किल

कुश्ती

- एशियाई चैंपियनशिप के ट्रायल्स में हारीं मलिक और ढांडा
- विनेश और दिव्या ने आसानी से जीते अपने-अपने मुकाबले

खेल संवाददाता, लखनऊ: दो बार की विश्व कैडेट चैंपियन सोनम मलिक ने शनिवार को यहां ट्रायल्स में रियो ओलंपिक कांस्य पदकधारी साक्षी मलिक को जबकि जूनियर अंशु मलिक ने विश्व चैंपियनशिप की पदकधारी पूजा ढांडा को पराजित कर उलटफेर करते हुए एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम में अपना स्थान पक्का किया। इस हार से दोनों पहलवानों का टोक्यो ओलंपिक में खेलना मुश्किल हो गया है क्योंकि विश्व रैंकिंग व एशियाई चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहलवान ही ओलंपिक क्वालीफायर के लिए भारतीय टीम में जगह बनाएंगी।

सोनम और अंशु दोनों को पहले दौर में अनुभवी पहलवानों से भिड़ना था, लेकिन दोनों ने साहसिक प्रदर्शन किया। मैच के बाद सोनम व साक्षी का स्कोर 10-10 से बराबर था, लेकिन तकनीकी दक्षता के आधार पर सोनम मैच जीतने में सफल रहीं। फिर उन्होंने फाइनल दौर में राधिका को 4-1 से हराकर 62 किग्रा में भारतीय टीम में जगह बनाई। अंशु ने पूजा को 3-1 से हराने के बाद 57 किग्रा ट्रायल के फाइनल में मानसी को पस्त किया। अन्य वजन वर्गों में कोई हैरानी भरे फैसले देखने को नहीं मिले जिसमें विनेश फोगाट (53 किग्रा) और दिव्या काकरन (68 किग्रा) ने आसानी से अपने-अपने मुकाबले जीत लिए। विनेश ने एकतरफा मुकाबले में नंदिनी को 10-0 से शिकस्त दी।

लाबुशाने ने जड़ा पहला दोहरा शतक

तीसरा टेस्ट

- शानदार फॉर्म में चल रहे मार्नस ने खेली 215 रनों की पारी
- ऑस्ट्रेलिया के 454 के जवाब में न्यूजीलैंड की अच्छी शुरुआत

सिडनी, एएफपी: मार्नस लाबुशाने (215) ने अपने करियर का पहला दोहरा शतक जमा यहां सिडनी क्रिकेट मैदान पर खेले जा रहे तीसरे टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में 454 रनों के मजबूत स्कोर तक पहुंचा दिया। जवाब में न्यूजीलैंड टीम ने भी अच्छी शुरुआत की। दूसरे दिन का खेल खत्म होने तक न्यूजीलैंड ने भी बिना कोई विकेट खोए 63 रन बना लिए। उसकी टॉम लाथम (26*) और टॉम ब्लंडेल (34*) की सलामी जोड़ी विकेट पर मजबूती से खड़ी हुई है।

इससे पहले, ऑस्ट्रेलिया ने दिन की शुरुआत तीन विकेट के नुकसान पर 283 रनों के साथ की। मैथ्यू वेड दूसरे दिन अपने खाते में एक भी रन नहीं जोड़ पाए। वह 22 के निजी स्कोर पर विल समरविले का शिकार बने। ट्रेविस हेड सिर्फ 10 रन बना पाए। निचले क्रम में टिम पेन ने लाबुशाने के साथ 79 रनों की साझेदारी की। इस बीच, लाबुशाने करियर का पहला दोहरा शतक जमा चुके थे। पेन भी अच्छी बल्लेबाजी कर रहे थे लेकिन कोलिन डि ग्रैंडहोम की गेंद पर वह चूक गए और बोल्ड हो गए। कप्तान के बाद लाबुशाने भी 416 के कुल स्कोर पर आउट हो गए। उन्होंने अपनी पारी में 363 गेंदों का सामना कर 19 चौके और एक छक्का लगाया। जेम्स पैटिनसन (02), पैट कमिंस (08) के जल्दी आउट होने के बाद लगा की टीम सिमटने वाली है। लेकिन मिशेल स्टार्क ने 21 गेंदों पर 22 रन बनाकर टीम को 450 के पार पहुंचाया। वह टीम के आखिरी विकेट के रूप में आउट हुए। न्यूजीलैंड के लिए ग्रैंडहोम, वैगनर ने तीन-तीन विकेट लिए।

न्यूजीलैंड के खिलाफ दोहरा शतक जड़ने के बाद दर्शकों का अभिवादन स्वीकारते ऑस्ट्रेलिया के मार्नस लाबुशाने ● एपी

इरफान पठान ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लिया

मुंबई, प्रेट्र: इरफान पठान ने शनिवार को क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेने की घोषणा की। वह अपने करियर के दौरान अधिकतर समय चोटों से जूझते रहे जिसके कारण अपनी वास्तविक क्षमता दिखाने में भी नाकाम रहे। इस 35 वर्षीय खिलाड़ी ने स्टार स्पोर्ट्स पर एक वीडियो के जरिये क्रिकेट से संन्यास लेने का एलान किया।

उनका संन्यास लेना तय माना जा रहा था क्योंकि उन्होंने अपना आखिरी प्रतिस्पर्धी मैच फरवरी 2019 में जम्मू कश्मीर की तरफ से सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में खेला था। उन्होंने यहां तक कि पिछले महीने खुद को आइपीएल के नीलामी पूल में भी नहीं रखा था। बायें हाथ के इस तेज गेंदबाज ने 2003 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडिलेड ओवल में भारत की तरफ से पदार्पण किया था। वह बहुत तेजी से गेंदबाजी नहीं करते थे, लेकिन दायें हाथ के बल्लेबाजों के लिए स्विंग कराने की क्षमता के कारण उन्हें जल्द ही सफलता मिलने लगी और उनकी कपिल देव से भी तुलना की जाने लगी। ऐसा लग रहा था कि भारत को वह अदद ऑलराउंडर मिल चुका है जिसकी उसे कपिल देव के संन्यास लेने के बाद तलाश थी। भारत की तरफ से आखिरी मैच अक्टूबर 2012 में खेलने वाले इरफान ने 29 टेस्ट मैचों में 1105 रन बनाए और 100 विकेट लिए। उन्होंने 120 वनडे में 1544 रन बनाने के अलावा 173 विकेट हासिल किए और 24 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 172 रन बनाए और 28 विकेट लिए। वह विश्व टी-20 चैंपियनशिप 2007 में खिताब जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा थे और पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल मैच में उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया था। पाकिस्तान के खिलाफ 2006 में वह हरभजन सिंह के बाद टेस्ट मैचों में हैट्रिक लेने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बने थे। उन्होंने कराची मैच में सलमान बट, यूनिस खान और मुहम्मद यूसुफ को आउट करके हैट्रिक बनाई थी। उन्होंने पर्थ के मुश्किल विकेट पर भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच में जीत दिलाने में भी अहम भूमिका निभाई थी। इसके बाद उन्हें चोटों और खराब फॉर्म से जूझना पड़ा और वह पहले की तरह गेंद को स्विंग कराने में भी माहिर नहीं रहे जिसकी वजह से वह मैदान से दूर रहने लगे थे।

पाक के खिलाफ टेस्ट में हैट्रिक लेने वाले दूसरे भारतीय
पाक के खिलाफ टी-20 विश्व कप 2007 में मैन ऑफ द मैच
ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ टेस्ट जीत में यादगार प्रदर्शन

पहले ओवर में विकेट लेने की खुशी को याद करूंगा: इरफान

बेशक इरफान पठान ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया हो, लेकिन वह अपने पीछे भारतीय क्रिकेट में कई यादगार पल छोड़ गए हैं। नौ साल के अंतरराष्ट्रीय करियर के दौरान इरफान 2007 विश्व कप सहित भारत की कई यादगार जीत के गवाह रहे। शुरुआती ओवरों में विकेट चटकाने की कला उनसे बेहतर शायद किसी दूसरे भारतीय गेंदबाज को आया हो और उस पल को संन्यास लेने के बाद भी इरफान काफी याद कर रहे हैं। अपनी कोण बनाती गेंदों से विरोधी खेमे में हलचल मचाने वाले **इरफान पठान** से **अभिषेक त्रिपाठी** ने उनके करियर से जुड़ी तमाम पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। पेश है उस बातचीत के प्रमुख अंश:

साक्षात्कार

- **सबसे पहले आप अपने सफर के बारे में बताइए। क्रिकेट में आपका सफर कैसा रहा ?**

-किसी भी खिलाड़ी के करियर में उसे सफलता से ज्यादा असफलता का सामना करना पड़ता है। ऐसे में उस लिहाज से देखेंगे तो आप कभी भी खुश नहीं रह पाएंगे। आप हमेशा ज्यादा से ज्यादा सफलता हासिल करना चाहेंगे। मैं भी जब पीछे मुड़कर देखता हूं तो सोचता हूं कि मैं इससे ज्यादा सफलता हासिल कर सकता था क्योंकि जब मैं 27 साल का था तब मैं 300 विकेट ले चुका था जबकि कई खिलाड़ी इस उम्र में अपना करियर शुरू करते हैं। ऐसे में आप कह सकते हैं कि मैं इससे ज्यादा सफलता अर्जित कर सकता था लेकिन मेरा परिवेश देखेंगे तो अलग कहानी मालूम होगी। मैं वहां क्रिकेट खेलकर बड़ा हुआ हूं जहां सुविधाएं नहीं थी। मैं वहां से आया हूं जहां मैं कैनवास के जूते से गेंदबाजी किया करता था लेकिन अगर आज किसी लड़के के लिए मुझे जूते के लिए प्रयोजन करना हो तो मैं वह भी कर सकता हूं। रब का बड़ा शुक्र है कि मैं जहां से आया हूं और जो कुछ हासिल किया है, वह मेरे लिए संतोषजनक रहा है।

- **गली क्रिकेट से भारतीय टीम तक के सफर में आपको कई पायदानों से होकर गुजरना पड़ा है। आप किन्हें अपने इस सफर में उनके योगदान का श्रेय देना चाहेंगे?**

-बहुत सारे लोग थे जिन्होंने मेरे करियर में मेरा साथ दिया। इसमें किसी एक को भूल जाऊं तो बड़ी बात नहीं होगी। दत्ता गायकवाड़ बशीर शेख, रशीद शेख, मंगला बाबर मैडम का मेरे करियर में बहुत योगदान रहा है। साथ ही टीए शेखर ने 2006/07 में मेरे गेंदबाजी एक्शन को दुरुस्त करने में मदद की थी जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। मेरे भाई यूसुफ पठान मेरे लिए रीढ़ की हड्डी साबित हुए हैं। एक बड़े भाई के लिए यह पचा पाना आसान नहीं होता कि उसका छोटा भाई उससे पहले सफलता हासिल करे। मैं यूसुफ भाई के भारत के लिए खेलने से कई साल पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में देश का प्रतिनिधित्व कर चुका था। भाई ने मेरे लिए जिस तरह से खुद को ढाला और मुझे संभाला, यह काम कोई बड़े दिल वाला भाई ही कर सकता है। करियर में मेरी सबसे बड़ी ताकत भाई रहे हैं।

- **संन्यास लेने से पहले आपकी किस-किस से इस विषय पर चर्चा हुई?**

-मैंने अपने परिवार से बात की। वालिद (पिता) और भाई से चर्चा की। भाभी और पत्नी के अलावा सभी को एक साथ बिठाकर बात की और उन्हें बताया कि मुझे लगता है कि संन्यास की घोषणा करने का अब समय आ गया है। पिछले साल ही मैंने इसके बारे में सोचा था लेकिन कुछ कारणों से यह तब नहीं हो पाया था।

- **हाल के वर्षों में आपको कमेंट्री बॉक्स में देखा गया है। क्या आप पूर्णरूप से कमेंट्री पर ध्यान लगाएंगे या फिर भविष्य को लेकर कुछ अलग रणनीति है ?**

-बहुत कुछ करने का इरादा है। दक्षिण सिनेमा में मैं एक फिल्म कर रहा हूं। साथ ही जम्मू-कश्मीर की क्रिकेट से भी जुड़ा हुआ हूं। मुझे कमेंट्री करने में मजा आता है क्योंकि इससे आप क्रिकेट से जुड़े रहते हैं। सब आपके कमेंट्री की तारीफ करते हैं तो अच्छा भी लगता है लेकिन मैं वो हर चीज करूंगा जो मुझे करना चाहिए। समाजिक कार्यों से भी मैं जुड़ा रहूंगा।

- **आप किस चीज को सबसे ज्यादा याद करेंगे ?**

-मैं ड्रेसिंग रूम के माहौल को बहुत याद करूंगा। आप हारते हैं तो यकीनन ड्रेसिंग रूम का माहौल मायूसी भरा रहता है लेकिन जब आप जीतते हैं तो उसका माहौल शानदार होता है। पहले या दूसरे ओवर में भारत के लिए विकेट हासिल करने के जश्न को मैं बहुत याद करूंगा।

- **अंतरराष्ट्रीय करियर में आपके हीरो कौन रहे?**

-मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे लगता है कि काश मैं सर सुनील गावस्कर को कभी लाइव खेलते देख पाता। उस समय वह क्रिकेट के सबसे बड़े हीरो थे। बिना हेलमेट के तेज गेंदबाजों को उस समय खेलना जब बाउंसर की कोई सीमा नहीं थी। मेरे लिए वह एक हीरो थे। कपिल देव ने पहली बार भारत को अपनी कप्तानी में विश्व चैंपियन बनाया था जो मेरे लिए हीरो थे। वह एक शानदार ऑलराउंडर थे। इसी तरह सचिन तेंदुलकर भी मेरे हीरो रहे हैं।

- **टी-20 विश्व कप में धौनी की कप्तानी में विश्व चैंपियन बनने वाली भारतीय टीम के आप सदस्य थे और मैन ऑफ द मैच थे। आपके हिसाब से आपके करियर का सबसे खास पल कौन सा था?**

-वाकई में 2007 का टी-20 विश्व कप मेरे लिए खास था और फाइनल में शाहिद अफरीदी का विकेट लेना मेरे लिए सबसे खास था। वह विकेट पूरी रणनीति के साथ निकाला गया था। इसी तरह सीबी सीरीज में ऑस्ट्रेलिया को उसके घर में हराना भी बहुत खास रहा। तब ऑस्ट्रेलिया की टीम बहुत मजबूत हुआ करती थी। उनकी टीम में तब मैथ्यू हेडन, एडम गिलक्रिस्ट, ब्रेट ली और एंड्रयू साइमंड्स जैसे धाकड़ खिलाड़ी थे। इस टीम को हमने लगातार दो फाइनल में हराकर सीरीज जीती थी। विश्व कप जीतकर जब हम मुंबई पहुंचे थे वह पल बहुत खास था।

7 से 11 फरवरी के बीच उत्तराखंड के औली में होगी नेशनल स्कीइंग चैंपियनशिप। उत्तराखंड स्नो बोर्ड एवं स्कीइंग एसोसिएशन के सचिव प्रवीण शर्मा ने यह जानकारी दी।

हरियाणा के घुम्मन का सपना, कलरफुल हो देश अपना

जागरण विशेष

महेंद्र मेहरा, सिरसा

- 167 तरह के सुंदर पेड़-पौधों के बीज बांट चुके 700 से अधिक गांवों में
- आमजन को रंग-बिरंगे पेड़-पौधे लगाने के लिए करते हैं प्रेरित, कहते हैं- देश को हराभरा और रंग-बिरंगा बनाना है

> हमारा देश फूलों की सैंकड़ों तरह की किस्मों से समृद्ध है, परंतु इनमें से अधिकांश धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं। लोग हाइब्रिड और विदेशी नस्लों के फूल-पौधों को अपना रहे हैं। लेकिन यह शौक भी घरों तक सीमित है, गांव और शहर के सार्वजनिक स्थलों की जिम्मेदारी आम व्यक्ति नहीं लेता।
> **-गुरविंद्र सिंह घुम्मन**

लोगों को अपने अभियान की जानकारी देते गुरविंद्र सिंह (दाएं)। जागरण

हरियाणा का यह व्यवसायी अपने सुंदर सरोकार के चलते खास बन गया है। गुरविंद्र सिंह घुम्मन का सपना है कि देश की माटी रंग-बिरंगे फूलों-पौधों से संवर जाए। इस मिशन में वह अब तक हरियाणा-पंजाब के 700 से अधिक गांवों को कवर कर चुके हैं। इन गांवों में पहुंच उन्होंने 167 तरह के सुंदर पेड़-पौधों के बीज वितरित किए। उनका यह अभियान जारी है।

गुरविंद्र सिंह घुम्मन पर्यटन के शौकीन रहे हैं। इसी शौक को पूरा करने के लिए विदेश यात्राएं भी कीं, जहां हर ओर रंग-बिरंगे खूबसूरत पौधों को देखकर उन्हें अपने देश में भी इस तरह के सुंदर पेड़-पौधों के प्रति लोगों को जागरूक करने का विचार आया। फिर क्या था, उन्होंने इसे अमली जामा पहनाने में देर नहीं की। मिशन को नाम दिया- ब्यूटीफुल इंडिया, कलरफुल इंडिया। अपने इस अभियान के तहत अब तक वे पंजाब और हरियाणा के 700 से अधिक गांवों और अनेक शहरों में पहुंच लोगों को इस मिशन से जोड़ चुके हैं। लोगों को वह रंग-बिरंगे फूलों वाले पौधों और सुंदर दिखने वाले पेड़ों के बीज वितरित करते हैं। इसके लिए उन्होंने एक स्पेशल किट भी तैयार की है, जिसमें ऐसे 167 तरह के पौधों के बीज हैं।

घुम्मन बताते हैं कि अपने अभियान की शुरुआत उन्होंने हरियाणा के सिरसा में अगस्त 2018 में की थी। उन्होंने सात किस्मों के 165 पौधे पुणे की एक नर्सरी से मंगवाकर लगवाए और उनकी देखभाल शुरू की। ये सभी पौधे अब सुंदर बगिया की शक्ल लेने लगे हैं। वह बताते हैं कि दक्षिण भारत की नर्सरियों में सुंदर दिखाई देने वाले खास प्रजाति के पेड़-पौधों के बीज मिल जाते हैं, जहां से अब वह इन्हें लाते हैं। अब वे व्यापक स्तर पर अभियान चलाकर ग्राम पंचायतों को ये बीज मुहैया करा रहे हैं। गांवों और शहरों में सार्वजनिक जगहों पर इन बीजों को रोपने के लिए लोगों और संस्थाओं को साथ जोड़ते हैं। उन्होंने बताया कि हाइब्रिड और विदेशी किस्मों की बजाय इन 167 किस्मों में सभी देसी पौधे हैं। घुम्मन ने बताया कि अपनी मुहिम के तहत वह अब तक 700 से अधिक गांवों में ग्राम पंचायतों, स्कूलों, आंगनवाड़ियों, धार्मिक स्थलों और ग्राम सभा के अधीन सार्वजनिक स्थानों आदि में बीजारोपण करा चुके हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सहयोग से पंजाब के सभी गुरुद्वारों में भी रंग-बिरंगे पौधे लगाए जा रहे हैं। चंडीगढ़ के साथ लगते क्षेत्रों में चर्च में, सालासर धाम, खाटू धाम, माउंटआबू स्थित ब्रह्मकुमारीज आश्रम आदि में भी बीज रोपे गए हैं।

घुम्मन कहते हैं, अब एक बड़ा मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है, जिसमें देशभर की सभी बड़ी नर्सरियो के सहयोग से बीज और पौधे तैयार किए जाएंगे, जिन्हें आम लोगों को मुहैया कराया जाएगा। भगवान ने सभी पेड़-पौधों में विशेष गुण दिए है, हम केवल कुछ को ही देख पाते हैं, जबकि प्रकृति में सुंदरता भरी पड़ी है। इन पौधों से वातावरण सुंदर व स्वच्छ तो रहता ही है, साथ ही ये स्वास्थ्य के लिए भी वरदान साबित होते हैं।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

बुंदेलखंड में खुशहाली की खुशबू फैला रही लेमनग्रास

जासं, लखनऊ: पानी की कमी से उजाड़ पड़े रहने वाले बुंदेलखंड के खेत लेमनग्रास और पामा रोजा जैसी सगंध फसलों से लहलहा रहे हैं। वैज्ञानिकों की सलाह पर शुरू की गई इस खेती से न केवल क्षेत्र में हरियाली का दायरा बढ़ा है, बल्कि किसानों का जीवन भी खुशहाली और समृद्धि से महक उठा है।

बुंदेलखंड में पानी की कमी किसी से छिपी नहीं है। इसके चलते अधिकांश खेत भी उजाड़ पड़े रहते थे। बड़ी कोशिशों से कुछ किसान सालभर में कभी-कभार उड़द व मसूर उगा पाते थे, मगर अब 14 जिलों की तस्वीर बदल रही है। केंद्र के डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के सहयोग से सीमैप सहित सीएसआइआर की अन्य प्रयोगशालाएं किसानों की आय में वृद्धि के लिए एकजुट होकर काम कर रही हैं। परियोजना प्रधान अंवेषक डॉ. रमेश श्रीवास्तव बताते हैं कि किसान पामारोजा, लेमनग्रास की खेती के साथ-साथ अगरबत्ती भी तैयार कर रहे हैं।

अस्पताल ने 99 दिन में निकाल डाले 539 गर्भाशय

गड़बड़झाला ▶ मध्य प्रदेश के गुरुनानक अस्पताल का है मामला, डायरेक्टर के खिलाफ एफआइआर दर्ज

कैसे बने आयुष्मान भारत

जेएनएन नई दिल्ली : गत वर्ष अप्रैल में शुरू हुई महत्वाकांक्षी आयुष्मान भारत योजना में भ्रष्टाचारियों ने जमकर पलीता लगाया है, जिसकी बानगी खुद राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) की शुरुआती जांच में सामने आई है। एनएचए को ऑनलाइन पड़ताल में जो शुरुआती गड़बड़ियां मिलीं, चौंकाने वाली हैं। पता चल रहा है कि जमकर धांधली हुई। बड़ी संख्या में फर्जी कार्ड बनाए गए हैं। फर्जी इलाज-ऑपरेशन हो रहे हैं और अस्पताल फर्जी बिल बनाकर क्लेम कर रहे हैं। कुल मिलाकर, चौंकाने और शर्मसार करने देने वाले रहस्योदघाटन एक-एक कर हो रहे हैं।

मध्य प्रदेश का हाल

योजना की राशि के लिए किया बिना जरूरत ऑपरेशन : आयुष्मान भारत योजना की राशि के लिए महिलाओं का बिना जरूरत ऑपरेशन कर गर्भाशय निकालने के मामले में उज्जैन के गुरुनानक अस्पताल के डायरेक्टर के खिलाफ एफआइआर की तैयारी है। मामले में गठित जांच दल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि अस्पताल प्रबंधन द्वारा जरूरत नहीं होने पर भी महिलाओं के गर्भाशय निकाले गए। आयुष्मान भारत के सीईओ जे. विजय कुमार ने ज्वाइंट डायरेक्टर उज्जैन की रिपोर्ट पर अवैध इलाज करने, धोखाधड़ी और फर्जी रिकॉर्ड तैयार करने का केस दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं। मामला दिसंबर के दूसरे पखवाड़े में सामने आया था। अस्पताल प्रबंधन पर आरोप लगा था कि उसने आयुष्मान भारत योजना की राशि के लिए 99 दिनों में 539 महिलाओं के गर्भाशय निकाले। इसमें कई गैर जरूरी ऑपरेशन शामिल हैं। योजना की मॉनिटरिंग करने वाली नेशनल हेल्थ एजेंसी ने यह धांधली पकड़ी थी। इधर, गुरुनानक अस्पताल के निदेशक डॉ. उमेश जेठवानी के अनुसार, आयुष्मान भारत योजना के तहत सारी कार्रवाई ऑनलाइन की जाती है। वहीं जबलपुर के मेट्रो हॉस्पिटल में भी गड़बड़ी की शिकायत मिली है। अस्पताल ने कई मरीजों से योजना में तय पैकेज की राशि लेने के बावजूद ऊपर से भी पैसे लिए। इसके अलावा जबलपुर संभाग के एक जिले में करीब महीने भर पहले एक अस्पताल के आयुष्मान मित्र द्वारा करीब 60 मरीजों का गलत तरीके से आयुष्मान कार्ड बनाने का मामला भी सामने आया है। जितने भी आयुष्मान कार्ड उस अस्पताल ने बनाए थे, सभी निरस्त कर दिए गए हैं।

उत्तर प्रदेश का हाल

घोटाले की भेंट चढ़े 47 अस्पताल, 1445 गोल्डन कार्ड : उत्तर प्रदेश में ऐसे 150 निजी अस्पताल चिन्हित किए गए हैं, जिन्होंने फर्जी इलाज करने से लेकर बोगस बिल बनाने तक का काम धड़ल्ले से किया है। इसमें से 47 अस्पतालों को योजना से बाहर कर दिया गया है। 1455 नकली गोल्डन कार्ड भी पकड़े गए हैं। निजी अस्पतालों ने आरोग्य मित्रों के जरिये नकली गोल्डन कार्ड बनवाए और उन कार्डों पर बिना इलाज बिल तैयार कर दिए। कई मामलों में बिल की रकम भी बढ़ाकर चूना लगाया गया। कुछ समय पहले प्रदेश में यह गड़बड़ी तब पकड़ में आई, जब कुछ निजी अस्पतालों ने महिलाओं का बिना जरूरत के गर्भाशय निकालने के ऑपरेशन बड़ी संख्या में कर दिए। इसी तरह बड़ी संख्या में ऐसे बिल पकड़े गए, जिसमें अस्पतालों ने रकम बढ़ाकर दिखाई।

> आयुष्मान योजना में शामिल कई निजी अस्पतालों की गड़बड़ी पकड़ में आने के बाद निगरानी बढ़ा दी गई है। गंभीर अनियमितता करने वाले 47 निजी अस्पतालों की संबद्धता खत्म की गई है, जबकि 100 से ज्यादा निजी अस्पतालों को अंतिम चेतावनी जारी की गई है। कंप्यूटर के जरिये नकली गोल्डेन कार्ड पकड़ने की भी व्यवस्था की गई है।
> **-संगीता सिंह, उप्र में योजना की प्रभारी (सीइओ)**

> शिकायत मिलते ही इसे स्टेट हेल्थ एजेंसी को सौंप दिया जाता है। आगे का काम एजेंसी का है।
> **-डॉ. अवतार, मैनेजर 104 हेल्पलाइन**

पंजाब का हाल

हजारों फर्जी कार्ड, हेल्पलाइन पर रोज 30 शिकायतें-144 कार्ड रद : योजना के तहत फर्जी कार्ड बनाने का खेल पूरे पंजाब में चल रहा है। कई जिलों से 104 नंबर हेल्पलाइन पर प्रतिदिन 20 से 30 शिकायतें आ रही हैं। शिकायत करने वालों का कहना है कि अस्पताल पहुंचने पर पता चलता है कि कार्ड अब मान्य नहीं रहा। लिमिट खत्म हो गई है या कार्ड किसी और के नाम से जारी हो रखा है। चार माह में अब तक दो हजार से अधिक शिकायतें पहुंची हैं। उनकी जांच आगे स्टेट हेल्थ एजेंसी भी कर रही है। एजेंसी ने अब तक 264 कार्ड फर्जी पाए हैं। इनमें से 144 रद कर दिए गए हैं। शेष को रद करने की प्रक्रिया जारी है। ये तो वो पीड़ित हैं, जिन्हें शिकायत करने की प्रक्रिया पता है। सैकड़ों ऐसे पीड़ित भी हैं, जिन्हें हेल्पलाइन नंबर के बारे में पता ही नहीं है। जल्द ही फर्जीवाड़े का पूरा पर्दाफाश हो सकता है।

राममंदिर के साथ विष्णु मंदिर के निर्माण की जगी आस

रघुवरशरण, अयोध्या

- अयोध्या की स्थापना के मूल में रहने वाले भगवान विष्णु की विरासत उपेक्षित
- सप्तहरि श्रृंखला की अहम कड़ी विष्णुहरि की विरासत लुप्त होने के कगार पर

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद यदि राममंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ तो विष्णुमंदिर के निर्माण की आस जगी है। हालांकि पौराणिक महत्व के विष्णुहरि मंदिर का अस्तित्व अब मिट चुका है। अयोध्या का अतीत प्रमुख रूप से स्कंदपुराण एवं रुद्रयामल जैसे प्रतिनिधि ग्रंथों में वर्णित है। इसके अनुसार, अयोध्या की स्थापना ब्रह्मा के अनुरोध पर स्वयं भगवान विष्णु ने की और अयोध्या को अपने चक्र पर स्थापित किया। नगरी का भगवान विष्णु से सरोकार सप्तहरि की श्रृंखला के मंदिरों से परिलक्षित है। यहां दो मंदिर गुप्तहरि एवं चक्रहरि का अस्तित्व मिलता है। यह स्थल सरयू के प्राचीन तट पर स्थित है और इसकी पहचान एक मोहल्ले के नाम तथा गर्दो-गुबार से पटे, लेकिन प्रामाणिक शिलालेख से होती है।

चक्रतीर्थ के बारे में मान्यता है कि बहुत समय पूर्व विष्णु शर्मा नाम के ब्राह्मण की तपस्या से प्रकट हुए भगवान विष्णु ने अपने चक्र से तीर्थ की रचना की और भक्त विष्णु शर्मा को विष्णुहरि नाम का मंदिर बनवाने का आदेश दिया। विष्णु शर्मा ने भगवान के आदेशानुसार भव्य विष्णुहरि मंदिर का निर्माण कराया था, जिसका वजूद मिट चुका है। इतना संकेत जरूर विद्यमान है कि जिस स्थल पर चक्रतीर्थ का शिलापट लगा है, उसी के पास ही एक पत्थर पर चरण चिह्न उत्कीर्ण है। विशेषज्ञ इसे ही विष्णु का करार देते हैं।

अक्षुण्ण रखी जाए पौराणिक विरासत

रामजन्मभूमि के पृष्ठ में कुछ ही फासले पर स्थित विष्णुहरि मंदिर जहां था, वह क्षेत्र नव्य अयोध्या की परिकल्पना के केंद्र में है। अपेक्षा यह है कि यह विकास विष्णुहरि सहित अन्य पौराणिक विरासत अक्षुण्ण रखने के साथ हो।

राममंदिर के साथ शास्त्रीय विरासत भी सहेजी जाए

रामनगरी की प्राचीनता-प्रामाणिकता पर अनेक शोधपरक ग्रंथ लिखने वाले हनुमानगढ़ी से जुड़े महंत रामदेवदास शास्त्री कहते हैं कि राममंदिर के अलावा विष्णुहरि मंदिर के साथ नगरी की शास्त्रीय विरासत भी सहेजी जानी चाहिए।

रिसर्च बताएगी बुग्यालों में इंसानी दखल का असर

गोविंद बिष्ट, हल्द्वानी: देश-दुनिया के पर्यटकों को अपनी और खींचने वाले हिमालयी बुग्यालों (पहाड़ में घास के मैदान) में इंसानी दखल लगातार बढ़ रहा है। इस भीड़ की वजह से बुग्याल के पारिस्थितिक तंत्र, पर्यावरण व मौसम में भी बदलाव दिख रहा है। इन्हीं तमाम बदलावों को लेकर उत्तराखंड वन अनुसंधान केंद्र हल्द्वानी अब बुग्यालों पर शोध करने जा रहा है। रुद्रप्रयाग जनपद में स्थित चोपता बुग्याल को रिसर्च प्लान में शामिल किया गया। चोपता में शोध पूरा होने पर पता चलेगा कि बुग्यालों की वर्तमान स्थिति क्या है। रिपोर्ट के आधार पर और बेहतर संरक्षण को लेकर योजना तैयार की जाएगी।

बुग्याल यानी हिमालयी क्षेत्र की पहाड़ियों में मौजूद बड़े-बड़े घास के मैदान। सैलानियों, पर्यावरण प्रेमियों और शोधार्थियों के लिए ये हमेशा से दिलचस्प रहे हैं। हर साल हजारों सैलानी बुग्यालों का दीदार करने के लिए उत्तराखंड पहुंचते हैं। वन अनुसंधान केंद्र के अधिकारियों के मुताबिक गर्मियों के साथ-साथ जाड़ों में भी इन पहाड़ी ग्रासलैंड पर लोगों का दखल बढ़ता है। भारी बर्फ जमा होने के कारण लोग यहां ट्रैकिंग करने पहुंचते हैं।

वन संरक्षक (अनुसंधान) संजीव चतुर्वेदी ने बताया कि बुग्यालों में हर साल लोगों की दस्तक बढ़ रही है। इस वजह से इसे रिसर्च में शामिल किया गया है। शुरुआत रुद्रप्रयाग जनपद में स्थित चोपता बुग्याल से होगी और समग्र अध्ययन के बाद रिपोर्ट तैयार होगी। यह पता लगाने की कोशिश होगी की इंसानी दखल का बुग्यालों पर क्या असर पड़ रहा है।

रुद्रप्रयाग का चोपता बुग्याल 3500 मीटर की ऊंचाई पर है। इससे थोड़ा आगे दुनिया में सबसे ज्यादा ऊंचाई पर स्थित भगवान शिव का तुंगनाथ मंदिर है। मंदिर से डेढ़ किमी और ऊपर चित्रशिला की चोटी है। यहां से प्रकृति का अद्भुत नजारा दिखता है। इस वजह से भी चोपता को काफी पसंदीदा माना जाता है। हिमालयी बुग्याल 3300 से करीब चार हजार मीटर की ऊंचाई पर मिलते हैं। आमतौर पर बुग्याल उस इलाके को कहते हैं जहां पेड़ की बजाय चारों तरफ घास के बड़े-बड़े मैदान हो।

स्वेदशी तकनीक से बगैर खरगोश मारे तैयार हुई स्वाइन फीवर की दवा

हिमांशु मिश्र, बरेली

- केंद्रीय मंत्री करेंगे लांच, मौजूदा दवाओं से 80 फीसद सस्ती

सुअरों में होने वाला स्वाइन फीवर ही इंसानों में स्वाइन फ्लू का कारण बनता है। देश में पहली बार स्वदेशी तकनीक से ऐसी दवा तैयार की गई है, जो स्वाइन फीवर को ही खत्म कर देगी, जिससे यह रोग इंसानों में नहीं फैलेगा। भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आइवीआरआइ) के वैज्ञानिकों की टीम ने मिलकर इसमें कामयाबी हासिल की है। खास बात है कि इस स्वदेशी तकनीक में दवा बनाने के लिए अब खरगोश को मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसमें सेल कल्चर का प्रयोग किया गया है। अभी तक देश में ज्यादातर कंपनियां लाखों खरगोश को मारकर ही स्वाइन फीवर की दवाएं तैयार करती थीं। इसके अलावा दो ऐसे संस्थान थे जो विदेशी स्ट्रेन की पद्धति से दवा तैयार करते थे। आइवीआरआइ वैज्ञानिकों ने जो तकनीक तैयार की है वो पूरी तरह से स्वदेशी है। इस तकनीक का पेटेंट फाइल करने की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जल्द ही केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर इसे बाजार में लांच कर देंगे।

आइवीआरआइ के वैज्ञानिक डॉ. अशोक तिवारी की अगुवाई में डॉ. प्रणव धर, डॉ. विक्रमादित्य उपमन्यु, डॉ. आरके सिंह और डॉ. एम मनु की टीम ने मिलकर दो साल की कड़ी मेहनत के बाद इस दवा को तैयार किया है। इसे मेक इन इंडिया प्रोजेक्ट के तहत भी देश की बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

दवा की कीमत में 80 फीसद तक कमी : आइवीआरआइ के वैज्ञानिकों के अनुसार, मौजूदा समय में खरगोश को मारकर तैयार होने वाली दवा 15 से 25 रुपये प्रति खुराक मिलती है। जबकि विदेशी स्ट्रेन से तैयार दवा की कीमत 30 रुपये में बाजार में उपलब्ध है। आइवीआरआइ के वैज्ञानिकों ने जो दवा तैयार की है उसकी कीमत दो रुपये प्रति खुराक होगी। स्वाइन फीवर सुअरों में फैलने वाली सबसे बड़ी बीमारी है जिसकी चपेट में आने के बाद वह बचाया नहीं जा सकता है।

ये भी जानें

- स्वदेशी तकनीक पर दवा तैयार करने के लिए सुअरों की किडनी से सेल तैयार की गई। यह ऐसी सेल है तो बढ़ती रहती है।
- देश में स्वाइन फीवर की दवा की 22 लाख खुराक की जरूरत होती है।
- अभी 50 फीसद खुराक भी नहीं हो पा रही तैयार।
- अभी एक खरगोश को मारकर 50 से 60 खुराक दवा होती है तैयार।
- स्वदेशी तकनीक में एक एमएल ट्शिू कल्चर से तीन लाख से अधिक खुराक हो जाएगी तैयार।
- मतलब अभी तक तीन लाख खुराक तैयार करने के लिए पांच हजार खरगोश की जान ले ली जाती।

पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा अशफाक का शहादत स्थल

रविप्रकाश श्रीवास्तव, अयोध्या

- क्रांतिकारी की स्मृतियों को सहेजने के लिए जेल प्रशासन ने बनाया प्रस्ताव
- 19 दिसंबर 1927 को अशफाक को फैजाबाद जिला जेल में दी गई थी फांसी

अशफाक को फैजाबाद (अब अयोध्या) जिला जेल में फांसी दी गई थी। (फाइल)

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।' देश की आजादी के लिए कुर्बान होने वाले शहीदों के स्मारक को देखकर कविता की ये पंक्तियां जेहन में तारी हो उठती हैं। ऐसी ही प्रेरणा को लेकर काकोरी कांड के महानायक अशफाक उल्ला खां के शहादत की साक्षी अयोध्या में उनके शहादत स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में प्रतिष्ठित करने की तैयारी है।

अशफाक का शहादत स्थल अयोध्या कारागार के अंदर है। योजना का मकसद अशफाक की यादों को सहेजने व उनके इतिहास से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराना है। जेल अधीक्षक बृजेश कुमार की ओर से भेजे गए प्रस्ताव को जेल मुख्यालय ने पर्यटन विभाग को प्रेषित कर दिया है। अब पर्यटन मुख्यालय और शासन को निर्णय लेना है।

सुंदरीकरण के साथ शहादत स्थल पर काकोरी कांड के शहीदों से जुड़े साहित्य भी पढ़ने को मिलेंगे। 19 दिसंबर 1927 को अशफाक को फैजाबाद (अब अयोध्या) जिला जेल में फांसी दी गई थी। फांसी घर को अब अशफाक के शहादत स्थल के नाम से जाना जाता है।

शाह आलम मुहैया कराएंगे साहित्य : भारतीय क्रांतिकारियों पर शोध करने वाले समाजसेवी शाह आलम ने अशफाक से जुड़े दस्तावेज जेल प्रशासन को मुहैया कराने का भरोसा दिलाया है। शाह ने बताया कि लखनऊ जेल म्यूजियम में काकोरी कांड के महानायकों से जुड़े दस्तावेज उन्होंने उपलब्ध कराए हैं। जेल अधीक्षक से वार्ता हो चुकी है। उनकी ओर से मांग होते ही अशफाक की जेल डायरी, टेलीग्राफ, अखबार की कतरन, सप्लीमेंट्री काकोरी केस फाइल आदि दस्तावेज व पुस्तक भेंट कर दी जाएगी।

> अशफाक के शहादत स्थल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव भेजा जा चुका है। प्रस्ताव को स्वीकृति मिलते ही आगे की प्रक्रिया आरंभ कर दी जाएगी।
> **-बृजेश कुमार, जेल अधीक्षक**

उत्तराखंड में भांग की खेती को कैप नोडल एजेंसी

राज्य ब्यूरो, देहरादून : उत्तराखंड में औद्योगिक दृष्टिकोण से भांग (हैंप) की खेती को बढ़ावा देने की दिशा में सरकार ने अहम कदम उठाया है। इसके लिए सगंध पौधा केंद्र (कैप), सेलाकुई को नोडल एजेंसी नामित कर दिया गया है। शासन ने इसके आदेश भी जारी कर दिए हैं। इसके साथ ही अब भांग की खेती को बढ़ावा देने के लिए नीति बनाने की कवायद शुरू की गई है।

दुनिया के तमाम देशों में भांग की खेती हो रही है, जिसका उपयोग औषधि निर्माण में किया जाता है।

उत्तराखंड में भी भांग की फसल उगाने को इंडियन इंडस्ट्रियल हैंप एसोसिएशन (आइआइएचए) को आबकारी विभाग के माध्यम से पांच साल के लिए लाइसेंस जारी किया जा चुका है। अब सरकार ने इस दिशा में एक और बड़ा कदम उठाया है। भांग की खेती के लिए नोडल एजेंसी तय कर दी गई है।

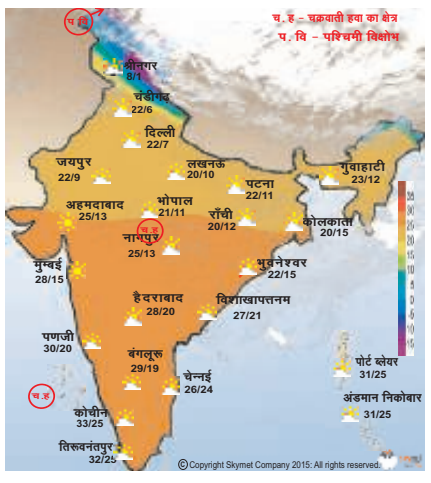

मौसम विशेष

दिल्ली सहित मैदानी भागों में सुबह के तापमान में गिरावट के साथ मध्यम से घना कोहरा छाया रहेगा। आंशिक बादलों के साथ दिन सुहावना रहेगा। राजस्थान के उत्तरी भागों में हल्की वर्षा संभव है। जम्मू कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा व हिमपात जारी रहेगा।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	29/16/आंबा	अहमदाबाद	25/07/आंबा
कोलकाता	21/14/आंबा	बड़ौदा	27/09/सा
चेन्नई	30/22/आंबा	नागपुर	26/13/सा
हैदराबाद	28/19/आंबा	इन्दौर	23/09/आंबा
बंगलूरू	29/20/आंबा	रांची	26/16/आंबा
त्रिवेन्द्रम	32/24/सा	पटना	24/12/आंबा
गुवाहाटी	22/13/सा	जमशेदपुर	29/17/आंबा
गंगटोक	02/-6/ आंबा	पुणे	29/20/आंबा

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 5 जनवरी, 2020 से शनिवार 11 जनवरी, 2020 तक — पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रगति, अर्थसाधन अच्छा, नए क्षेत्रों में व्यापार योग, पारिवारिक सुख-शांति, भौतिक साधनों की पूर्ति, संतान के प्रति चिंतित, अध्ययन में एकाग्रता, चयन में सफलता, मित्रों से सावधान, नए जीवन साथी का मिलन, शुभ अंक 9 ।

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, पारिवारिक अनबन, सजावट भूमि कार्य में सफलता, चयन में सफलता, शत्रुपक्ष परास्त, दांपत्य में मधुरता, यात्रा में सावधानी, राजनीतिक अपयश, निर्माण की योजना, व्यय अधिक, शुभ अंक 10 ।

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा)
अर्थ साधन में देरी, नए स्थानों पर संपर्क, सुख शांति, साधनों की वृद्धि, संतान से चिंतित, शिक्षा में एकाग्रता, विवाहित कार्य से बचे, तीर्थ यात्रा योग, जीवन साथी का मिलन, लोकप्रियता में कमी, राजनीतिक अपयश, स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 11 ।

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)
अर्थ साधन में प्रयास करें, पूंजी निवेश में सावधानी, पारिवारिक चिंता, साधन वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में व्यवधान, विवादित कार्य से बचे, शत्रुपक्ष प्रभावी, प्रणय में मधुरता, यात्रा से बचें, कार्य के प्रति सावधानी, राज्यपक्ष में अपयश, शुभ अंक 11 ।

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थसाधन अच्छा, भौतिक साधन वृद्धि, संतान के प्रति योजना, तकनीकी शिक्षा में रुचि, चयन में देरी, आलस्य से बचें, यात्रा से लाभ, अधिकारी जन से सहयोग, लोकप्रियता में कमी, स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 1 ।

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में सुधार, पूंजी निवेश में सावधानी, साधनों में वृद्धि, संतान से अनबन, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, विवादित कार्य से बचें, क्रोध पर नियंत्रण करें, दांपत्य में अनबन, यात्रा में सावधानी, संपूर्ति का अनुबंध शुभ अंक 2 ।

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रगति, धनागम में प्रगति, विदेश कार्य में प्रयास सफल, साधन वृद्धि, वाहन योग, संतान की सफलता, तकनीकी विषय में रुचि, चयन में देरी, वाद में विजय, जीवन साथी का मिलन, यात्रा से लाभ, रुके कार्य संपन्न, शुभ अंक 3।

वृश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)
अर्थसाधन अच्छा, साहस की वृद्धि, कार्य करने वालों से सावधान, विदेश कार्य में प्रयास करें, जीवन में चिंता, संतान से सहयोग, शिक्षा में रुचि, चयन में सफलता, नेत्र एवं त्वचा विकार, दांपत्य में अनबन, यात्रा से सावधानी, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 4 ।

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में श्रम से सफलता, अर्थ साधन में प्रगति, विश्वास की कमी, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान में चिंतित, चयन में अवरोध, वाद में विजय, दांपत्य में सुख, यात्रा से बचें, राज्यपक्ष से सावधान, स्थान परिवर्तन, शुभ अंक 5 ।

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी)
व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम अच्छा, आत्मविश्वास की वृद्धि, महिला से लाभ, जीवन में शांति, भवन भूमि सजावट योग, संतान से सहयोग, शिक्षा में एकाग्रता, मित्रों से सावधान, यात्रा से लाभ, यंत्र स्थापन योग, वाहन में सावधानी, शुभ अंक 6 ।

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा)
व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन में सुधार, संतान के प्रति कार्य, शिक्षा में रुचि, वाद-विवाद से बचें, दांपत्य में सुख, संपूर्ति का अनुबंध, वाहन में सावधानी, व्यय अधिक, शुभ अंक 7 ।

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची)
व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रयास से सफलता, धनागम अच्छा, धन आवागमन में सावधानी, स्वास्थ्य में सुधार, भौतिक साधनों की वृद्धि, संतान से अनबन, चयन में सफलता, यात्रा में सावधानी, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, वाहन में सावधानी, शुभ अंक 8 ।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 5 जनवरी 2020
आजकल
16
www.jagran.com

जीसैट-14 आज ही हुआ था सफलतापूर्वक लांच

आज ही के दिन इसरो ने 2014 में जीसैट-14 उपग्रह को श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक लांच किया था। प्रसारण सेवाओं को विस्तार की उम्मीद से इसने जीसैट-3 की जगह ली। देश में कवरेज प्रदान करने के लिए छह केयू-बैंड और छह विस्तारित सी-बैंड ट्रांसपोंडर लगाए गए थे।

जर्मन वर्कर्स पार्टी की स्थापना

आज ही के दिन 1919 में म्यूनिख में जर्मन वर्कर्स पार्टी का गठन हुआ था। एंटोन ड्रेक्सलर इसके पहले अध्यक्ष थे। इसे 24 फरवरी 1920 को भंग कर नाजी पार्टी बनाई गई। हिटलर ने नाजी पार्टी के जरिये ही ख्याति पाई और फिर वो जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया।

भाजपा के वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी

आज ही के दिन मुरली मनोहर जोशी का जन्म 1934 में दिल्ली में हुआ था। 1954 से 1977 तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और भारतीय जनसंघ में विभिन्न पदों पर रहे। 1977 में छठी लोकसभा के लिए चुने गए। 1980 में भाजपा के संस्थापक महासचिव बने। 1991 से 1993 तक पार्टी के अध्यक्ष रहे। 1998-99 और 1999-2004 तक मानव संसाधन विकास मंत्री रहे। पिछली लोकसभा में वे कानपुर से चुने गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर भी रहे। फिलहाल वे सक्रिय राजनीति से दूर अपना जीवन बिता रहे हैं।

इधर-उधर की

पेड़ों से लग गया जाम

न्यूयॉर्क, एजेंसी : अमेरिका में बहुत से लोग अपनी कारों के साथ करीब बीस से तीस फुट के एक सूखे पेड़ों के ढेर के नीचे दब गए। इसके चलते हाईवे पर दोनों ओर से यातायात को रोक दिया गया। दरअसल, तेज हवाओं के कारण हाईवे पर सूखे पेड़ उड़ आए थे। ये पेड़ गोलाकार थे, जिसके कारण बहुत से लोग इनमें फंस गए और निकलने के लिए उन्हें मशक्कत करनी पड़ी। तेज हवाओं के कारण ये पेड़ अपनी जड़ों और तनों से अलग हो गए थे। वाशिंगटन के गश्ती दल के क्रिस थोरसन ने कहा कि पांच कारों के साथ एक ट्रक भी इन सूखे पेड़ों में फंस गया था। इन पेड़ों से बना झुरमुट इतना घना था कि इन्हें साफ करने के लिए कई उपाय करने पड़े। नेशनल वेदर स्टेशन के मुताबिक, हाईवे नं. 240 में 30 से 40 मील प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली थी, जिसके चलते कई लोग इसमें दस घंटे तक फंसे रहे। हालांकि, किसी को चोट नहीं आई।

भोजन पर निर्भर करता है हमारा मानसिक स्वास्थ्य

लंदन, प्रेट्र : 'हम जैसा खाते हैं, वैसा सोचते हैं।' इस कहावत को अब वैज्ञानिकों ने भी साबित कर दिया है। हालिया अध्ययन में यह बात सामने आई है कि पोषक तत्वों से रहित भोजन चिंता और अवसाद जैसी मानसिक बीमारियों को बढ़ा सकता है। अध्ययन में कहा गया है कि कुछ भोजन हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। स्वीडन की गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के अनुसार, हमारे मस्तिष्क के कुछ ऐसे हिस्से हैं, जिससे भोजन और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध स्थापित होते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्होंने बताया, पहले के शोधों से यह अच्छी तरह पता चल चुका है कि मिर्गी के मरीजों के लिए अधिक वसा और कम कार्बोहाइड्रेट वाला भोजन लाभदायक होता है, थकान कम करने, खराब याददाश्त और अवसाद में विटामिन 12 प्रभावी होता है।

यूरोपियन न्यूरोसाइकोफार्माकोलॉजी जर्नल में प्रकाशित हालिया अध्ययन में यह भी कहा गया है कि सब्जियों और जैतून के तेलों वाली मेडिटेरेनियन डाइट मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है, क्योंकि यह अवसाद और चिंता जैसी बीमारियों से बचाव करता है। हालांकि, विटामिन डी युक्त कई भोजन के बारे में यही दावा पूरी तरह से नहीं किया जा सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि ऑटिज्म से संबंधित भोजन के बारे में भी यह दावा नहीं किया जा सकता है कि इससे मानसिक स्वास्थ्य में सुधार आता है।

प्रतीकात्मक

कई बीमारियों में बेहद असरदार : गोथेनबर्ग यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता और अध्ययन के सह-लेखक सुजैन डिकसन ने बताया, 'किन्हीं विशेष परिस्थितियों में हमें अक्सर मिलाजुला नतीजा मिलता है।' उन्होंने बताया, 'उदाहरण के तौर पर, हम पाते हैं कि एडीएचडी (अटेंशन डिफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर) में खाने में शुगर की मात्रा बढ़ने से एडीएचडी और अतिसक्रियता भी बढ़ जाती है। वहीं, अधिक ताजा फल और सब्जियां खाने से इन स्थितियों में सुधार आता है। लेकिन अपेक्षाकृत ऐसे कम अध्ययन हुए हैं और इनमें भी अधिकांश दूरगामी प्रभावों के बारे में नहीं बताते हैं।' कुछ खास तरह के भोजन विशिष्ट मानसिक स्वास्थ्य परिस्थितियों से जुड़े होते हैं। हालांकि, शोधकर्ताओं का कहना है कि इस बारे में बहुत कम ज्ञात है कि आखिर कुछ भोजन में इस तरह का प्रभाव होता है।

जन्म के शुरुआती वर्षों का भोजन भी डालता है असर : डिकसन ने बताया, 'यह आम मान्यता है कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भोजन की सलाह पूरी तरह से वैज्ञानिक आधार पर निर्भर होते हैं। असल में यह साबित करना बेहद मुश्किल है कि विशिष्ट भोजन या परहेज मानसिक स्वास्थ्य में योगदान देते हैं।' उन्होंने बताया कि गर्भ या जन्म के शुरुआती वर्षों में प्रयोग किया जाने वाले आहार का बाद के वर्षों में मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर व्यापक असर पड़ता है। हालांकि, उन्होंने बताया कि आम लोगों में भोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर को साबित करना चुनौतीपूर्ण है। डिकसन ने बताया कि वयस्कों के मानसिक स्वास्थ्य पर इसका कम ही असर देखने को मिलता है।

फिल्म रिव्यू

यह मिर्च बेस्वाद है...

शिमला मिर्च

निर्देशन : रमेश सिप्पी
प्रमुख कलाकार : हेमा मालिनी, राजकुमार राव, रकुल प्रीत, शक्ति कपूर
अवधि : 2 घंटे 9 मिनट

करीब पांच साल पहले बनी 'शिमला मिर्च' अब रिलीज हो पा रही है। यह फिल्म फ्रांसीसी कॉमेडी 'ब्यूटीफुल लाइज' पर आधारित है। 'शोले' जैसी कालजयी फिल्म का निर्देशन करने वाले रमेश सिप्पी ने करीब डेढ़ दशक बाद निर्देशन किया है। उनके अलावा कौसर मुनीर, ऋषि विरमानी और विपुल बिनजोरा के सहयोग से लिखा गया स्क्रीनप्ले और डायलॉग निराशाजनक हैं। कहानी शिमला में रहने वाली नैना की है। वहां परिवार के साथ छुट्टियां मनाने आए अविनाश को कैफे खोलने जा रही नैना से एक नजर में प्यार हो जाता है। बात जब प्यार के इजहार की आती है तो वह डरपोक साबित होता है। वह नैना के कैफे में नौकरी कर लेता है। अपने प्यार के इजहार के लिए नैना को खत लिखता है। घटनाक्रम ऐसे मोड़ लेते हैं कि पति से अलगाव के चलते डिप्रेशन से जूझ रही नैना की मां रुखमणि को लगता है कि अविनाश उससे प्यार करता है।

फिल्म का कथानक शिमला में फिट बैठता है। वहां की प्राकृतिक सुंदरता को कैमरामैन जीतन हरमीत सिंह ने खूबसूरती से कैद किया गया है। हालांकि किरदारों और प्रसंग को गढ़ने के स्तर पर फिल्म बेहद कमजोर साबित होती है। 'शोले' की बसंती यानी हेमा मालिनी अब रुखमणि के किरदार में हैं। उनके किरदार को बेहतर बनाने की अपार संभावनाएं थीं, लेकिन लेखकों ने उसे गढ़ने में दिलचस्पी नहीं ली। अविनाश बने राजकुमार राव और रुखमणि के प्रेम-प्रसंग में कोई रस नहीं है। रकुल प्रीत बेहद खूबसूरत दिखी हैं, लेकिन अभिनय के मामले में कमजोर दिखी हैं। राजकुमार राव ने अविनाश के प्रेम को व्यक्त न कर पाने के भाव को समुचित तरीके से व्यक्त किया है। हालांकि अविनाश द्वारा नैना को पटाने के प्रयास कहीं से भी दिल को छूते नहीं हैं। उनके रोमांस को लेकर कोई कौतूहल, उल्लास या सहानुभूति नहीं जागती। कहानी सपाट तरीके से आगे बढ़ती है। शक्ति कपूर शेर-ओ-शायरी से थोड़ी राहत देते हैं। बाकी फिल्म सिरदर्द देती है।

स्मिता श्रीवास्तव

★★★★★ उत्कृष्ट ★★★★ बहुत अच्छी ★★★ अच्छी ★★ औसत ★ औसत से कम

अब मिनटों में होगा सुपरबग का खात्मा

तलाशी राह ▶ एंटीबायोटिक को बेअसर करने वाले जीवाणु को मारने का नया तरीका किया विकसित

'मॉलीक्यूलर ड्रिल' के जरिये दोबारा प्रभावी बनाई जा सकती है एंटीबायोटिक

वाशिंगटन डीसी, एएनआइ : एंटीबायोटिक दवाओं को निष्प्रभावी बनाने वाले जीवाणुओं को भी अब नष्ट किया जा सकता है। दरअसल, मॉलीक्यूलर ड्रिल यानी आण्विक तरीकों के जरिये यह क्षमता हासिल कर ली गई है। कुछ मामलों में यह ड्रिल एंटीबायोटिक को दोबारा प्रभावी भी बनाती है।

राइस यूनिवर्सिटी, टेक्सास ए एंड बी यूनिवर्सिटी, बायोला यूनिवर्सिटी और डरहम (यूके) यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि रसायनशास्त्री जेम्स टूर की प्रयोगशाला में विकसित मोटरयुक्त अणु एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी जीवाणुओं को मिनटों में मार सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, 'ये खतरनाक सुपरबग 2050 तक एक करोड़ लोगों की जान ले सकते हैं। यानी मौत के मामले में ये कैंसर को भी पीछे छोड़ देंगे।' टूर ने बताया, 'ये जीवाणु भयावह हैं। इन पर किसी का असर नहीं होता।' मोटर एकबार प्रकाश के साथ सक्रिय होने के बाद जीवाणुओं को लक्ष्य बनाते हैं। फिर उनके बाहरी हिस्से के जरिये उन्हें खत्म करते हैं। यह शोध अमेरिकन केमिकल सोसायटी के जर्नल एसीएस नैनो में प्रकाशित हुआ है। शोधकर्ताओं ने 2017 में कोशिकाओं के जरिये बोरिंग के लिए आण्विक ड्रिल शुरू की। यह ड्रिल चप्पू जैसे अणुओं की तरह है, जो प्रकाश के साथ सक्रिय होने पर एक सेकंड में 30 लाख बार घूम सकती है।

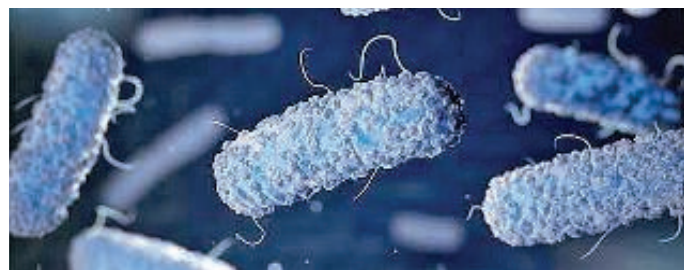

यह अध्ययन जर्नल एसीएस नैनो में प्रकाशित हुआ है। प्रतीकात्मक

शोधकर्ताओं की जांच में इस प्रक्रिया के जरिये क्लेबसिएला निमोनिया को मिनटों में प्रभावी तरीके से मार दिया गया। टूर का कहना है, 'जीवाणुओं में सिर्फ दो लिपिड परत नहीं होती है, बल्कि उनमें शुगर के साथ प्रोटीन भी होता है, जो उन्हें आपस में जोड़ता है। इसलिए चीजें आमतौर पर इन बेहद मजबूत कोशिका की दीवारों के जरिये नहीं मिलती हैं। यही वजह है कि इन जीवाणुओं को मारना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन उनमें इन आण्विक ड्रिल जैसी मशीनों से बचाव का कोई तरीका नहीं होता है, क्योंकि यह एक यांत्रिक क्रिया है न कि रासायनिक प्रभाव है।'

संक्रमण का होगा तुरंत उपचार : शोधकर्ताओं का कहना है कि इस नैनो मशीन का त्वचा, जख्म, आंतों के संक्रमण, प्रत्यारोपण संक्रमण या जीवाणुओं से होने वाले संक्रमण के उपचार में तुरंत असर देख सकते हैं। उन्होंने बताया, 'त्वचा, फेफड़े या कहीं भी हम प्रकाश के स्रोत से इन जीवाणुओं पर हमला बोल सकते हैं।' शोधकर्ता सिरिल्लो ने बताया, 'हम शुरू में घाव और प्रत्यारोपण संक्रमण के इलाज में बहुत रुचि रखते हैं, लेकिन हमारे पास प्रकाश के इन तरंगदैर्ध्यों को पहुंचाने के जो तरीके हैं, उससे निमोनिया, तपेदिक जैसी बीमारियों से कई मौतें हो जाती हैं। इसलिए हम सांस के संक्रमण के इलाज का तरीका विकसित कर रहे हैं।'

छोटी सी बीमारी बन जाती है भयानक : सुपरबग एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीन (एआरजी) होता है, जिस पर कोई भी एंटीबायोटिक दवाएं असर नहीं करती हैं। इस तरह के एआरजी विभिन्न सूक्ष्म जीवों में एक से ज्यादा दवाओं के प्रति प्रतिरोधकता पैदा करते हैं। एक अध्ययन के मुताबिक, भारत में सुपरबग का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी की रिपोर्ट के मुताबिक, उच्च आय वाले देशों की तुलना में भारत में सुपरबग के कारण दोगुना लोगों की मौत हो रही है और छोटी-सी बीमारी भी भयानक रूप ले लेती है।

शोध अनुसंधान

हड्डियों को कमजोर कर सकता है वायु प्रदूषण

हालिया शोध में वायु प्रदूषण से सेहत पर पड़ने वाला नया दुष्प्रभाव सामने आया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से हड्डियां भी कमजोर हो सकती हैं। प्रदूषण के कारण फेफड़े के कैंसर से लेकर सांस की तकलीफ और स्ट्रोक जैसे कई खतरे पहले भी सामने आ चुके हैं। हालांकि प्रदूषण से हड्डियों पर पड़ने वाले असर को लेकर बहुत ज्यादा अध्ययन नहीं हुआ है। शोध में हैदराबाद के 28 सीमाई गांवों के 3,700 लोगों को शामिल किया गया था। शोधकर्ताओं ने एक मॉडल के आधार पर यह आंकलन किया कि कौन व्यक्ति कितने समय प्रदूषण का सामना करता है। फिर उनकी हड्डियों की जांच की गई। वैज्ञानिकों ने पाया कि जिन लोगों का प्रदूषण से ज्यादा सामना होता है, उनकी हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। - एएनआइ

वजन कम करने में सहायक है नाशपाती

अगर नए साल में आप भी वजन कम करना और सेहतमंद रहना चाहते हैं, तो अपनी दिनचर्या में एक फल शामिल कर लीजिए। इस फल का नाम है नाशपाती। हालिया शोध के मुताबिक, नाशपाती का सेवन वजन कम करने में सहायक हो सकता है। उच्च फाइबर वाली नाशपाती को दिल के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि बात चाहे मेटाबॉलिज्म की परेशानियों की हो या डायबिटीज व दिल की बीमारियों की, यह फल हर मामले में लाभकारी है। कब्ज जैसी सामान्य परेशानी और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में भी इसका लाभ देखा जा चुका है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वजन कम करने की दिशा में नाशपाती के गुणों पर पहले अधिक शोध नहीं हुआ है। इसकी यह खूबी लोगों को ज्यादा आकर्षित करने वाली है। -आइएएनएस

अधिक काम करने वाले कर्मचारियों को रहता है हाई बीपी का खतरा

टोरंटो, प्रेट्र : एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि जो लोग दफ्तरों में बहुत ज्यादा अपने काम पर व्यस्त रहते हैं, उन्हें हाई बीपी यानी उच्च रक्त चाप की शिकायत हो सकती है। ऐसे लोगों को हिडन बीपी होने की संभावना सबसे ज्यादा रहती है। हिडन बीपी में मरीज को बीपी की शिकायत तो रहती है, पर परीक्षण करने पर रिपोर्ट सामान्य ही रहती है। इस प्रकार के बीपी को सबसे ज्यादा घातक माना जाता है। जर्नल हाइपरटेंशन में प्रकाशित इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने कनाडा के एक संस्थान में काम करने वाले 3500 लोगों को शामिल किया। कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अध्ययन के दौरान पाया कि जो लोग सप्ताह में 49 घंटे से ज्यादा काम कर रहे थे, उनमें हिडन हाइपरटेंशन का खतरा 36 घंटे काम करने वालों की तुलना में 70 फीसद ज्यादा देखा गया। उन्होंने कहा, 'जो लोग सप्ताह में लगभग 50 घंटे काम करते हैं उनके ब्लड प्रेशर रीडिंग एलिवेटेड होने की संभावना 66 फीसद ज्यादा रहती है।

न्यूजीलैंड में मृत पाई गईं चार व्हेल

न्यूजीलैंड के मातारंगी समुद्र तट पर शनिवार को ज्वार की वजह से 11 व्हेल मछलियां तट पर आ गईं। इनमें चार की मौत हो गई, जबकि सात को वन जीव संरक्षण विभाग ने मछुआरों की मदद से समुद्र में वापस धकेल दिया। वन्य जीव संरक्षण विभाग के प्रवक्ता के अनुसार समुद्र में वापस छोड़ी गई व्हेल सक्रिय थी। लगातार शिकार होने की वजह से इस प्रजाति की व्हेल विलुप्ति के कगार पर पहुंच गई हैं। इनके संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय की स्थापना भी कई है। इनकी घटती तादाद जीव विज्ञानियों के लिए चिंता का विषय है। रायटर

मास्को में सोलर लाइटों की रोशनी में मनाया नए साल का जश्न

रूस की राजधानी मास्को में नए साल के जश्न के लिए सोलर लाइट स्थापित करता एक बच्चा। सौर ऊर्जा की जरूरतों को लेकर रूस काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गया है। यहां लंबे समय से सोलर बैटरी से उड़ने वाले विमान पर भी काम चल रहा है। दावा किया जा रहा है कि यह प्लेन बिना रुके पूरी धरती का चक्कर लगाने में सक्षम होगा। भारत और रूस के बीच सौर ऊर्जा क्षेत्र में साथ काम करने पर भी सहमति बन चुकी है। हाल ही में केंद्र शासित राज्य बने लद्दाख में रूस के निवेशकों ने सौर ऊर्जा आधारित कार्यक्रमों में दिलचस्पी दिखाई है। साभार : गार्जियन

स्क्रीन शॉट

आज लखनऊ में अपना जन्मदिन मनाएंगी दीपिका

रणवीर सिंह से शादी करने के बाद दीपिका पादुकोण की पहली फिल्म 'छपाक' होगी। 10 जनवरी को रिलीज हो रही यह फिल्म एसिड पीड़िता लक्ष्मी अग्रवाल की जिंदगी से प्रेरित है। फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त दीपिका आज अपने जन्मदिन के मौके पर लखनऊ के शीरोज कैफे में वक्त बिताएंगी। शीरोज कैफे को एसिड अटैक सर्वाइवर द्वारा संचालित किया जाता है। फिल्म में दीपिका के साथ चार एसिड सर्वाइवर रितु सैनी, कुंती सोनी, जीतू शर्मा और बाला प्रजापति काम भी कर रही हैं। ये चारों भी उस दौरान वहां पर मौजूद रहेंगी। रितु 2014 से 'स्टॉप एसिड अटैक' अभियान से जुड़ी हुई हैं। उनके रिश्तेदार ने उन पर एसिड डाला था। फिल्म में रितु का केस दिखाया जाएगा। कुंती पर उनके पति ने एसिड डाला था। जीतू पर उनका पीछा करने वाले ने एसिड डाला था। पारिवारिक दुश्मनी के चलते बाला के परिवार पर एसिड डाला गया था। फिल्म में दीपिका मालती के किरदार में हैं। आम तौर पर सामाजिक विषयों से जुड़ी फिल्म करने पर कलाकार प्रमोशन तक उस मुद्दे पर बात करते हैं, लेकिन बाद में उस पर ज्यादा तवज्जो नहीं देते। हालांकि दीपिका फिल्म के बाद भी एसिड सर्वाइवर्स के हितार्थ काम करेंगी। बकौल दीपिका, 'मैं जो भी काम करती हूं, यह सोचकर कि उसे अच्छी तरह अंजाम देना है। मानसिक स्वास्थ्य को लेकर फिलहाल मेरा फोकस है। मुझे मेंटल हेल्थ के बारे में लोगों को जागरूक करना है। मेंटल हेल्थ जरूरी क्यों है? यह समझाने में ही पांच-दस साल का वक्त लग जाएगा। मेरा काफी समय इस अभियान को देने में जाता है, इसलिए अगर ऐसा कोई और मुद्दा है तो मैं उस पर फिल्म बनाती हूं, क्योंकि वह बात बहुत लोगों तक पहुंचती है।'

दर्द की दवा खाकर आमिर ने लगाई दौड़

फिल्म को वास्तविकता के करीब लाने के लिए आमिर खान अपने किरदार के साथ बहुत मेहनत करते हैं। 'दंगल' फिल्म के लिए उन्होंने पहले 22-25 किलो वजन बढ़ाया था, फिर उसी फिल्म के पहले हिस्से की शूटिंग के लिए उन्होंने अपना वजन कम किया। अब आमिर ने अपनी आगामी फिल्म 'लाल सिंह चड्ढा' के लिए दर्द की दवा खाकर शूटिंग की। दरअसल, फिल्म में एक दौड़ने वाला सीन है, जिसे खुद आमिर खान को ही करना था। आमिर पहले ही इस फिल्म के लिए अपना बीस किलो वजन बढ़ा चुके हैं। बताया जाता है कि उस दौड़ने वाले सीन के शेड्यूल तक आमिर ने रोजाना 10 से 13 किलोमीटर की दौड़ लगाई। दौड़ने की वजह से आमिर के पैरों में काफी दर्द होने लगा था, लेकिन सीन तो करना ही था। ऐसे में आमिर ने 10 दिनों तक लगातार दर्द की दवाई के सहारे इस सीन को पूरा किया। इस फिल्म की शूटिंग देश के अलग-अलग हिस्सों में की जा रही है। फिल्म के निर्माता चाहते हैं कि स्थानों की प्रमाणिकता बनाए रखने के लिए वास्तविक जगहों पर ही शूटिंग की जाए। 'लाल सिंह चड्ढा' हॉलीवुड फिल्म 'फॉरेस्ट गंप' की आधिकारिक रीमेक है। यह फिल्म क्रिसमस पर रिलीज होगी।

आज नेहा पेंडसे बंधेंगी शादी के बंधन में

धारावाहिक 'मे आई कम इन मैडम' और 'बिग बॉस 12' का हिस्सा रह चुकीं अभिनेत्री नेहा पेंडसे अपने मंगेतर बिजनेसमैन शार्दुल सिंह ब्यास से 5 जनवरी को शादी कर रही हैं। यह शादी महाराष्ट्रियन रीति-रिवाज से पुणे में होगी। नेहा ने मेहंदी और संगीत की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा की हैं।

सलमान खान के अब तक के जीवन में रही हैं पांच गर्लफ्रेंड्स

हिंदी सिनेमा के बैचलर अभिनेताओं में सलमान खान का नाम भी शुमार है। सलमान शादी कब करेंगे, यह सवाल अक्सर उनसे पूछा जाता है। हर बार सलमान इस सवाल का मजेदार जवाब देकर सवाल टाल जाते हैं। अपने शो 'बिग बॉस 13' के सेट पर सलमान ने यह बात मानी कि अब तक उनकी जिंदगी में पांच गर्लफ्रेंड्स रह चुकी हैं। यह बात तब सामने आई, जब 'बिग बॉस 13' के सेट पर अजय देवगन और काजोल अपनी आगामी फिल्म 'तान्हाजी- द अनसंग वॉरियर' का प्रमोशन करने के लिए पहुंचे। सवाल-जवाब के एक मजेदार खेल में काजोल ने सलमान से पूछ लिया कि क्या उनकी कभी पांच से ज्यादा गर्लफ्रेंड्स रही हैं? इसके जवाब में सलमान ने कहा कि अब तक के जीवन में उनकी पांच गर्लफ्रेंड्स रही हैं। इस पर मजाक में अजय ने कहा कि फिर भी सलमान खुद को वर्जिन कहते हैं। इस पर सलमान ने कहा कि यह सच बात है, जब तक वह शादी नहीं करेंगे, वर्जिन ही रहेंगे। काजोल ने अपने पति अजय से भी सवाल किए। काजोल ने पूछा कि क्या कभी उन्होंने उनके हाथों से बने खाने की तारीफ की है? अजय ने बताया कि उन्होंने कभी तारीफ नहीं की, क्योंकि काजोल खाना बनाती ही नहीं हैं। वह पानी तक गर्म नहीं करती हैं।

अध्ययन

दक्षिण अफ्रीका की विटवाटरसैंड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया दावा, पेट संबंधी बीमारियों से बचने के लिए फायदेमंद होता है फाइबर युक्त भोजन

रेशेदार खाद्य पदार्थों के शौकीन थे प्राचीन मनुष्य

जोहानिसबर्ग, प्रेट्र : भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग अक्सर पेट की बीमारियों से परेशान रहते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि हम अपने भोजन में फाइबर यानी रेशेदार खाद्य पदार्थों को शामिल नहीं करते हैं। आज तो हमारे पास तमाम तरह की दवाएं उपलब्ध रहती हैं जिन्हें खाने से हम अपनी परेशानियों से तुरंत छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन कभी सोचा है हमारे पूर्वज होमोसेपियंस खुद को कैसे दुरुस्त रखते थे। वे कंद-मूल यानी फाइबर युक्त खाद्य पदार्थों का खाकर अपनी इम्यूनिटी बनाए रखते थे। हाल ही में हुए एक अध्ययन में भी शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि आज से एक लाख 70 हजार साल पहले आधुनिक मनुष्य कार्बोहाइड्रेट की प्रचुर मात्रा वाला भोजन करते थे। दक्षिण अफ्रीका में खोदाई के दौरान शोधकर्ताओं ने ऐसे पौधों के अवशेष खोजे हैं जो इस बात की तस्दीक करते हैं कि आधुनिक मनुष्य रेशेदार भोजन के शौकीन थे।

दक्षिण अफ्रीका की विटवाटरसैंड (विट्स) यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कहा, 'हाइपोक्सिस एसपी नामक पौधे (एक प्रकार के फूल का पौधा) की जड़ें मध्य पाषाण युग के मनुष्यों के लिए भोजन का सबसे अच्छा स्रोत रही होंगी। क्योंकि कंद-मूल आसानी से उपलब्ध हो जाता है और इसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए भी विशेष मशक्कत नहीं करनी पड़ती। मध्य पाषाण युग का समय 2,80,000 से 25,000 साल पहले माना जाता है।

प्रतीकात्मक

वैज्ञानिकों का मानना है कि पूरे अफ्रीका महाद्वीप में रेशेदार जड़ें उस युग में आसानी से उपलब्ध रहती होंगी। इस अध्ययन के सह-लेखक और विट्स से जुड़े लिन वडले ने कहा, 'यह अध्ययन अब तक हुए शोधों की तुलना में सबसे पुराना है। साथ ही यह बताता है कि उस काल में आधुनिक मनुष्य किस प्रकार जीवन जीते थे।' उन्होंने कहा कि जिस काल की हम बात कर रहे हैं उस दौर में निश्चित रूप से मनुष्य लकड़ी से जमीन खोद कर जड़ों को निकालते होंगे।

इस अध्ययन के सह-लेखक क्रिस्टीन साइवर्स ने कहा, 'यह अविश्वसनीय है कि इतना लंबा समय गुजरने के बाद भी ये पौधे बचे हुए हैं।' इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने पौधों की जड़ों के राइजोमस का इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के जरिये अध्ययन कर आधुनिक मनुष्यों के जीवाश्मों का विश्लेषण किया।

स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है रेशेदार भोजन : शोधकर्ताओं का कहना है कि फलों को छिलकों समेत खाने से भी हमारे शरीर को फाइबर प्राप्त होता है जो हमारी पेट की बीमारियों को दूर करने में अहम भूमिका निभाता है। एक अन्य अध्ययन के मुताबिक, रेशेदार खाद्य पदार्थ न सिर्फ कब्ज ठीक करते हैं बल्कि डाइबिटीज, अस्थमा, हृदय संबंधी रोग और कैंसर कोशिकाओं को पनपने से बचाते हैं।